

# नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का परिचय

डॉ. अमेश कुमार दुबे

प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शासकीय कन्या महाविद्यालय राँझी, जबलपुर (म.प्र.)



डॉ. जरीना जॉन चौधरी

प्राध्यापक, इतिहास शासकीय कन्या महाविद्यालय

राँझी, जबलपुर (म. प्र.)



श्रीमती ऊषा जैन

ग्रंथपाल

शासकीय कन्या महाविद्यालय

राँझी, जबलपुर (म. प्र.)



श्री विनायक पब्लिकेशन, आगरा

➔ **PUBLISHER :**  
**SHREE VINAYAK PUBLICATION**  
(Educational Book Publisher)  
**Regd. Office : 229, Shastripuram, Sikandra, Agra-282007 (U.P.)**  
**Contact :** 9412458170, 9893635398  
**Email:** info@vinayakpublishers.com  
shreevinayakpublication2009@gmail.com

**Sales Office :** 8, Om Complex, Paschimpuri, Sikandra, Agra  
**E-mail. :** officevp19@gmail.com  
**Visit us :** www.vinayakpublishers.com

➔ **© Publisher**

➔ **Edition : 2025**

➔ **ISBN : 978-93-87899-52-0**

➔ **Code : R0699**

➔ **Price : India : ₹ 650**  
**Foreign : \$ 15.12**

➔ **Type Setting & Printng**  
**Shree Vinayak Publishing Unit, Agra**

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system of transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying recording, or otherwise, without prior written permission of the publisher. Vinayak has obtained all the information in this book from the sources believed to be reliable and true. However, Vinayak or its editors or Authors don't take any responsibility for for the absolute accuracy on any information published and the damages or loss suffered there upon. all disputes subject to Agra (U.P.) Jurisdiction only.

For Further information about the books published by vinayak publisher, kindly log on to [www.vinayakpublishers.com](http://www.vinayakpublishers.com) or email to [shreevinayakpublication2009@gmail.com](mailto:shreevinayakpublication2009@gmail.com)



कार्यालय, प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, रांझी, जबलपुर  
नैक द्वारा B++ ग्रेड प्रदत्त महाविद्यालय



[heggcranjab@mp.gov.in](mailto:heggcranjab@mp.gov.in)

Phone No.0761-2332343

रांझी जबलपुर दिनांक:-03/01/2025

प्राचार्य की कलम से.....



हर्ष का विषय है कि म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा शासकीय कन्या महाविद्यालय रांझी जबलपुर को एक दिवसीय सेमीनार आयोजित करने का कार्य सौंपा गया है, इस तारतम्य में महाविद्यालय द्वारा "नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय – समग्र शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में" विषय पर एक दिवसीय सेमीनार आयोजित की गई। उक्त विषय पर विद्वानों द्वारा अपने शोध पत्रों का वाचन किया गया। विद्वानजनों से प्राप्त शोध पत्रों का संकलन कर पुस्तक का प्रकाशन ISBN नंबर के साथ किया जा रहा है, इस हेतु मैं अपनी शुद्ध भावना से महाविद्यालय परिवार के इस प्रयास के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती हूँ।

मैं आशा करती हूँ कि इस पुस्तक के प्रकाशन से हमारे विद्यार्थी एवं आचार्यगण निश्चित ही लाभान्वित होंगे।

शुभकामना सहित

*Vijaypar*  
प्राचार्य  
डॉ. बीणा बाजपेई  
शासकीय कन्या महाविद्यालय  
रांझी जबलपुर

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय  
RANI DURGAVATI VISHWAVIDYALAYA  
(Formerly, University of Jabalpur)  
(NAAC Accredited Grade "A" University)



सरस्वती विहार, पचपेड़ी, जबलपुर-482001 (म.प्र.)  
SARASWATI VIHAR, PACHPEDI, JABALPUR-482001 (M.P.) INDIA  
मोबाइल (Mobile) : 9589520557  
ई-मेल (e-mail) : vordvv@gmail.com  
वेबसाइट (Website) : www.rdnijbpn.nic.in

प्रो. राजेश कुमार वर्मा  
कुलगुरु

Prof. Rajesh Kumar Verma  
Vice - Chancellor

27 जनवरी, 2025

संदेश

हर्ष का विषय है कि शासकीय कन्या महाविद्यालय, रांझी, जबलपुर में "नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय-समग्र शिक्षा के विशेष संदर्भ में" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शोध संगोष्ठी का उद्देश्य न केवल हमारी भारतीय शिक्षा प्रणाली को नई दिशा देगा बल्कि हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा से जोड़कर आने वाली पीढ़ियों को समग्र दृष्टिकोण प्रदान करेगा। निश्चित ही इस संगोष्ठी के सार्थक परिणाम निकलकर सामने आयेंगे।

मैं इस आयोजन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य एवं समस्त परिवार को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

  
(राजेश कुमार वर्मा)  
कुलगुरु



डॉ. वीणा श्रीवास्तव

प्राध्यापक अंग्रेजी

शासकीय कन्या महाविद्यालय,

राइली, जबलपुर

## सन्देश

मुझे नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय समग्र शिक्षा के संदर्भ में विषय पर आयोजित संगोष्ठी के संदर्भ में प्रकाशित पुस्तक के लिए संदेश देते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा हमारे देश की समृद्ध संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिबिंब है। जो युगों से मानवता को मार्गदर्शन और प्रेरणा देते आए हैं। नई शिक्षा नीति ने इन्हीं पारंपरिक मूल्यों को नवाचार के साथ शिक्षा में पुनः स्थापित करने का संकल्प लिया है।

इस पुस्तक के माध्यम से विद्वज्जन के विचार अनुसंधान और सुझाव समाज के हर वर्ग तक पहुंचेंगे और नई शिक्षा नीति के लक्षण को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों शिक्षक गण और समाज के हर क्षेत्र के व्यक्तियों के लिए अमूल्य सिद्ध होगा।

मैं इस प्रकाशन से जुड़े सभी लेखकों प्रबंधकों और सहयोगियों को बधाई एवं धन्यवाद देती हूँ और यह आशा करती हूँ कि यह पुस्तक अपने उद्देश्य में सफल होगी।

## **धन्यवाद**

डॉ वीणा श्रीवास्तव

समन्वयक

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी  
नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा  
का परिचय . समग्र शिक्षा के संदर्भ में

## प्रस्तावना

शासकोय कन्या महाविद्यालय रांझी जबलपुर में दिनांक 03.01.2025 को उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसका विषय "नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय: समय शिक्षा के विशेष संदर्भ में" रखा गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में आए अतिथिगण/विद्वान/वक्ताओं ने इस प्रकार अपने विचार व्यक्त किए।

सर्वप्रथम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वीणा बाजपेई ने विषय की संक्षिप्त जानकारी देते हुए शब्दों की माला से अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम की संयोजक रही डॉ. वीणा श्रीवास्तव ने विषय के महत्व को बताते हुए कहा भारतीय ज्ञान परंपरा का नई शिक्षा नीति में प्रमुखता से स्थान होना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।

संगोष्ठी मुख्य अतिथि रहे माननीय श्री अशोक रोहाणी अपने भाषण में कहा कि वर्ष 2047 का भारत कैसा होना चाहिए इस विषय पर संगोष्ठी में जो चर्चा होगी उससे अवश्य अमृत निकलेगा जो भारतीय ज्ञान परंपरा एवं नई शिक्षा नीति के लिए बहुत ही उपयोगी होगा। साथ ही महाविद्यालय को म.प्र. का न. 01 महाविद्यालय बनाने का वचन दिया।

इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रहे रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कलगुरु श्री राजेश वमा ने अपने वक्तव्य में कहा भारतीय ज्ञान परंपरा कई साल पुरानी संस्कृति है। पहले जो ऋषि मुनियों ने कर दिखाया वह अब Artificial intelligence कर रही है। हनुमान चालीसा में धरती और सूर्य की दूरी पहले ही खोजी जा चुकी जिसका पता अब वैज्ञानिकों ने लगाया। भारतीय ज्ञान परंपरा में उन चीजों को शामिल करना चाहिए जो परंपराएँ उपयोगी हैं लेकिन लुप्त प्रायः सी हो गई हैं।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता रहे डॉ. श्री अलकेश चतुर्वंदी ने कहा जो शिक्षा रोटी कपडा और मकान तक सीमित रह गई उसमें प्राचीन जीवन दर्शन में जो विज्ञान है जो भावनाएं हैं (लोकगीत, लोकनृत्य, विवाह गीत, लोक नाट्य आदि) इन सबका समावेश नई शिक्षा नीति में होना चाहिए। इन्होंने बताया कि अलबरूनी ने कहा था कि भारत के लोगों में तीन चीजें पाई जाती हैं, पहला वे मौत से नहीं डरते, दुसरा वे झूठ नहीं बोलने, तीसरा उन्हें ज्ञान का अभिमान नहीं होता। लेकिन वर्तमान में बिल्कुल विपरीत परिस्थिति बन गई अब वे मौत से डरने लगे, झूठ बोलने लगे, और हीन भावना से ग्रस्त हो गए। अब आवश्यक हो गया कि पाश्चात्य सभ्यता की नकल की प्रकृति को हटा कर अब भारतीय दृष्टिकोण से सोचना होगा। अब भरतमुनि का नाट्य शास्त्र, रामायण, गीता जैसे ग्रंथों को सामने लाने की जरूरत है।

कार्यक्रम में Eminent Speaker रहे श्री सुनील बाजपेई ने कहा कि विद्यार्थी किसी भी महाविद्यालय का हो उनकी चिंता एवं चिंतन हम लोगों के मन मस्तिष्क में सदा चलता रहता है। लेकिन अब देश को ऐसा महानायक (मान.श्री नरेन्द्र मोदी) मिला जो बिना अवकाश लिए हिन्दुस्तान को उस शिखर पर पहुँचाना चाहता है जिस पर वह था। अंग्रेजों ने नीती अपनाई की यदि हिन्दुस्तान को तोड़ना है तो पहले इनेक दिमाग को तोड़ना होगा तभी हम इन्हें गुलाम बना सकेंगे परिणाम स्वरूप स्वाभिमान से जीने वाला हर इंसान अब भय और निराशा के वातावरण में जी रहा है। अर्थात् आज भी हम गुलामी की मानसिकता से मुक्त न हो सके। गुरु और शिष्य के मध्य जो दरिया बढ रही है उसे भी कम करना नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है। इसके लिए पुराने साहित्य को, दर्शन को जानना आवश्यक है।

अतिरिक्त संचालक कार्यालय से आए आ.एस.डी. प्रो. अजय गुप्ता ने कहा कि भारत पहले विश्व गुरु था पुनः विश्व गुरु हो इस पर फिर से मंथन करने की आवश्यकता है। पहले 07 लाख गुरुकुल थे और 90 प्रतिशत साक्षरता थी। जरूरत है फिर से वही गुरु शिष्य परंपरा वापिस लाने की। हमारा मुख्य ध्येय विद्यार्थियों को श्रेष्ठ नागरिक बनाना एवं अपना उपयोग ज्ञान के सृजन में लगाना होना चाहिए।

डॉ. निशा तिवारी जो कार्यक्रम में वक्ता के रूप में आई उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा प्रथम तो सभी निरोग रहें सुखी रहें और सब तरफ शुभ ही शुभ देखें। वेद के छंद बोलकर सभी को नूतन वर्ष की शुभकामना दी। मेकाले ने सिर्फ हमें बाबु बनाना सिखाया उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार कर हमारी संस्कृति को नष्ट कर दिया। इन्होंने इतने अंग्रेजी स्कूल खोले कि इन स्कूलों में प्रवेश की भीड़ लग गई। उन्होंने कहा कि मैं यह नहीं कहूंगी कि आप प्राचीन के साथ वर्तमान की नई परंपरा को भुल जाए क्योंकि आधुनिक तकनीक से update होना सर्वाङ्गीण विकास के लिए आवश्यक है। साथ ही छात्र को सर्वोपरी रखने के लिए लचीली शिक्षा को महत्व दिया। मनुष्यता एकत्व समत्व अर्थात् साथ साथ चलें, साथ साथ बोलें, साथ साथ विचार धारण करें। देवों ने जो आचरण किया हम उसकी वंदना करें। जो कुछ पढ़ा लिखा उससे सबको प्रकाशित करें। गौतम बुद्ध के उदाहरण से समझाया कि अपने दीपक आप बनों और किसी के उपदेश को यथावत ग्रहण करने से पूर्व उस पर पहले विचार करो फिर उस पर चलो। "तमसो मा ज्योतिर्गमय" के श्लोक के साथ अपनी बात पूर्ण की।

वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. स्मृति शुक्ला ने कहा नई शिक्षा नीति यह महज सरकुलर नहीं एक महायज्ञ है भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा में समाहित करने की आवश्यकता है जब तक हम संकट के दौर से गुजरते हैं तभी हमें अपनी ज्ञान परंपरा याद आती है। हम पश्चात ज्ञान परंपरा अपनाये परन्तु अपनी ज्ञान परंपरा को विस्मृत न करें। प्राचीन समय की गुरु शिष्य प्रणाली को लाना ज्ञान परंपरा का मकसद है। अच्छे इंसान बनाने के लिए मानवीयता के गुण लाने के लिए गौरवशाली इतिहास को जानें तथा मौलिक ग्रंथ जैसे रामायण, गीता, चरक संहिता को अवश्य पढ़ें और जानें।

डॉ. ध्रुव दीक्षित ने अपने भाषण में कहा वैदिक साहित्य की भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा से जोड़ना वर्तमान समय की जरूरत हो गई है। उन्होंने सतिप्रथा की चर्चा करते हुए बताया कि प्राचीन समय में पति के खत्म होने पर पत्नी का पति की संपत्ति पर अधिकार होता था। इस तरह प्राचीन काल में नारी की स्थिति कैसी थी के विषय में जानकारी दी।

डॉ. राजलक्ष्मी त्रिपाठी जी ने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा बातचीत का नहीं वरन आचरण का विषय होना चाहिए। बेटिया इस संसार में ईश्वर की सबसे सुंदर रचना है फिर भी स्त्रीयां इतनी असुरक्षित हैं। भूलने की जो आजकल आम समस्या है इसका समाधान ज्ञान परंपरा में है। ध्यान, जाप और सीताराम बोलने से भूलने की समस्या हल हो सकती। उन्होंने 2025 से पहले की जनरेशन "जैन जी" एवं बाद की जनरेशन "वीटा" के विषय में भी जानकारी दी।

अंत में डॉ. जरीना जॉन चौधरी ने उपस्थिति अतिथियों, छात्राओं एवं श्रोतागण का आभार प्रदर्शन किया।

प्राचार्य  
शासकीय कन्या महाविद्यालय  
रांझी जबलपुर

## शोध सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षण संस्थानों में शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित किये जाने के उद्देश्य से प्रदेश के चयनित महाविद्यालयों में एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जाना है। इसी तारतम्य में शासकीय कन्या महाविद्यालय रांझी जबलपुर में दिनांक 03.01.2025 को शोध संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसका विषय "नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय : समग्र शिक्षा के विशेष संदर्भ में" था। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों, अलेखों का संकलन का स्मारिका तैयार कर अकादमिक एवं गुणवत्ता शाखा को शासन के आदेशानुसार निर्धारित तिथि तक प्रेषित किया जाना है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे विषय पर चर्चा करने जा रहे हैं जो न केवल हमारी भारतीय शिक्षा प्रणाली को नई दिशा देगा बल्कि हमारी प्राचीन परंपरा को आधुनिक शिक्षा से जोड़कर आनेवाली पीढ़ियां को एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

हमारी इस संगोष्ठी मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में उन आयामों पर प्रकाश डालना है जो हमारी नई शिक्षा नीति 2020 में विशेष रूप से सम्मिलित किये गये हैं, जिसमें भारत की समृद्ध संस्कृति, शैक्षिक एवं अध्यात्मिक विरासत को संरक्षित करना और विद्यार्थियों के माध्यम से उसे पुनः जोवित करना है। साथ ही हम सब इस पर भी विचार करेंगे कि किस प्रकार नई शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश समग्र शिक्षा को प्रोत्साहित का प्रमुखता प्रदान कर सकता है।

इसी तारतम्य में शोध पत्रों का वाचन विद्वानजनों द्वारा किया गया उसका सारांश प्रस्तुत है।

डॉ. वीणा बाजपेई ने अपने आलेख "भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)" में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए बतलाया कि हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली मनसा, वाचा, कर्मणा पद आधारित है इसमें सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, वैदिक, अर्थिक, राजनीतिक आदि विकास पर ध्यान केंद्रित किया है।

डॉ. उमेश कुमार दुबे ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान और विज्ञान परंपरा : एक दृष्टि" में बतलाया कि वेद भारतीय सम्यता में सबसे पुराने ग्रंथ है जिनमें ज्ञान के कई आयामों का वर्णन मिलता है।

डॉ. जरीना जॉन चौधरी ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा में आश्रम व्यवस्था: मध्यप्रदेश में आश्रम विद्यालय के विशेष संदर्भ में" विषय पर लिखा जिसमें उन्होंने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का हवाला देते हुए वर्तमान में आश्रम विद्यालयों पर ध्यान केंद्रित कराने पर बल दिया है।

डॉ. वीना श्रीवास्तव ने अपने शोध पत्र में एन.ई.पी. (NEP) 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करना समग्र शिक्षा का मार्ग है। पर प्रकाश डाला।

श्रीमती उषा जैन ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण" में बतलाया है कि भारत में ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हो रहा है।



डॉ. बिंदु शर्मा ने "भारतीय ज्ञान प्रणाली का ऐतिहासिक महत्व और विरासत" विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया है।

डॉ. शैलेन्द्र श्रीवास्तव परीक्षा नियंत्रक, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा में परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन" विषय पर प्रकाश डालते हुए समग्र मूल्यांकन, व्यवहारिक ज्ञान, मौखिक शिक्षा, शास्त्रार्थ, ध्यान आय योग, प्राकृतिक वातावरण आदि पर अपना ध्यान केंद्रित कराया।

डॉ. अदिति बाजपेई ने सशक्त मन स्वस्थ जीवन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया है।

श्रीमती साक्षी बाजपेई ने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण विषय पे अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने शोध में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों एवं भारतीय ज्ञान परंपरा से महिलाओं के सशक्त होने के तरीकों पर प्रकाश डाला है।

डॉ. नीलिमा रॉय ने "भारतीय ज्ञान परंपरा से धारणीय विकास" विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्होंने भारत में चलिता योजनाओं के विषय में बताया एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों से धारणीय विकास से संबंधित विषयों पर बताया।

श्रीमती स्वाति मिश्रा ने अंग्रेजी साहित्य एवं साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा / प्रणाली पर विशेष बल दिया।

श्रीमती प्रतिभा पटेल ने अपने शोधपत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा महिला सशक्तिकरण" के विशेष संदर्भ में बतलाया कि भारत में आदिकाल से ही नारी शक्ति का आदर तथा उपासना की गई है। उन्होंने अपने लेख में नारी शिक्षा की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। साथ ही बतलाया कि केन्द्र सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ बालिका समृद्धि योजना सुमचा समृद्धि योजना धन लक्ष्मी योजना आदि अनेक योजनाएं संचालित हैं।

डॉ. अकिंता पांडे ने आपने लेख "भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिता" विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए बतलाया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा को लेकर चलती है। भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिता वर्तमान में और अधिक बढ़ी है।

डॉ. बीना शर्मा ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा एक दृष्टि" में बतलाया कि हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बात कही गई है। साथ ही विनम्र सच्चाई अनुशासन आत्मनिर्भर सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया है।

डॉ. सपना श्रीवास्तव ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण में गृह विज्ञान की प्रासंगिता" विषय पर अपने लेख में बतलाया कि भारतीय महिलाओं को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने हुये एक गृह विज्ञान प्रदान करने को सुनहरा अवसर मिला है वो इस क्षेत्र में अपना करियर सम्हाल सकते हैं।

## 10 | नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का परिचय



---

कु. पूजा सेन ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा एवं बीमा व्यवसाय" में बतलाया कि अर्थिक विकास में बीमा का महत्वपूर्ण योगदान है। बीमा कंपनियों देश के बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

डॉ. अनुपमा डे ने भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने भारत में चलित परंपरागत विषयों के बारे में जानकारी दी।

श्री गोतम दास ने अपना शोध पत्र भारतीय संस्कृति एवं महिला सशक्तिकरण पर प्रस्तुत किया उन्होंने अपने शोध में महिलाओं के शिक्षा रोजगार महिलाओं के लिए चुनौतियों के बारे में बताया।

डॉ. रेखा श्रीवास्तव ने अपने शोध पत्र "भारतीय ज्ञान परंपरा एक दृष्टि" बतलाया कि भारतीय ज्ञान परंपरा वर्तमान में भी लागू है जो तनाव प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देनी है।


**GOVT. GIRLS COLLEGE RANJHI  
(JABALPUR) M.P.**

**ONE DAY NATIONAL SEMINAR ON**

**INTEGRATING INDIAN KNOWLEDGE SYSTEMS IN NEW  
EDUCATION POLICY -  
A pathway to Holistic learning**

नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा का परिचय—  
समग्र शिक्षा के विशेष संदर्भ में

**DATE : TUESDAY, 31 Dec .2024  
TIME : 11.00 PM TO 5 PM**



**SPONSORED BY  
DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION  
MADHYA PRADESH, BHOPAL**

**ORGANIZED BY  
GOVT GIRLS COLLEGE, RANJHI, JABALPUR  
ACCREDITED GRADE B++ (2.99)By NACC  
AFFILIATED TO Rani Durgavati Vishwvidalaya Jabalpur, M.P.**

<b>PATRON</b> DR. VEENA BAJPAI PRINCIPAL GOVT GIRLS COLLEGE RANJHI	<b>CONVENER</b> DR. VEENA SHRIVASTAVA COORDINATOR IQAC GOVT GIRLS COLLEGE RANJHI	<b>CO-CONVENER</b> DR. BINDU SHARMA PROF. (SOCIOLOGY) GOVT GIRLS COLLEGE RANJHI
--	--	---

## INVITED HONOURABLE GUESTS



**CHIEF GUEST**  
SHRI ASHOK ROHANIJI  
MLA CANT  
JABALPUR



**SPECIAL GUEST**  
SMT. SUMI SUNENO  
PRESIDENT  
JANBHAGIDARI



**DISTINGUISHED GUEST**  
Prof. RAJESH KUMAR  
VERMA  
KULGURU  
R.D.V.V. JABALPUR (M.P.)



**CHIEF PATRON**  
DR. SANTOSH JATAV  
ADDITIONAL DIRECTOR  
JABALPUR DIVISION



**KEYNOTE SPEAKER**  
DR. ALKESH CHATURVEDI  
PRINCIPAL  
PM COLLEGE JABALPUR



**EMINENT SPEAKER**  
DR. SUNIL BAJPAI  
PRINCIPAL  
PM COLLEGE KATNI



**SPEAKER**  
DR. NISHA TIWARI  
RETD. PRINCIPAL  
M.K.B. ARTS &  
COMMERCE COLLEGE  
JABALPUR



**SPEAKER**  
DR. SMRITI SHUKLA  
PRINCIPAL  
M.K.B. ARTS &  
COMMERCE COLLEGE  
JABALPUR



**SPEAKER**  
DR. RAJLAXMI TRIPATHI  
PRO. M.H. COLLEGE OF  
HOME SC. JABALPUR



**SPEAKER**  
DR. DHRUV DIXIT  
PROFESSOR  
KESHARVANI COLLEGE,  
JABALPUR



**PATRON**  
DR. VEENA BAJPAI  
PRINCIPAL  
GOVT GIRLS COLLEGE  
RANJHI



**CONVENER**  
DR. VEENA SHRIVASTAVA  
COORDINATOR IQAC  
GOVT GIRLS COLLEGE  
RANJHI

### About the College

Govt. Girls College Ranjhi is situated in Jabalpur District of Madhya Pradesh. As there are several small and large defence Factories in this area, Ranjhi is also known as the city of Factories. This Institution was established and started on 15<sup>th</sup> August 1982 with a motto of Promoting Quality Education in the domain of Higher Education. The Institution served as a boon to the daughters of majority of poor workers and factory labourers who inhabit this place. The spacious building with a huge surrounding open area is the centre of attraction for all girls seeking Higher Education and has become the only choice for them in this suburb region. The college runs graduation courses with faculty of Arts and Commerce. The college has been accredited B<sup>++</sup> grade by NAAC with 2.99 CGP.

### About the Seminar

The New Education Policy (NEP) 2020 emphasizes on integrating Bharatiya Gyan Parampara (Indian Knowledge System) into the modern education framework. The initiative aims to preserve India's cultural, philosophical and educational heritage and to deeply reform traditional knowledge, making it relevant to contemporary needs. A one-day national seminar on "Integration of Indian Knowledge System in New Education Policy - A pathway to Holistic Education" is being organized by Government Girls College Ranjhi District Jabalpur, Madhya Pradesh. The seminar aims to instill pride and awareness about India's cultural heritage. It also aims to bridge the gap between liberalism and modernity. An education system that gives students an insight into India's heritage while preparing them for the future. It will strive to integrate traditional knowledge along with modern education for practical application. It will also inspire students to contribute to global challenges using ancient knowledge and modern innovation.

### Sub Themes

- HISTORICAL SIGNIFICANCE AND LEGACY OF INDIAN KNOWLEDGE SYSTEMS. भारतीय ज्ञान परम्परा का ऐतिहासिक महत्व एवं विरासत
- INTEGRATION OF INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM IN NEW EDUCATION POLICY. नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का परिचय
- REVIVING TRADITIONAL SCIENCES AND ARTS . परम्परागत विज्ञान एवं कला का पुनर्जागरण
- INDIAN KNOWLEDGE SYSTEMS AND GLOBAL RELEVANCE. भारतीय ज्ञान परम्परा की वैश्विक प्रासंगिकता



- CHALLENGES IN INCORPORATING INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM. नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का परिचय - एक चुनौती
- OPPORTUNITY FOR RESEARCH AND INNOVATION. अनुसंधान एवं नवाचार के अवसर
- ROLE OF TEACHERS AND EDUCATORS. शिक्षकों एवं शिक्षाविदों की भूमिका
- FUTURE DIRECTIONS AND GLOBAL IMPACT. भविष्य की दिशा और वैश्विक प्रभाव
- INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM AS A PERSPECTIVE. भारतीय ज्ञान परम्परा एक दृष्टि
- INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM AND WOMEN EMPOWERMENT. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण

#### ADVISORY COMMITTEE

- ❖ Dr. Manoj Shrivastava, Principal, Govt. S.S.A. College, Sihora
- ❖ Dr. Arun Shukla, Professor, Govt. PM College, Jabalpur
- ❖ Dr. Shikha Saxena, Professor, Govt. Model Science College Jabalpur
- ❖ Dr. D. K. Mishra, Principal, Govt. College, Bareilly
- ❖ Dr. Madhumati Namdeo, Principal, Govt. College, Kundam
- ❖ Dr. Ashok Marathe, Principal, Govt. O.F.K. College, Khamariya
- ❖ Dr. Sunita Sharma, Principal, Govt. College, Patan
- ❖ Dr. P. K. Jain, Principal, Govt. College, Panagar
- ❖ Dr. Ragni Agrawal, Professor, Political Science, Govt. Girls College, Ranjhi
- ❖ Dr. Zarina John Choudhary, Professor, Govt. Girls College, Ranjhi
- ❖ Dr. Umesh Kumar Dubey, Professor, Govt. Girls College, Ranjhi
- ❖ Smt. Renu Bala Ghai, Asst. Prof. Govt. Girls College, Ranjhi

#### CONTACT DETAILS :-

- Smt. Usha Jain, Librarian, Govt. Girls College, Ranjhi-8871565855
- Shri K. K. Dubey, Sports Officer, Govt. Girls College, Ranjhi-9893497606

#### Instruction for paper Submission:

English-Times New Roman, Font Size 12

Hindi -KrutiDev 010/Arial Unicode MS, Font Size 14

#### Registration Fee :

Faculty 300/- Research Scholar - 100/-

Last Date of Registration :- 15/01/2025

Email For Paper Submission:- [heggcranjab@mp.gov.in](mailto:heggcranjab@mp.gov.in)

Registration Link - <https://forms.gle/LMyQtCP5nK6eA6GZ7>

Feedback Link- <https://forms.gle/PBwXfZaC5AVWpQ3s5>

## सहयोगी लेखकों की सूची

**डॉ. वीणा बाजपेयी**

प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, राँझी, जबलपुर (म.प्र.)

**डॉ. उमेश कुमार दुबे**

प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शासकीय कन्या महाविद्यालय राँझी, जबलपुर (म.प्र.)

**डॉ. जरीना जॉन चौधरी**

प्राध्यापक, (इतिहास) शासकीय कन्या महाविद्यालय, राँझी, जबलपुर (म.प्र.)

**Dr. Veena Shrivastava**

Professor (English) Govt. Girls College, Ranjhi, Jabalpur (M.P.)

**श्रीमती उषा जैन ग्रंथपाल**

ग्रंथपाल, शासकीय कन्या महाविद्यालय, राँझी, जबलपुर (म.प्र.)

**Dr. Bindu Sharma**

Professor (Sociology)

Govt. Girls College, Ranjhi, Jabalpur (M.P.)

**डॉ. शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव**

परीक्षा नियंत्रक, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

**Dr. Aditi Bajpai**

**Sakshi Bajpai, Student**

**Dr. Nilima Roy**

Govt. Girls College, Ranjhi, Jabalpur (M.P.)

**Er. Swati Mishra**

Guest Faculty, Department of English, Govt. Girls College, Ranjhi, Jabalpur (M.P.)

**प्रतिभा पटेल**

शोधार्थी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**अंकिता पाण्डेय**

अतिथि विद्वान, शासकीय कन्या महाविद्यालय राँझी, जबलपुर

**डॉ. बीना शर्मा**

अतिथि विद्वान, शासकीय कन्या महाविद्यालय राँझी, जबलपुर, (म.प्र.)

**डॉ. नूपूर निखिल देशकर**

शासकीय मानकुंवर बाई कला और वाणिज्य महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**डॉ. कविता चतुर्वेदी**

शासकीय मानकुंवर बाई कला और वाणिज्य महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**डॉ. सपना श्रीवास्तव**

अतिथि विद्वान, गृह विज्ञान

**पूजा सेन**

शोधार्थी, वाणिज्य, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**डॉ. रेखा श्रीवास्तव**

रबीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

**डॉ. पूजा सिंह**

अतिथि विद्वान, अर्थशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय, बरगी, जबलपुर (म. प्र.)

**राजेश बोरकर**

शोधार्थी (अर्थशास्त्र) स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसन्धान विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

**कुमारी गायत्री केसरवानी**

छात्रा बी. कॉम II Year

**सुरेखा उईके**

छात्रा बी. कॉम II Year

**डॉ. मधुमती नामदेव**

प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय, कुण्डम, जबलपुर (म. प्र.)

Dr. Anupama Dey

शासकीय कन्या महाविद्यालय रांझी, जबलपुर (म.प्र.)

Gautam Das



## विषय-सूची

<i>Chapter</i>	<i>Page No.</i>
1. भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता डॉ. वीणा बाजपेयी	19
2. भारतीय ज्ञान और विज्ञान परम्परा : एक दृष्टि डॉ. उमेश कुमार दुबे	22
3. भारतीय ज्ञान परंपरा में आश्रम व्यवस्था : मध्य प्रदेश में आश्रम विद्यालय के विशेष संदर्भ में डॉ. जरीना जॉन चौधरी	27
4. महिला सशक्तिकरण : भारतीय प्राचीन ज्ञान से समकालीन परिप्रेक्ष्य'' डॉ. नुपूर निखिल देशकर एवं डॉ. कविता चतुर्वेदी	33
5. Integrating Indian Knowledge System in NEP 2020 : A Pathway To Holistic Education Dr. Veena Shrivastava	40
6. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण श्रीमती उषा जैन	47
7 Historical Significance and Legacy of Indian Knowledge System Dr. Bindu Sharma	52
8. भारतीय ज्ञान परंपरा में परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन डॉ. शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	63
9. Empowered Minds, Healthy Lives: The Indian Knowledge System and Women's Mental Health Dr. Aditi Bajpai	79
10. Indian Knowledge System and Women Empowerment Sakshi Bajpai	82

11. Indian Knowledge System as a Perspective to Sustainable Development	86
Dr. Nilima Roy	
12. Indian Knowledge System in Indian English and Literature	92
Er. Swati Mishra	
13. भारतीय ज्ञान परम्परा: महिला सशक्तिकरण के विशेष संदर्भ में प्रतिभा पटेल शोधार्थी	102
14. भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता	109
अंकिता पाण्डेय	
15. भारतीय ज्ञान परम्परा एक दृष्टि	112
डॉ. बीना शर्मा	
16. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण में गृहविज्ञान की प्रासंगिकता	118
डॉ. सपना श्रीवास्तव	
17. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं बीमा व्यवसाय	126
पूजा सेन	
18. Introduction to Indian Knowledge System (IKS)	135
Dr. Anupama Dey	
19. Indian Culture and Women Empowerment	143
Gautam Das	
20. भारतीय ज्ञान परंपरा एक दृष्टि	149
डॉ. रेखा श्रीवास्तव	
21. राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा का संबंध	155
डॉ. पूजा सिंह	
22. नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश एवं महत्त्व	163
डॉ. उमेश कुमार दुबे, राजेश बोरकर	
23. भारतीय ज्ञान परंपरा, और वाणिज्य ऐतिहासिक महत्त्व एवं विरासत	170
कृ. गायत्री केशवानी	
24. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण	175
सुरेखा उईके	
25. नई शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा	182
डॉ. मधुमती नामदेव	

## भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता

डॉ. वीणा बाजपेयी

आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्म-ग्रंथों, संस्कृति एवं बहुभाषी गुण के लिये प्रसिद्ध रहा है। ये तीनों गुण केवल शब्द मात्र नहीं अपितु, प्रत्येक भारतीय के भाव हैं, जो कि अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिली है। भारतीय संस्कृति के अवबोध, संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान होना परम आवश्यक है, इसके बिना हम बालक के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। बालक जिस वातावरण में निवास करता है, उसे ही आत्मसात् करता है। यही कारण है कि, भारतीय संस्कृति के भाव अपने आप भारतीयों में परिलक्षित होते हैं। अतएव राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) ने शिक्षा क्षेत्र के प्रत्येक स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता को शामिल करने पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, भारतीय ज्ञान परम्परा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को न केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित करेगा, अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सततता का अवबोध कराने पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, भारतीय ज्ञान परम्परा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को न केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित करायेगा, अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक सततता का अवबोध कराने की ओर अग्रसर भी करेगा।

हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जो प्रायः मनसा, वाचा, कर्मणा पर आधारित थी। इसने सदैव बालक के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनीतिक, भाषात्मक आदि विकास पर ध्यान केन्द्रित किया था तथा आत्म-निर्भरता, सम्मान,

## 20 | नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का परिचय

सत्यता, नम्रता जैसे सनातन मूल्यों के सृजन पर बल दिया है, जो यह दर्शाता है कि आदिकाल से ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यवहारिक एवं दैनिक जीवन को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायक रहा है। इससे यह ज्ञान होता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही है, बल्कि भूतकाल में जन्में सभी महान व्यक्तित्व जैसे—चरक, रामानुजम, आर्यभट्ट, बुद्ध, रैदास, बाल्मिकि, विस्मिल्लाह खाँ, वराहमिहिर, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, गार्गी, अपाला, घोषा, सावित्री, आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही है जिसे एक स्वस्थ भारतवर्ष एवं संस्कृति को पुनः स्तम्भित किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का यह व्यापक दृष्टिकोण शिक्षार्थी में नैतिक, सामाजिक एवं बौद्धिक क्षमता का सृजन करने में सहायक हो सकेगा। भारतीय दृष्टिकोण से ज्ञान प्राप्त करके ही हम विश्वगुरु बनाने की कल्पना कर सकते हैं, क्योंकि किसी भी देश का विकास उसके स्वयं की सृजनात्मक एवं अनोखेपन पर निर्भर करता है, वहीं भारतवर्ष को भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक गौरव से ओत-प्रोत देश है। अतएव भारत को अपनी प्राचीन ज्ञान परम्परा को पुन उद्घोषित करने का प्रयास करना होगा। पहले हमें यह समझने का प्रयास करना चाहिये, कि भारतीय ज्ञान परम्परा क्या है एवं हमारी शिक्षा व्यवस्था में इसकी क्या आवश्यकता है? जैसा कि नाम से विदित होता है कि, भारतीय ज्ञान परम्परा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन, ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग, तपस्या, लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार के अद्भुत ज्ञान का संगम है। भारतीय ग्रंथों में इसका विस्तारित रूप देखा जा सकता है। पुराण, वेद, वेदांग, रामायण आदि विद्या को मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ अंग स्वीकार करते हुये मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास करते रहे हैं।

प्राचीनकाल की गुरुकुल पद्धति इन्हीं ग्रंथों के अधीन थी। इसके द्वारा बालक के नैतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, तार्किक गुणों को विकसित किया जाना था, जिससे बालक समाज एवं अपने परिवार के प्रति कर्तव्यपरायण एवं जिम्मेदार बनते थे, इस प्रकार जीवन सम्बन्धी सभी मूल पक्ष इस काल की शिक्षा प्रणाली में उपस्थित थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परम्परा को भी एक केन्द्रीय स्तम्भ माना गया है, जहाँ शिक्षा के प्राथमिक इकाई (पूर्व प्राथमिक शिक्षा) से लेकर शिक्षा की अंतिम इकाई (प्रौढ़ शिक्षा) तक भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का

प्रयास किया गया है। यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि शिक्षार्थी अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थायी विकास, समृद्ध जीवनयापन और वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके, तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है।

भारत की शिक्षा व्यवस्था को सृदृढ़ता प्रदान करने हेतु सनातन ज्ञान एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना अति आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परम्परा को ध्यान में रखते हुये शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिये। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिये गये निर्देशों एवं कार्यों को पूरा करने के लिये यह आवश्यक है कि हम पहले इन निर्देशों को एक खोजपूर्ण तरीके से ग्रहण करें।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय ज्ञान परम्परा: प्रो. कपिल कपूर
2. भारतीय ज्ञान परम्परा के दो उत्कर्ष लोक और शास्त्र, कपिल तिवारी
3. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विचारक: रजनीश कुमार शुक्ला
4. शिक्षा विकल्प एवं आयाम: अतुल कोठारी प्रकाशक प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली
5. भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-मुकुल कानिटकर
6. भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता: डॉ. अनिल सहस्त्रबुद्धे
7. भारतीय ज्ञान परम्परा और विचारक: रजनीश कुमार शुक्ल महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा



## भारतीय ज्ञान और विज्ञान परम्परा : एक दृष्टि

डॉ. उमेश कुमार दुबे

भारत में ज्ञान परम्परा बहुत ही प्राचीन है। इसका आरंभ वेदों से माना जाता है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान परम्परा एक समृद्ध और विविधतापूर्ण इतिहास रखती है, क्योंकि यह परम्परा हजारों साल से चली आ रही है। जो सदियों से मानव सभ्यता को आकार देती रहती है। यह परम्परा सिर्फ भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में इसका गहरा प्रभाव पड़ा है।

हमारी भारतीय संस्कृति और सम्यता ने सदियों से विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान दिया है। भारतीय मनीषियों ने अपने गहन चिंतन और अनुसंधान से न केवल अपने देश में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी विज्ञान और ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया।

भारतीय ज्ञान सदियों से चला आ रहा है, जिसमें वेदों का बड़ा योगदान रहा है। वेद भारतीय सम्यता के सबसे पुराने ग्रंथ हैं, जिनमें ज्ञान के कई आयामों का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में प्राकृतिक विज्ञान, चिकित्सा और गणित के सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है। उपनिषद, जो वेदों के ही हिस्से हैं, भारतीय दर्शन का केन्द्र बिन्दु माने जाते हैं।

### ज्ञान की परिभाषा

ज्ञान वह सूचना, तथ्य, समझ और अनुभव है, जिसे व्यक्ति द्वारा सीखा, अर्जित या समझा जाता है। यह किसी विशेष विषय या वस्तु के बारे में गहन जानकारी और

समझ का परिणाम होता है। ज्ञान केवल जानकारी तक सीमित नहीं होता, बल्कि व्यक्ति की अनुभव जनित समझ, तर्क और विश्लेषणात्मक क्षमता को भी शामिल करता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को सटीक निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाना होता है।

### विज्ञान की परिभाषा

विज्ञान एक प्रणालीबद्ध अध्ययन है, जो प्राकृतिक और भौतिक दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये निरीक्षण, प्रयोग, विश्लेषण और परीक्षण का उपयोग करता है। यह ज्ञान की वह शाखा है जो तथ्यों, सिद्धान्तों और नियमों के आधार पर ब्रम्हांड के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करती है। विज्ञान तर्कसंगतता, सबूतों और अनुभवजन्य अनुसंधान पर आधारित होना है, और इसका उद्देश्य प्रकृति और उसके कार्य-प्रणाली को समझना और उपयोग आविष्कार करना होता है।

### भारतीय विज्ञान का इतिहास

भारतीय विज्ञान का इतिहास भी बेहद समृद्ध रहा है। इसमें गणित और चिकित्सा विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। भारत की ज्ञान और विज्ञान परम्परा का वैश्विक प्रभाव भी गहरा रहा है। कई प्राचीन भारतीय विचार और सिद्धांत पश्चिमी विज्ञान और दर्शन पर भी प्रभाव डाल चुके हैं। ज्ञान और विज्ञान का हमारी जिन्दगी पर प्रभाव निम्न प्रकार पड़ा है:-

1. प्राचीन भारत में शिक्षा का माध्यम गुरुकुल प्रणाली थी, जहां छात्र अपने गुरु के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करते थे। यह प्रणाली सम्पूर्ण और समग्र शिक्षा प्रदान करती थी।
2. भारत में योग और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति की परम्परा भी अत्यंत समृद्ध रही है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का संतुलन स्थापित करती है।
3. भारत में धर्म और दर्शन का विज्ञान में अद्भुत समन्वय रहा है। यहां के धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में विज्ञान के सिद्धान्तों का गहन विवरण मिलता है, जो अद्वितीय है।

4. आर्यभट्ट और वराहमिहिर ने गणित और खगोल विज्ञान में जो योगदान दिया है, वह आज भी वैज्ञानिक समाज द्वारा मान्यता प्राप्त है। आर्यभट्ट ने शून्य की खोज की और ग्रहों की गति का अध्ययन किया।
5. रामनुजन ने गणित के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। उनकी थ्योरियों ने आधुनिक गणित को नई दिशा दी।
6. मध्यकालीन और आधुनिक भारत में विज्ञान के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण खोजें और विकास हुये। सी.वी. रमन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और विक्रम साराभाई जैसे वैज्ञानिकों ने भारतीय विज्ञान को वैश्विक मंच पर पहुंचाया।
7. भारत की ज्ञान और विज्ञान परम्परा का वैश्विक प्रभाव भी गहरा रहा है। कई प्राचीन भारतीय विचार और सिद्धांत पश्चिमी विज्ञान और दर्शन पर भी प्रभाव डाल चुके हैं।

### ज्ञान-विज्ञान परम्परा के प्रमुख आयाम

1. **वेद और उपनिषद्**—भारतीय ज्ञान परम्परा का आधार वेद और उपनिषद् है। इन ग्रंथों में धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान आदि विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई है।
2. **आयुर्वेद**—आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है, जो रोगों के निदान और उपचार के लिये प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करती है।
3. **योग**—योग एक प्राचीन भारतीय अभ्यास है जो शरीर, मन और आत्मा को एकीकृत करने में मदद करता है।
4. **ज्योतिष**—भारतीय ज्योतिष ग्रहों और नक्षत्रों की गति के आधार पर भविष्यवाणी करने की एक विधि है।
5. **खगोल विज्ञान**—प्राचीन भारतीय खगोलविदों ने ग्रहों की गति और ब्रम्हांड की संरचना के बारे में गहन अध्ययन किया।
6. **धातुकर्म**—भारतीयों ने धातुओं को शुद्ध करने और उनसे विभिन्न उपकरण बनाने की कला में महारत हासिल की थी।



## भारतीय ज्ञान विज्ञान का विश्व पर प्रभाव

भारतीय ज्ञान परम्परा का विश्व के विभिन्न हिस्सों में व्यापक प्रभाव पड़ा है, जैसे—

1. **योग**—आजकल योग विश्वभर में एक लोकप्रिय व्यायाम और तनाव निवारण तकनीक के रूप में प्रचलित है।
2. **आयुर्वेद**—आयुर्वेद के सिद्धांतों का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में भी किया जाता है।
3. **गणित**—भारतीय गणित के सिद्धांतों का उपयोग आधुनिक गणित में किया जाता है।
4. **धर्म और दर्शन**—भारतीय दर्शन के सिद्धांतों ने पश्चिमी दर्शन को भी प्रभावित किया है।

## ज्ञान-विज्ञान के संरक्षण और संवर्धन

भारतीय ज्ञान विज्ञान परम्परा को संरक्षित और संवर्धित करने के लिये निम्नलिखित कदम उठाये जा सकते हैं—

1. **शिक्षा**—स्कूलों और विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान-विज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिये।
2. **अनुसंधान**—भारतीय ज्ञान विज्ञान पर अधिक से अधिक अनुसंधान किये जाने चाहिये।
3. **संस्थान**—ज्ञान-विज्ञान पर केन्द्रीय संस्थानों की स्थापना की जानी चाहिये।
4. **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग**—भारतीय ज्ञान-विज्ञान को विश्व के अन्य देशों के साथ साझा किया जाना चाहिये।

**निष्कर्ष**—भारतीय ज्ञान-विज्ञान परम्परा न केवल प्राचीनकाल में बल्कि आज भी विज्ञान, चिकित्सा, गणित और अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रासंगिकता बनाये हुये हैं। भारत के मनीषियों और वैज्ञानिकों का योगदान आने वाले समय में भी अमूल्य रहेगा। भारतीय ज्ञान की यह परम्परा हर पीढ़ी के लिये प्रेरणास्त्रोत है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. भारतीय ज्ञान परम्परा और विचारक: रजनीश कुमार शुक्ल महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
2. भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता: डॉ. अनिल सहस्त्रबुद्धे
3. भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-मुकुल कानिटकर
4. शिक्षा विकल्प एवं आयाम: अतुल कोठारी प्रकाशक प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली
5. भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विचारक: रजनीश कुमार शुक्ला
6. भारतीय ज्ञान परम्परा के दो उत्कर्ष लोक और शास्त्र, कपिल तिवारी
7. भारतीय ज्ञान परम्परा: प्रो. कपिल कपूर



## भारतीय ज्ञान परंपरा में आश्रम व्यवस्था : मध्य प्रदेश में आश्रम विद्यालय के विशेष संदर्भ में

डॉ. जरीना जॉन चौधरी

---

पारंपरिक शिक्षा के अंतर्गत अध्ययन कार्य गुरुओं के आश्रम में रहकर किया जाता था। जिसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भी कहते थे।

गुरु का निवास ही विद्यार्थी का भी निवास होता था। गुरु अपने शिष्यों से पुत्रों की तरह व्यवहार करते थे। वे अपने शिष्यों के शारीरिक और मानसिक विकास दोनों पर ध्यान देते थे।

उनके पाठ्यक्रम में आचार्य-व्यवहार, संस्कार, जीविका साधन आदि पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता था। साथ ही गुरु शिष्य संबंधों का विशेष महत्व था। गुरु शिष्य परंपरा का पालन किया जाता था। पारंपरिक शिक्षा का मूल्य मौखिक होता था परीक्षाएं भी मौखिक होती थी पारंपरिक शिक्षा में धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इस शिक्षा में अव्यावहारिक कौशल का अभ्यास आवश्यक था।

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केन्द्रों का उल्लेख मिलता है। औपचारिक शिक्षा मंदिर, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी। ये ही उच्च शिक्षा के केंद्र भी थे। जबकि परिवार, पुरोहित, पंडित, संन्यासी और त्योहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होती थी।

धर्म सूत्रों में उल्लेख मिलता है कि शिक्षा के स्वरूप और उसकी व्यवस्था पर विशेष ध्यान रखा जाता था। परिषद, शाखा और चरण जैसे संघों की स्थापना की गई थी। जैसे-जैसे सामाजिक विकास होता गया वैसे-वैसे शिक्षण संस्थाएं भी स्थापित होने लगी। व्यवस्थित शिक्षण संस्थान सार्वजनिक स्तर पर बौद्धों द्वारा प्रारंभ की गई थी।

गुरुकुलों की स्थापना प्रायः वनों, उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी। अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास, अध्ययन तथा चिंतन पसंद करते थे। वाल्मीकि, संदीपनी, कण्व, यदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थे। इनके यहां दर्शन शास्त्रों के साथ-साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र भी पढ़ाए जाते थे। ऐसे बहुत से उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं जो नगर शिक्षा केंद्र के रूप में जाने गए जैसे तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, मिथिला, धारा, तंजौर आदि। हमारे देश में तीर्थ स्थान भी विद्वानों के आश्रमों के रूप में पहचाने जाते हैं। जैसे काशी, कर्नाटक, नासिक जो शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र थे।

ईसा की दूसरी शताब्दी के लगभग मठशिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र आज भी हमारे धर्माचार्यों के नाम से प्रसिद्ध हैं जैसे शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि हैं।

सार्वजनिक शिक्षण संस्थाएँ सर्वप्रथम बौद्ध विहारों में स्थापित हुई थी। भगवान बुद्ध ने उपासकों की शिक्षा-दीक्षा पर अत्यधिक बल दिया। इन संस्थानों में धार्मिक ग्रंथों का अध्यापन एवं आध्यात्मिक अभ्यास कराया जाता था। अशोक (300 ई.पू.) ने बौद्ध विहारों की विशेष उन्नति कराई। कुछ समय पश्चात यह बिहार विद्या के महान केंद्र बन गए। यह वस्तुतः गुरुकुलों के ही समान थे। इनमें गुरु किसी एक कुल का नहीं वरण सारे विहार का प्रधान होता था। ये धर्म प्रचार की दृष्टि से जनसाधारण के लिए भी सुलभ थे। इनमें नालंदा विश्वविद्यालय (450 ई.) वल्लभी (700 ई.) विक्रमशिला (800 ई.) प्रमुख शिक्षण संस्थान थी। विहारों में महाबोधि विहार बोधगया, वाटथाई मंदिर कुशीनगर, गोम्पा सिक्किम आदि जाने जाते हैं।

भारत में 1850 ई. तक गुरुकुल की प्रथा थी। डॉ. अल्टेकर के अनुसार “भारत की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक परंपरा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है।” प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में भी देखते हैं। ऋग्वेद युग की शिक्षा का उद्देश्य था तथ्य साक्षात्कार। ब्रह्मचर्य, तप और योगाभ्यास से तत्त्व का साक्षात्कार करने वाले ऋषि, विप्र, वैधस, कवि मुनि, मनीषों के नाम से प्रसिद्ध थे।

प्राचीन काल में व्यक्तिगत व्यवस्था के दो स्तंभ थे—पुरुषार्थ और आश्रम। सामाजिक प्रकृति-गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्गीकरण चार वर्णों में बटा

हुआ था। व्यक्तिगत संस्कार के लिए उसके जीवन का विभाजन चार आश्रमों में किया गया था। ये चार आश्रम थे—(1) ब्रह्मचर्य (2) गृहस्थ (3) वानप्रस्थ और (4) सन्यास आश्रम।

अमरकोश(7.4) पर टीका करते हुए भानु दीक्षित ने 'आश्रम' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है—

आश्रामन्त्यत्र अनेन वा। श्रमुतपसि। धन्या। यद्वा आ समंताल्लूमोऽत्र। स्वधर्मसाधन क्लेशात् अर्थात् जिसमें सम्यक् प्रकार से श्रम किये जाएँ वह आश्रम हैं। आश्रम जीवन की वह स्थिति है जिसमें कर्तव्यपालन के लिए पूर्ण परिश्रम किया जाए। आश्रम का अर्थ “अवस्था विशेष” “विश्राम का स्थान” ऋषि मुनियों के रहने का पवित्र स्थान यदि भी किया गया है।

आश्रम संस्था का प्रादुर्भाव वैदिक युग में हो चुका था, किंतु उसके विकसित और दृढ़ होने में काफी समय लगा। वैदिक साहित्य में ब्रह्मचर्य और गृहस्थ अथवा गार्हपत्य का स्वतंत्र विकास का उल्लेख नहीं मिलता। इन दोनों का संयुक्त अस्तित्व बहुत दिनों तक बना रहा और इनको वैखानस परिव्राजक यति मुनि श्रमण आदि से अभिहित किया जाता था। वैदिक काल में कर्म तथा कर्मकांड की प्रधानता होने के कारण निवृत्तिमार्ग अथवा सन्यास को विशेष प्रोत्साहन नहीं था। वैदिक साहित्य के अंतिम चरण उपनिषदों में निवृत्ति और सन्यास पर जोर दिया जाने लगा और यह स्वीकार कर लिया गया था कि जिस समय जीवन में उत्कट वैराग्य उत्पन्न हो उस समय से वैराग्य से प्रेरित होकर सन्यास ग्रहण किया जा सकता है। फिर भी सन्यास अथवा श्रमण धर्म के प्रति उपेक्षा और अनावस्था का भाव था। सूत्र युग में चार आश्रमों की परिगणना होने लगी थी। यद्यपि उनके नामक्रम में अब भी मतभेद था। आपस्तंब धर्म सूत्र (2.9.21.1) के अनुसार गृहस्थ, आचार्यकुल (ब्रह्मचर्य) मौन तथा वानप्रस्थ चार आश्रम थे। गौतम धर्मसूत्र(3.2) में ब्रह्मचारी गृहस्थ भिक्षु और वैखानस चार आश्रम बतलाए गए हैं।

आश्रम व्यवस्था में व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति के बाद संसार की वास्तविकताओं का अनुभव करने की आवश्यकता होती है। आश्रम विद्यालयों को शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु क्रियाशील संस्थान माना जाता है। शिक्षकों और छात्रों को एक साथ रहना एवं काम करना होता है।

शिक्षा का प्रारंभ है ब्रह्मचर्य आश्रम से होता था। यह आश्रम प्रत्येक आश्रमों का आधार माना जाता था। जिसमें मनुष्य के जन्म से 25 वर्ष तक उपयुक्त समय का निर्धारण किया जाता था जिसमें शिष्य गुरुकुल में गुरुजनों से शिक्षा ग्रहण करते थे। आश्रम

### 30 | नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का परिचय

विद्यालयों की अवधारणा आश्रम शब्द से ली गई है जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में इसे शिक्षक का घर भी कहा जाता है। एक अर्थ में गुरु और उनकी पत्नी ने छात्रों को देखभाल और सहायता प्रदान की, जो उनके संवर्धन के लिए अनुकूल निजी जीवन हैं। प्रारंभिक चरण में अनुसूचित जाति और जनजाति स्कूलों में समस्याओं का सामना करना पड़ा इसलिए आश्रम स्कूलों में इनकी अलग व्यवस्था की गई।

दो अलग-अलग विभाग कर दिए हैं—(क) आश्रम अर्थात् पर्याप्त श्रम या प्रयत्न करना (ख) वह स्थल जहाँ श्रम या प्रयत्न किया जाये। ब्रह्मचर्य आश्रम अध्ययनात्मक श्रम की विशिष्टता होती है।

सामाजिक संगठन के अंतर्गत आश्रम व्यवस्था की परिकल्पना से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन के पूरे विकसित स्वरूप का आधार ही आश्रम शिक्षा थी। आश्रम शब्द की व्युत्पत्ति 'आ' उपसर्ग पूर्वक श्रम धातु से हुई है। आश्रम्यन्ति अस्मिन् इति आश्रमः अर्थात् एक ऐसा जीवन स्तर जिसमें व्यक्ति खूब श्रम करता है। जर्मन विद्वान पॉल डायसन ने एनसाइक्लोपीडिया आफ रीलीजन में इसी श्रम अर्थ को ग्रहण करते हुए उसके भी दो प्रकार बताये हैं।

असम विद्यालयों का प्रारंभ 1922 में गुजरात से हुआ। हालांकि इन्हें औपचारिक रूप से 1960 के दशक में प्रारंभ किया गया था। इन्हें सरकार ने प्रायोगिक आधार पर अपनाया था जिसे अंततः सफलतापूर्वक अपनाया गया।

महात्मा गांधी ने कहा है कि “भारत की आत्मा उसके गांव में बसती है”। हमारे देश की आधी से ज्यादा आबादी गांव में रहती है जो हमारे देश की रीढ़ है और इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि “भारत की आत्मा” को भी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रगति और उन्नति के मामले में शहरी आबादी के बराबर का अवसर दिया जाए। इससे वे बेहतर जीवन स्तर स्थापित करने और उसे शुरू करने में सक्षम हो सके, देश की प्रगति और अपना योगदान दे सकें, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों का विकास और शहरीकरण शहरी क्षेत्रों के आधुनिकीकरण और औद्योगिकीकरण का पर्याय नहीं हो सकता। हम अपनी संस्कृतियों और परंपराओं के विशाल संग्रह के समावेशीकरण पर बहुत गर्व करते हैं। इसलिए ग्रामीण संदर्भ में विकास शहरों से इस मायने में अलग होना चाहिए। ग्रामीण परिवेश का विकास कुछ इस तरह से होना चाहिए कि गांव की संस्कृति परंपरा और जीवन जीने के तरीके में निहित लोकाचार जैसे गुण निहित हों।

हमेशा यह कहा जाता है किसी किसी राष्ट्र के विकास को समझने और निर्धारित करने के लिए, सभी को केवल मौजूदा शिक्षा प्रणाली की स्थिति और महिलाओं की

स्थिति पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। विविधता में एकता भारत देश की अर्वाचीन मान्यता रही है। जिसे शिक्षा के क्षेत्र में भी अपनाया जा सकता है। यही कारण है सरकार ने गांव की शिक्षा प्रणाली के संबंध में विशिष्ट नीतियां अपनाई हैं।

इसका एक मुख्य उदाहरण आश्रम विद्यालय है। जिसकी स्थापना जनसांख्यिकीस्कूली शिक्षा के पारंपरिक रूप के संचालन की अनुमति नहीं देती है। ये विद्यालय विशेष रूप से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थापित किए गए थे।

“आश्रम विद्यालयों की अवधारणा आश्रम शब्द से ली गई है। जिसकी उत्पत्ति वेद संस्‍ति से है। जहां अरण्य विद्यालयों को आश्रम शब्द से व्यवस्थापिक किया गया है। जहां गुरुकुल जैसी व्यवस्था में छात्रों की देखभाल और सहायता प्रदान की जाती थी। जो उनके व्यक्तिगत जीवन को समृद्ध बनाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं मध्य प्रदेश के संबंध में ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के लिए आश्रम विद्यालय सरकार की अनूठी पहल है। स्वतंत्रता के बाद आश्रम विद्यालय की स्थापना और बजट सरकार के कुशल दायित्वों में प्रथम है।

मध्य प्रदेश में जनजातीय समुदाय की कुल जनसंख्या राज्य की कुल अवधि का 21.99 प्रतिशत है मध्य प्रदेश में अनुसूचित जनजाति की आबादी करीब 1.53 करोड़ है यह देश की कुल आदिवासी आबादी का 14.70 प्रतिशत हिस्सा मध्य प्रदेश में रहता है। इस तरह मध्य प्रदेश में देश की सबसे ज्यादा जनजातीय आबादी है। जनजाति का अर्थ एक सामाजिक समूह से है जो दुनिया के किसी निश्चित भूभाग पर निवास करता है। जिनकी अपनी भाषा, संस्‍ति और सामाजिक संगठन होता है। मध्य प्रदेश में लगभग 24 जनजातीय यहां निवास करती हैं उनकी उपजातियां को मिलाकर इनकी कुल संख्या 90 है। शैक्षणिकस्तर एवं आर्थिक सुदृढ़ता किसी भी वर्ग की सामाजिक स्थिति की पहचान होते हैं। इसलिए विभाग का लक्ष्य अनुसूचित वर्गों का शैक्षणिक एवं आर्थिक उत्थान कर उन्हें समाज के अगले पायदान पर लाना है। मध्य प्रदेश एक ऐसा राज्य है जहां आदिवासी विकास खण्डों में शिक्षा का संचालन जनजातीय कार्य विभाग द्वारा किया जाता है। मध्य प्रदेश के 89 आदिवासी विकास खण्डों में प्राथमिक शिक्षा से लेकर हाई सेकेंडरी तक की शिक्षा का दायित्व जनजातीय विभाग के पास है। इन विकास खण्डों में नवीन शैक्षणिक संस्थाओं को खोलना, पदों का निर्माण तथा नियंत्रण विभाग

द्वारा किया जाता है। विभाग द्वारा जनजाति छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियां स्वी त एवं वितरण करने के साथ-साथ समस्त छात्रावास/आश्रमों एवं अन्य आवासीय संस्थानों का संचालन भी किया जा रहा है। जहां अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के बालक बालिकाओं निवास कर शिक्षा प्राप्त करते हैं। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षण के साथ निशुल्क आवास, भोजन, स्वस्थ पेयजल, विद्युत आदि की सुविधा देने के उद्देश्य से आश्रम विद्यालय सभी वर्गों के छात्र-छात्राओं के लिए प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आश्रम व्यवस्था के अनुरूप शिक्षण पद्धति को अपनाया जाता है।

### संदर्भ सूची

1. <https://gyansamandev.com>
2. <https://hi.wikipedia.org>
3. <https://www.jagran.com>
4. <https://dspmuranchi.ac.in>
5. <https://simplipedia.wordpress.com>
6. <https://www.tribal.mp.gov.in>
7. भारतीय संस्कृति





## “महिला सशक्तिकरण : भारतीय प्राचीन ज्ञान से समकालीन परिप्रेक्ष्य”

डॉ. नूपुर निखिल देशकर एवं डॉ. कविता चतुर्वेदी

**सारांश**— भारतीय ज्ञान परंपरा में समाज के विभिन्न पहलू समाहित हैं, जिसमें महिलाओं के पक्ष को भी समाहित किया गया है। उनके अधिकारों, उनके समाज, शिक्षा, आध्यात्म, राजनीतिक एवं राष्ट्र कल्याण के क्षेत्र में योगदान और उनके सशक्तिकरण के मार्ग को भी स्पष्ट किया गया है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय समाज में महिलाएँ सशक्त, समर्थवान और कुशल थीं। इस आधार पर किस तरह वर्तमान समय में महिलाओं को उनके अधिकारों और आत्मनिर्भरता के साथ साथ राष्ट्र, समाज और परिवार के उत्थान की दिशा में प्रोत्साहित किया जा सकता है।

### 1. परिचय :

भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा का इतिहास प्राचीन और विविधतापूर्ण रहा है। यहाँ महिलाओं को सम्मान और अधिकार दिया गया था और उन्हें ज्ञान, शिक्षा और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिला। वेद, उपनिषद, पुराण और अन्य प्राचीन ग्रंथों में महिलाओं की स्थिति और उनके अधिकारों का विस्तार से वर्णन किया गया है किन्तु समय के साथ महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया और अब हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा से हम महिला सशक्तिकरण की दिशा में कैसे सकारात्मक रूप से आगे बढ़ सकते हैं।

प्राचीन भारत में भारतीय महिलाओं को सम्मान के साथ अध्यापन करने का समान अधिकार प्राप्त था उन्हें अच्छी इच्छा के अनुसार विवाह करने की स्वतंत्रता थी, वह

अपनी योग्यता के अनुसार राजनीतिक गतिविधियों में भी सहयोग प्रदान करती थी।

## 2. भारतीय ज्ञान परंपरा और महिला की भूमिका :

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं का स्थान महत्वपूर्ण था। उदाहरण के लिए वेदों और उपनिषदों में महिलाएँ तपस्विनियाँ, ऋषिकाएँ और विदुषियाँ थीं। भारतीय ग्रंथों में सति अनुसुइया, कुंती, द्रौपदी, शकुंतला, सति सावित्री जैसी महिलाओं का उल्लेख है, जिन्होंने समाज और परिवार निर्माण के में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। भारतीय ग्रंथों में 23 ऐसी विदुषियों के नाम हैं जिन्होंने गणित, ज्योतिष, स्वास्थ्य, शिक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, वेद, उपनिषद् आदि में ऋषियों के साथ शास्त्रार्थ कर अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित किया। गार्गी, लोपामुद्रा, भारती जैसी विदुषियाँ श्रेष्ठ ब्राह्मणों के साथ तर्क-वितर्क करती थीं।

### वैदिक काल और वर्तमान काल में महिलाओं की स्थिति

(क) वैदिक काल में भारत में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त थे। वेदों उपनिषदों और सूक्त में 23 महिला विदुषियों के नाम हैं जिन्होंने शिक्षित होकर कई ग्रंथों की रचना की जिसमें मेधा, लाक्षा, इंद्राणी, सूर्या, सावित्री आदि के नाम आते हैं जबकि ब्रिटिश काल में महिला को शिक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ा इसमें सावित्रीबाई फुले, महादेवी वर्मा, कादम्बिनी गांगुली, दुर्गाबाई, हंसा मेहता आदि।

(ख) वैदिक काल में बाल-विवाह के कोई प्रमाण नहीं मिलते जबकि ब्रिटिश काल में रानी लक्ष्मीबाई (14वर्ष), अनुराधा (13वर्ष), कस्तूरबा गांधी (14वर्ष), सुभद्रा कुमारी चौहान आदि।

(ग) वैदिक कालीन भारत में सती प्रथा का चलन नहीं था भारतीय स्त्रियां स्वेच्छा से अपने पति के साथ मोक्ष प्राप्ति के लिए चिता में जीवित जलती थी। जैसे सति वृंदा (जलंधर की पत्नी), सुलोचना (मेघनाद की पत्नी), माधवी (पांडव की पत्नी) ऐसे कुछ प्रमाण मिलते हैं। उल्टा पत्नियों ने पति के जीवन के लिए संघर्ष किया सति सावित्री, सति मदालसा, इंद्र की पत्नी इंद्राणी आदि जबकि भारत में मुगलकाल से सती प्रथा एक कुप्रथा के रूप में प्रारंभ हुई। यूरोपियन देशों में महिलाओं को डायन घोषित कर सामूहिक रूप से मार दिया जाता था।

(घ) वैदिक काल में महिलाएँ समाज उत्थान में अपने पतियों को सहयोग देती थी। शिव-शक्ति, राजा दशरथ-कैकेई (देवासुर संग्राम), श्रीकृष्ण-सत्यभामा (नरकासुर

का वध), मंडन मिश्र-विदुषी पत्नी भारती, हरिश्चंद्र-तारामति किंतु विदेशों में महिलाएँ पुरुषों के लिए मात्र भोग की वस्तु थी।

(च) वैदिक कालमें स्त्रियाँ विवाह, शस्त्र, शास्त्र की शिक्षा के लिए स्वतंत्र थी अर्थात् स्वच्छंद, उच्छृंखल नहीं थी। यूरोपियन देशों में महिलाओं का पूर्व में कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था और 1930 के पश्चात् वह स्वच्छंद हो गई। माय बॉडी माय चॉइस, डिक अर्थात् डबल इनकम नो किड्स आदि।

### 3. भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

आज विश्व भारत की ओर देख रहा है और भारत मातृशक्ति की ओर। प्राचीन भारत में महिला सशक्त थी। वह अपने जीवन के ही नहीं समाज और राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ निर्णय लेने की अधिकारी थी। भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं के अधिकारों की बात नहीं करता, बल्कि इसे समाज और राष्ट्र की उन्नति का अनिवार्य आधार मानता है। आज के समय में प्राचीन परंपराओं की इस सोच को पुनर्जीवित करना और महिलाओं को उनके अधिकार, शिक्षा और सम्मान दिलाना हमारा दायित्व है। इससे समाज में पुनः संतुलन और समृद्धि स्थापित होगी।

#### (1) स्त्रियों का सम्मान : “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः”

मनुस्मृति में कहा गया है कि जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है, वहाँ देवता वास करते हैं। यह कथन दर्शाता है कि महिला समाज का आधार हैं, और उनका सशक्त होना पूरे समाज के उत्थान के लिए आवश्यक है।

#### (2) शक्ति और ऊर्जा की प्रतीक :

भारतीय परंपरा में स्त्रियों को शक्ति का स्वरूप माना गया है। देवी दुर्गा, काली और सरस्वती जैसी देवियों को न केवल शक्ति और ज्ञान की अधिष्ठात्री माना गया है, बल्कि उनका पूजन यह दिखाता है कि समाज को उन्नति के लिए महिलाओं का योगदान अनिवार्य है।

#### (3) शिक्षा का अधिकार : “विद्या विनयेन शोभते”

प्राचीन भारत में महिलाएँ विद्या में निपुण होती थीं। गार्गी, मैत्रेयी, अपाला जैसी विदुषियाँ इसका प्रमाण हैं। ज्ञान परंपरा में यह मान्यता है कि शिक्षित महिला पूरे परिवार और समाज को शिक्षित कर सकती है। वर्तमान में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना हमारी प्राचीन परंपरा के विपरीत है। महिला सशक्तिकरण उन्हें इस ज्ञान परंपरा में पुनः स्थापित करने में मदद करता है।

**(4) धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व :**

वैदिक युग में महिलाएँ यज्ञ में भाग लेती थीं और सामाजिक निर्णयों में योगदान देती थीं। वर्तमान समय में महिलाओं को नेतृत्व के समान अवसर देने से सामाजिक संतुलन और प्रगति संभव है।

**(5) कुलीन समाज का निर्माण :**

भारतीय परंपरा में परिवार को समाज का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। महिलाओं को 'गृहलक्ष्मी' कहा गया है। यदि महिला सशक्त होगी, तो वह अपने परिवार और बच्चों का उचित मार्गदर्शन कर समाज को सुदृढ़ बनाएगी।

**(6) धर्म और नैतिकता की धारक :**

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं को धर्म और नैतिक मूल्यों की संरक्षक माना गया है। यदि महिलाएँ शिक्षित और सशक्त होंगी, तो वे समाज में धर्म, नैतिकता और संस्कृति के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

**(7) करुणा और सह-अस्तित्व का भाव :**

भारतीय दर्शन में करुणा, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व के गुणों को उच्च मूल्य दिया गया है। महिलाओं को इन गुणों का प्रतीक माना गया है। महिला सशक्तिकरण के माध्यम से इन मूल्यों को समाज में अधिक मजबूती से स्थापित किया जा सकता है।

**(8) आध्यात्मिक समानता :**

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्री और पुरुष को समान रूप से आत्मा के रूप में देखा गया है। उपनिषदों में कहा गया है कि 'आत्मा न तो पुरुष है, न स्त्री' यह समानता का संदेश आज के समाज में महिला सशक्तिकरण के लिए प्रेरणा बनता है।

**4. महिला सशक्तिकरण के आयाम**

**(अ) शिक्षा और प्रशिक्षण :** भारतीय ज्ञान परंपरा से हम यह सिखा सकते हैं कि शिक्षा महिला सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। महिलाओं को समान शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मिलें, ताकि वे आर्थिक और सामाजिक रूप से स्वतंत्र हो सकें।

**(ब) स्वास्थ्य और पोषण :** भारतीय ज्ञान परंपरा में आहार और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा गया था। महिलाओं को स्वस्थ जीवन जीने के लिए उसके आहार, मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य पर अधिक महत्व दिया गया है। आज के नारी समाज को भी स्वस्थ जीवन जीने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ना चाहिए।

**(स) राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण :** महिलाएँ भारतीय समाज में राजनीति और समाज के निर्णय लेने में शामिल हो सकती हैं, जैसे कि प्राचीन भारत में माता जानकी, माता रुक्मणी, द्रौपदी, महारानी दुर्गावती, जीजा माता, लोकमाता अहिल्या, रानी लक्ष्मीबाई का योगदान रहा।

### 5. भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण में चुनौतियाँ

भारत में विदेशी नारीवाद का कुप्रभाव भारत के नारी समाज को दूषित कर रहा है। एक ओर आधुनिकता की ओट में भारतीय संस्कृति से खिलवाड़ हो रहा है। भारतीय नारी उत्कृष्टता के स्थान पर स्वच्छंद जीवन व्यतीत करना चाह रही है। इससे संपूर्ण नारी समाज प्रभावित हो रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय नारी को ऐसी विपरीत परिस्थितियों में उनके सर्वश्रेष्ठ जीवन से परिचित करा कर श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

भारतीय संविधान ने यद्यपि महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए हैं, किन्तु कई स्थानों पर आज भी महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है। जबकि प्राचीन भारत में महिलाओं को समानता के अधिकारी प्राप्त थे। जीवन के सर्वश्रेष्ठ निर्णय विवाह के लिए भी उन्हें स्वयंवर का अधिकार था। पिता की संपत्ति में अधिकार को छोड़कर भारतीय नारी को वह सभी अधिकार प्राप्त थे जो पुरुषों को प्राप्त थे। वह जनेऊ धारण करती थी, उसे गुरुकुल जाकर अपनी रुचि अनुसार ज्ञान अर्जित करने का अधिकार था। वह शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत थी।

### 6. समाधान और सुधार के उपाय

भारत सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बनाई गई योजनाओं और कानूनों का निर्माण किया।

**(अ) महिलाओं के उत्थान के लिए योजनाएँ—**वन स्टॉप सेंटर, महिला हेल्पलाइन, कामकाजी महिला छात्रावास योजना, उषा किरण योजना, महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम की सहायता (एस. टी. आई. पी.), मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, महिला आरक्षण विधेयक, महिला उत्पीड़न विरोधी कानून, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ योजना, घरेलू हिंसा की पीड़िता के लिए सहायता योजना आदि।

### **(ब) महिलाओं के लिए विधि की व्यवस्था—**

1. अनैतिक व्यापार (नियंत्रण) अधिनियम, 1956

2. दहेज विरोधी अधिनियम 1961
3. एक समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976
4. गर्भावस्था की चिकित्सीय समाप्ति अधिनियम 1987
5. कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध अधिनियम 1994
6. लिंग परीक्षण तकनीक अधिनियम, 1994
7. बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006
8. कार्य स्थल पर महिलाओं का यौन शोष अधिनियम 2013
9. मातृत्व संबंधी लाभ हेतु अधिनियम 2016
10. संपत्ति का अधिकार
11. पति की संपत्ति से जुड़े अधिकतर
12. घरेलू हिंसा के विरुद्ध अधिकार

इस हेतु महिलाओं के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार और समाज को साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। जहाँ नारी समाज सशक्त और शिक्षित होगा वहाँ समाज का सर्वश्रेष्ठ, संतुलित और संपूर्ण विकास होगा। कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करना और लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करना। भारत में शिवशक्ति इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं।

### शोध पत्र, लेख और अध्ययन रिपोर्टें

महिला सशक्तिकरण और भारतीय ज्ञान परंपरा के संबंध में लिखे गए शोध पत्रों, लेखों और ब्लॉगों का तथा विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों द्वारा प्रकाशित आलेखों का गहन अध्ययन कर महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करना चाहिए और उनके समाधान के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं, इस पर विचार करना चाहिए। महिला सशक्तिकरण और भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित सेमिनारों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों के माध्यम से समाज को जागरूक करना चाहिए। ये आयोजन आपको समकालीन शोध और विचारों से परिचित कराएंगे। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे Linked In, Twitter, और Research Gate पर महिला सशक्तिकरण और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करें। इन सभी उपायों को अपनाकर आप इस विषय को गहराई से समझ सकते हैं और इसे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए अपनी क्षमता में समाहित कर सकते हैं।

## 7. निष्कर्ष :

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं को समान अधिकार और सम्मान प्राप्त था, और हमें इस परंपरा को पुनः जागृत करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार, समाज और शिक्षा प्रणाली को मिलकर काम करना होगा। महिला सशक्तिकरण न केवल समाज के विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की मूलभूत नींव को मजबूत करेगा।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

### ई संदर्भ :

- [www-wcd-nic-in>schemes&listing](http://www-wcd-nic-in>schemes&listing)
- <https://www-deepawali-co-in>
- <https://www-hindikiduniya-com>

### अन्य संदर्भ :

1. अन्नपूर्णा नौटियाल, हिमांशु बौराई. (2009) 'गढ़वाल में महिला सशक्तिकरण
2. कबीर, एन. (2005) लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण तीसरी सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण। लिंग और विकास 13(1), 13-24.
3. गुप्ता सरोज कुमार, भारतीय नारी कल आज और कल
4. डांडीकर, हेमलता (1986) भारतीय महिला विकास : चार लेंस. दक्षिण एशिया
5. स्वामी विवेकानन्द, थे ईस्ट एंड द वेस्ट
6. हिमालय : 'बाधाएँ और संभावनाएँ', कल्याण प्रकाशन, दिल्ली (2005), खंड 33, संख्या 1 और 29



## **Integrating Indian Knowledge System In Nep 2020 : A Pathway To Holistic Education**

**Dr. Veena Shrivastava**

---

**Abstract :** The inclusion of Indian knowledge system in the new education policy reflects a paradigm shift towards holistic learning, emphasizing the integration of traditional wisdom with modern education. Rooted in India's rich cultural heritage, IKS encompasses diverse disciplines such as philosophy, mathematics, astronomy, medicine, linguistic and environmental science offering a multidimensional approach to learning. The NEP aims to bridge the gap between ancient and contemporary knowledge by fostering critical thinking, ethical reasoning and sustainable practices. Holistic learning through IKS encourages the development of cognitive, emotional and spiritual intelligence. It promotes values like empathy, environmental consciousness and social responsibility by incorporating elements such as yoga, meditation and ayurveda into the curriculum. More over IKS emphasizes multilingualism and local language systems, enabling students to connect with their cultural roots while cultivating global citizenship. This integration in the NEP seeks to create a balanced education model that nurtures individuality, community engagement and life long learning. By blending traditional insights with modern advancements, IKS in holistic learning prepares students to address complex global challenges with a grounded, ethical and innovative mind set.



**Introduction :**

The new education policy 2020 emphasizes the integration of Indian knowledge system into the modern education framework. This initiative aims to preserve and revive India's rich cultural philosophical and educational heritage fostering deep connection with traditional knowledge while making it relevant to contemporary needs. The key features of this policy includes the inclusion of traditional knowledge, focus on Indian languages, ethical and holistic learning, scientific and practical knowledge, curriculum development, research and documentation. The key objects of Indian knowledge system are vast encompassing a wide array of disciplines rooted Indias rich cultural, spiritual, scientific and philosophical heritage. These include Vedanta, Upanishads, buddhist and jain philosophies, linguistics and literature like Sanskrit grammar, poetry and epics, linguistic diversity. Science and mathematics which includes astronomy, ayurveda and mathematics. Arts and aesthetics that includes music, dance and drama and visual arts. Vastu shashtra, temple architecture and irrigation and water management, The ethics and governance which includes dharma shashtra, arthashashtra, panchayati system. These objects collectively demonstrate the multidisciplinary and holistic nature of Indian knowledge system emphasizing harmony, sustainability and interconnectedness of knowledge fields.

The new education policy includes subjects like vedic mathematics ayurveda, yoga, astronomy, ancient literature and classic arts ensuring that students gain insights into India's intellectual traditions. To promote linguistic heritage the policy emphasizes teaching in regional languages and inclusion of Sanskrit as an important subject. Indian knowledge systems that emphasize moral values, critical thinking and holistic approaches are integrated into the curriculum to develop well round personalities Ancient Sciences like yoga ayurveda and metallurgy are presented along side modern Sciences to demonstrate their practical applications and universal relevance. Dedicated efforts will be made to develop high quality content on Indian knowledge systems integrated into school and higher educational curriculum. The new education policy encourages research on ancient texts, philosophies and knowledge systems translating them into accessible format for wider dissemination. The main objectives behind this policy is to, install pride and awareness about India's cultural heritage to integrated traditional knowledge with modern education for practical application and to inspire students to

contribute to global challenges using ancient wisdom and modern innovation.

By introducing Bhartiya Gyan Parampara the new education policy aims to bridge the gap between traditional and modern creating and education system that respects India's heritage while preparing students for the future. Including traditional knowledge system in higher education under the new education policy requires integrating indigenous and local wisdom into curriculum pedagogy and research frameworks. Courses on indigenous knowledge system, sustainable practices, traditional medicine arts, crafts and cultural heritage should be included. Blend traditional knowledge with modern discipline like environmental science, agriculture, architecture and technology. Focus on translation and documentation. Create resources in multiple languages to make traditional knowledge accessible to a broader audience. Include pedagogical innovations like experiential learning, communication participation, storytelling methods. Use hands on approaches like field visits, workshops, and apprenticeships with local artisans, healers and community leaders. Invite knowledge holders as guest lecturers or adjunct faculty. Leverage oral traditions and narrators to teach values history and culture. Research and development system should also be made primary thing in education system. Established research centres focusing on traditional knowledge systems and their applications.

Promote partnership between Universities and local communities to create knowledge. Allocate grants for research on traditional practices and their modernisation. Policies should be made and structural support should be provided. Create repositories for traditional knowledge documenting practices languages and techniques. Intellectual property rights should be focussed upon. Protect the rights of community through legal frameworks and ethical use of their knowledge. Ensure that higher education Institutions value and respect the diversity of traditional knowledge. Skill development and vocational training should be made compulsory. Integrate traditional skills example handicrafts, organic farming into vocational education. Link traditional practices with entrepreneurship and startups to make them economically viable.

The new education policy should also focus on global recognition and networking. Promote traditional knowledge systems through International collaborations conferences and exchange programs. Highlight India's traditional knowledge on global platform as part of its soft power diplomacy. Technology should be also integrated. Use

digital platform to preserve and share traditional knowledge. Develop online courses and virtual reality experiences to teach traditional practices effectively. By blending traditional knowledge system with modern education frameworks the new education policy can create a holistic and cultural and reached higher education system that respects and revitalizes India's heritage while addressing contemporary challenges.

The study of different Indian languages plays a crucial role in understanding and preserving the Indian knowledge system as envisioned in the new education policy. Access to original sources scripts and text can be made easy. Many Indian knowledge systems such as ayurveda, yoga, philosophy astronomy and arts are documented in classical languages like sanskrit languages and therefore allows access to original text without relying on translations. Local languages like Telugu, Kannada, Gujarati and others hold region specific wisdom in folk traditions, agriculture and crafts. Many traditional practices and folklores are transmitted orally in local dialects. Learning these languages ensures their preservation and prevents cultural erosion.

Understanding the language allows for grasping cultural nuances, idioms and metaphors embedded in traditional knowledge. The meaning and essence of many traditional concepts, rituals or practices are better appreciated in their original linguistic context. Indian languages often include historical records, poetry and inscriptions that provide insights into the evolution of science, technology and culture. Language studies can be linked with other fields like archaeology, anthropology and sociology for a comprehensive understanding of Indian knowledge system. Proficiency in local languages facilitates communication with traditional practitioners, artisans and elders, enabling the documentation and validation of their knowledge. Recognizing the importance of local languages gives value to indigenous wisdom and supports its integration into formal education.

Knowledge from one language can be translated into others promoting inclusivity and wider accessibility. Multilingual initiatives can preserve texts, stories and knowledge systems for future generations. Linguistic studies can lead to the rediscovery of forgotten knowledge systems including ancient technologies, medicinal practices and governance methods. Languages help reinterpret traditional knowledge to address contemporary challenges such as sustainable development and mental wellbeing.

Promoting linguistic diversity fosters mutual respect among communities and highlights the interconnectedness of India's knowledge systems across regions. By integrating the study of Indian languages into higher education the new education policy can unlock the vast potential of Indian knowledge system ensuring their preservation, adaptation and relevance in the modern world.

To include ethical and holistic learning in the new education policy we can focus on developing a well rounded curriculum and approach that nurtures values, character and social economic development. The key strategies should include -incorporating ethics and values in curriculum, emphasizing social emotional learning, experiential learning for holistic development, teacher training and sensitization, promoting indigenous knowledge systems and spiritual wisdom, creating inclusive educational policies, assessment of holistic growth, collaborating with stakeholders. Dedicated courses on ethics, morality and values at all education levels should be introduced. Use stories case studies and real life examples to teach empathy, integrity and respect for diversity. Topics like environmental ethics, social justice and global citizenship should be introduced in the policy. Skills like emotional intelligence, self awareness, conflict resolution and teamwork. Meditation, mindfulness and stress management practices to promote mental wellbeing. Encourage peer group activities and discussions on managing emotions and relationships.

Project based learning that involves real world ethical dilemmas should be promoted. Community service programs that allow students to engage with societal challenges must be introduced. Opportunities for internships and apprenticeships with organizations that emphasize ethical practices should be provided. Train educators to model and integrate ethical practices in their teaching methods, organize workshops for teachers on fostering holistic learning environments, encourage teachers to evaluate students not just academically but also on their ethical behaviour and social skills. Revive teachings from Indian and global philosophies that emphasize holistic growth, incorporate yoga, meditation and cultural heritage into the curriculum, foster respect for all living beings and the environment. Design curricula that accommodate diverse learning styles and cultural backgrounds. Ensure that education promotes gender equality, inclusivity and the rights of marginalized communities. Use multilingual and multicultural approaches to celebrate diversity. Shift from exam centric assessment to evaluating overall

development including ethics and values. Engage parents, community leaders and NGO's in promoting ethical and holistic education, encourage partnerships between schools, universities and industries for real world applications. Integrating these measures will ensure that the new education policy not only focuses on academic excellence but also builds ethically grounded and well rounded individuals.

Incorporating Indian Knowledge System into the new education policy presents several challenges despite its potential to enrich education. Some of the major challenges include:

- **Integration into the modern curriculum** which includes relevance, standardization, interdisciplinary approach. Balancing traditional knowledge with modern globally competitive education. Indian knowledge systems are vast and diverse, making it difficult to standardize them for educational purposes. Integrating IKS with existing disciplines like science, mathematics and technology requires innovative approaches.
- **Limited documentation and research** which includes fragmented knowledge and lack of research. Many aspects of Indian knowledge system are orally transmitted leading to gaps in documentation. Insufficient scholarly work on Indian knowledge system to make it suitable for inclusion in formal education systems.
- **Teacher training and resources** which includes inadequate expertise and resource development. Teachers may lack the knowledge or training to teach Indian knowledge systems effectively. Developing textbooks, digital content and teaching aids for Indian knowledge system is a time consuming process.
- **Perception and acceptance** which includes modern bias and resistance to change. A perception that Indian knowledge system is outdated or irrelevant as compared to western knowledge systems. Students, parents and educators might resist the inclusion of Indian knowledge system due to unfamiliarity or preconceived notions.
- **Policy and Implementation challenges** which includes diverse interpretations, lack of clear guidelines and funding constraints. The interpretation of Indian knowledge systems varies across regions and communities, complicating its

inclusion. New education policy provides broad recommendations but detailed guidelines for incorporating Indian knowledge system are still evolving. Additional resources are needed to research, develop and integrate Indian knowledge system into curriculum.

- **Global competitiveness** which includes harmonization with global standards and balancing tradition and modernity. Ensuring that the inclusion of Indian knowledge system does not hinder students ability to compete on global platforms. Maintaining a balance between traditional Indian knowledge and contemporary global needs.
- **Cultural sensitivity and diversity** which includes regional differences and secular framework. India's cultural and linguistic diversity makes it challenging to represent all knowledge systems equally. Incorporating Indian knowledge system while maintaining a secular educational framework can be complex.

These challenges can be dealt with by focusing on the following possible solutions which can help in the monitoring of the success of the new education policy. Prioritise extensive research and documentation of the Indian knowledge system, introduce specialized training programs for educators, conduct campaigns to educate the public on the value of Indian knowledge system, start with pilot projects in selected institutions to evaluate the effectiveness of Indian knowledge system integration. By addressing these challenges the new education policy can create a holistic and inclusive educational framework that honors India's rich intellectual heritage.

#### References :

1. Ghosh. A. [2015] Traditional knowledge; Problems and Prospects. Lokodarpn - A bilingual annual research journal of folklore, 5
2. Indian knowledge systems January 2, 2024. <https://iksindia.org/>
3. National education policy 2020 january 3 2024 [https://www.education.gov.in/sites/upload\\_files/mhrd/files/NEPfinal\\_English\\_0.pdf](https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEPfinal_English_0.pdf).



## भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला सशक्तिकरण

श्रीमती उषा जैन

भारत में ही नहीं वरन संपूर्ण विश्व में महिलाओं की स्थिति में तेजी से परिवर्तन हुआ है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी योग्यता दक्षता साबित की है। दुनिया भर में कुछ ऐसा माहौल बना हुआ है कि जैसे सारे संसाधन महिला विकास को ही समर्पित हैं। इस विषय पर कई संगोष्ठी एवं कार्यशाला भी आयोजित की जा रही हैं।

महिला आज विकास के पद पर अग्रसर है यह सच तो है, लेकिन तस्वीर का दूसरा रूप कहीं अधिक स्याह और अधिक निराशाजनक हैं। देखा जाए तो बड़े शहरों और महानगरों में ही ऊंचे पद और व्यवसाय में महिलाओं की भागीदारी है लेकिन ग्रामीण अंचल में महिलाओं की तस्वीर दूसरी है। ग्रामीण अंचलों में कितनी प्रतिकूल परिस्थितियों में महिलाओं को काम करना पड़ता है और प्रत्येक स्तर पर भेदभाव एवं शोषण का शिकार होना पड़ता है तो कैसे कहा जा सकता है कि महिलाओं का विकास हो रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महिलाओं को शक्ति संपन्न बनाने के लिए शिक्षा पद्धति द्वारा ठोस भूमिका निभाई जा रही है। नए पाठ्यक्रमों, पाठ्य पुस्तकों, शिक्षकों एवं शिक्षा संसाधनों के द्वारा महिला सशक्तिकरण हेतु नए मूल्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। शिक्षा को महिलाओं के स्तर में सुधार लाने हेतु एक साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है ताकि प्राचीन काल से चली आ रही विकृत परंपराओं को समाप्त कर महिलाओं

को सुविचारित समर्थन दिया जा सके।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने एवं महिला निरक्षरता को दूर करने का काम सर्वोच्च प्राथमिक के स्तर पर किया गया।

भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका मां और पत्नी के रूप में महत्वपूर्ण होती है। निर्धन परिवार में महिलाओं को परिवार की आय में योगदान देना पड़ता है। कभी-कभी तो वह पुरुषों की अपेक्षा अधिक योगदान करती है। वास्तव में दिन प्रतिदिन अपने जीवन में गति देने के प्रयास में महिलाएं अपनी सामाजिक भूमिका को भूल जाती हैं। शिक्षा के अभाव में उन्हें सामाजिक परिवर्तनों का बोध नहीं होता और आत्मविश्वास की कमी के चलते किसी भी निर्णय प्रक्रिया में शामिल नहीं हो पाती। इसलिए ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अभी भी दयनीय है। आज जरूरत है महिला अपनी शक्ति को पहचाने तो वह किसी भी समाज के सामने हेय नहीं मानी जाएगी। इसके लिए आवश्यकता है इस बात की अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान की रोशनी फैलाने की चाहे वो करोड़ों नहीं एक ही हो वह अंधेरे से लड़कर उजाला लाएंगी।

महिलाओं का विकास तो हो रहा है परंतु यह विकास कुछ महिलाओं के हिस्से में आया है अधिकांश ग्रामीण महिलाएं तो विकास के मायने ही नहीं जानती। सुबह-शाम भरपेट भोजन ही मिल जाना उनके लिए विकास है। विकास के मापदंड तो महिला श्रमिकों के लिए स्वप्निल स्वप्न भर है।

वैदिक काल में समाज के साथ-साथ राजनीति में भी महिलाओं की भागीदारी थी। वैदिक साहित्य से पता चलता है कि सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हुआ करती थी। उस समय राजनीतिक संगठन 'विद्ध' था जिसमें पुरुषों के साथ महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त थे। उत्तर वैदिक काल में महिलाओं को राजनीतिक स्थिति में कुछ गिरावट आई। महिलाओं को वैदिक साहित्य पढ़ने से रोक दिया गया और 'विद्ध' में उनका प्रवेश निषेध कर दिया गया। मगध कल में महिलाओं की स्थिति फिर सुधरी जिसके लिए बौद्ध और जैन धर्म को श्रेय दिया जा सकता है। उस समय भारत मुस्लिम प्रभुत्व में था लेकिन बामपंथी माहौल के बाद रजिया दिल्ली और सल्तनत की पहली और अंतिम सुलतान बनी।



वर्तमान में समूची दुनिया में आज महिला आंदोलनों का शोर है उन्हें विभिन्न अधिकार दिए जाने की बात जोर-शोर से की जा रही है लेकिन पुरुषों की तुलना में महिलाओं की राजनीति में न तो प्रभावी उपस्थिति है और न ही सत्ता में भागीदारी। कॉफी महिलाएँ फाइनैशली इंडिपेंडेंट हो चुकी हैं लेकिन राजनीतिक रूप से पुरुष रिश्तेदारों पर डिपेंडेंट हैं। उनके द्वारा लिए जाने वाले राजनीति फैसलों के पीछे किसी ओर की सोच, किसी ओर के ही विचार होते हैं वे तो मात्र कठपुतलियों की तरह दूसरों के इशारों पर नाचती हैं। महिलाओं में जागरूकता की कमी होने के कारण ही वे राजनीतिक रूप से निर्बल हैं क्योंकि अधिकार छीनने की चीज है मांगने की नहीं।

नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. अमर्त्य सेन के अनुसार “यदि अधिकारों का विस्तार कर दिया जाए तो विकास अपने आप हो जाएगा। विकास के लिए अधिकार प्राथमिक जरूरत है जब भारतीय महिलाओं को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अधिकार मिल जाएंगे तो वे स्वतः ही विकास के रास्ते पर चल पड़ेंगी। और ये अधिकार महिलाओं को किसी दया या सहानुभूति के तहत नहीं चाहिए क्योंकि संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि अधिकार प्रत्येक नागरिक को उपलब्ध करवाना राज्य का कर्तव्य है।”

**सरकारी प्रयास में महिलाएँ**—वर्तमान में भारत सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा संचालित महिलाओं के लिए अधिक से अधिक योजनाएं हैं। इन योजनाओं में महिला सशक्तिकरण विशेष घटक है।

### योजनाएँ—

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
2. कार्यकारी महिला छात्रावास
3. वन स्टॉप सेंटर योजना
4. महिला हेल्पलाइन योजना
5. महिला ई-हाट
6. महिला पुलिस स्वयंसेवक
7. महिलाओं के लिए प्रशिक्षण रोजगार योजना
8. स्वाधार ग्रह

9. मातृत्व लाभ कार्यक्रम
10. नारी शक्ति पुरस्कार
11. महिला उद्योग योजना
12. बेटी बचाओ (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)
13. लाड़ली लक्ष्मी (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)
14. बालिका शिक्षा प्रोत्साहन (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)
15. गांव की बेटी योजना (मध्य प्रदेश के संदर्भ में)

### प्राचीन काल में महिला सशक्तिकरण

प्राचीन काल में महिलाओं को बहुत ही आदर सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। प्राचीन साहित्य वेद उपनिषद धर्मशास्त्र में महिलाओं को प्रतिष्ठित स्थान दिया गया है मनुस्मृति में तो यहां तक कहा गया कि जिन परिवारों में महिलाओं को दुख दिया जाता है वह परिवार समाप्त प्राय हो जाएंगे। तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालय में महिलाओं को संगीत, नृत्य कला में शिक्षित किया जाता था रामायण में कहा गया कि महिलाओं का हृदय नुकीले उस्तरे की तरह होता था क्योंकि महिलाओं की वास्तविक भावनाओं को कोई नहीं समझता। हालांकि महाभारत में 'द्रोपती वस्त्र अपहरण' महिलाओं के लिए अनादर का प्रतीक है। वैदिक काल में नारी की स्थिति अच्छी थी। स्त्रियों को पुरुषों के समान धार्मिक स्थिति प्राप्त थी विशेष रूप से वैदिक शिक्षा एवं अध्ययन में। वैदिक काल में तो बहुत विदुषी महिलाओं का उल्लेख भी मिलता है।

हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि वैदिक काल में महिलाएं बहुत ही मजबूत शय पर थी फिर भी महिलाओं की समग्र स्थिति का मूल्यांकन किया जाए तो वह पुरुषों से कम थी।

निष्कर्षतः नई शिक्षा नीति में महिला विकास से संबंधित सक्रिय कार्यक्रम शुरू किया जाना अत्यंत आवश्यक है। महिला साक्षरता हेतु सर्वोच्च प्राथमिकता के स्तर पर काम किया जाना चाहिए। साथ ही उन रूकावटों बाधाओं को दूर करने का प्रयास करना चाहिए जिनके कारण महिलाएं शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती।

भारतीय महिलाओं को आज अधिकार दिए जाने की जरूरत है जब इन्हें राजनीतिक, सामाजिक अधिकार मिल जाएंगे तो स्वतः ही विकास के रास्ते पर चल पड़ेंगी।

“आधी दुनिया” को विकास से महरूम रखकर विकास का सपना देखना महज एक बेवकूफी ही है।

### संदर्भ पुस्तकें

1. महिला विकास : एक परि श्य
2. महिला सशक्तिकरण



## Historical Significance and Legacy of Indian Knowledge System

Dr. Bindu Sharma

---

The Indian Knowledge System (IKS) encompasses a vast array of disciplines, including philosophy, science, medicine, mathematics, and the arts, developed over millennia. Its historical significance and enduring legacy have profoundly influenced both Indian society and the broader global community.

### Historical Significance

- **Philosophy and Ethics:** Ancient Indian texts, such as the Vedas and Upanishads, delve into profound philosophical inquiries concerning existence, consciousness, and ethics. These works have shaped Indian cultural and spiritual practices and have attracted global scholarly interest.
- **Science and Mathematics:** Indian scholars made groundbreaking contributions to various scientific fields. For instance, the concept of zero as a numeral and the decimal system originated in India, revolutionizing mathematics. Additionally, ancient Indian astronomers made significant discoveries about celestial bodies, enhancing the global understanding of astronomy.

- **Medicine:** The Ayurvedic system, documented in texts like the Sushruta Samhita, laid the foundation for medical practices in India. Sushruta, often referred to as the “Father of Surgery,” described numerous surgical procedures, including cataract surgery and rhinoplasty, centuries before similar practices emerged elsewhere.

### Legacy

- **Educational Influence:** The traditional Indian education system emphasized holistic development, integrating physical, mental, and spiritual growth. This approach has inspired contemporary educational philosophies that advocate for well-rounded student development.
- **Cultural Identity:** Preserving and understanding the Indian Knowledge System fosters a strong cultural identity, facilitating intercultural communication and enhancing global perspectives across various fields.
- **Modern Relevance:** Many principles from the Indian Knowledge System, such as holistic health approaches and sustainable living practices, are gaining renewed interest in today’s world, offering solutions to contemporary societal challenges.

### History of Indian Knowledge System

The history of the Indian Knowledge System (IKS) is vast and multifaceted, encompassing various fields like philosophy, science, medicine, mathematics, arts, and governance. Rooted in ancient traditions, IKS reflects the intellectual, spiritual, and scientific pursuits of Indian civilization over millennia.

#### 1. Vedic Period (1500 BCE – 600 BCE)

- **Foundation of Knowledge :** The Vedic period marks the genesis of the Indian Knowledge System with the composition

of the four Vedas—**Rigveda, Yajurveda, Samaveda, and Atharvaveda**—which are among the oldest texts of human history.

- ❖ **Rigveda:** Focuses on cosmology and hymns.
- ❖ **Yajurveda:** Discusses rituals and sacrifices.
- ❖ **Samaveda:** Concerns music and chants.
- ❖ **Atharvaveda:** Includes knowledge of medicine and daily life practices.
- **Philosophical Insights:** The Upanishads, composed during this period, introduced profound metaphysical concepts like **Brahman** (universal consciousness) and **Atman** (individual soul), forming the bedrock of Indian philosophy.

## 2. Classical Period (600 BCE – 500 CE)

- **Philosophy and Ethics :** The development of six classical schools of philosophy (Darshanas)—**Nyaya, Vaisheshika, Samkhya, Yoga, Mimamsa, and Vedanta**—offered systematic approaches to understanding existence, ethics, and liberation.
- **Scientific Advancements:**
  - ❖ **Mathematics and Astronomy:**
    - ❑ **Aryabhata** (5th century CE) introduced the concept of zero and approximated the value of pi.
    - ❑ Indian astronomers developed advanced planetary models and calculated the Earth's circumference.
  - ❖ **Medicine:**
    - ❑ Texts like the **Charaka Samhita** and **Sushruta Samhita** laid the foundations of Ayurveda, emphasizing holistic health, surgery, and pharmacology.

- **Languages and Literature :** The period saw the flourishing of Sanskrit literature, including **epics like Mahabharata and Ramayana** and dramatic works by authors like **Kalidasa**.

### 3. Medieval Period (500 CE – 1500 CE)

- **Educational Institutions:**
  - ❖ **Nalanda, Takshashila, Vikramashila, and Vallabhi** were renowned centers of learning, attracting students from across Asia.
  - ❖ These universities covered diverse disciplines, including grammar, logic, medicine, astronomy, and fine arts.
- **Mathematics and Astronomy:**
  - ❖ Mathematicians like **Brahmagupta** furthered algebra and arithmetic, introducing rules for operations on zero and negative numbers.
  - ❖ Astronomers like **Varahamihira** contributed to the understanding of planetary movements and eclipses.
- **Development of Regional Knowledge :** Indian knowledge systems began interacting with global cultures through trade and conquests, influencing and being influenced by Greek, Persian, and Chinese ideas.

### 4. Colonial Period (1500 CE – 1947 CE)

- **Systematic Documentation :** Colonial administrators and scholars like William Jones and Max Müller translated and documented Indian texts, albeit often through a Eurocentric lens.
- **Suppression and Revival :** Colonial policies undermined indigenous education systems, replacing them with Western models. However, reformers like **Swami Vivekananda, Mahatma Gandhi, and Rabindranath Tagore** emphasized the importance of preserving and reviving Indian traditions.

### 5. Modern Period (Post-1947)

- **Resurgence of Interest** : Post-independence India witnessed renewed efforts to integrate IKS into modern education and research, recognizing its relevance in areas like sustainable development, holistic health, and environmental conservation.
- **Global Influence** : Principles from the Indian Knowledge System, such as yoga, meditation, and Ayurveda, have gained global acceptance and continue to contribute to contemporary science and wellness.

### Key Fields of Indian Knowledge System

1. **Philosophy**: Ethics, metaphysics, and logic.
2. **Mathematics and Astronomy**: Decimal system, zero, trigonometry, and astronomy.
3. **Medicine**: Ayurveda and surgery.
4. **Linguistics**: Grammar and phonetics (Panini's grammar).
5. **Arts**: Music, dance, and architecture.
6. **Governance**: Arthashastra by Chanakya on statecraft and economy.

### Legacy of IKS

The Indian Knowledge System represents an enduring tradition that blends practical, scientific, and spiritual insights. It continues to inspire global advancements in fields like philosophy, healthcare, environmental science, and education.

### Importance of Indian knowledge system in India and the World

The **Indian Knowledge System (IKS)** holds immense significance, both for India and the world, as it embodies a repository of ancient wisdom, holistic practices, and innovative approaches to various fields of life. Its relevance extends across disciplines like philosophy, science, medicine, governance, and arts, offering insights and solutions that address contemporary challenges.



## Importance of Indian Knowledge System in India

### 1. Cultural Identity and Heritage

- ❖ IKS forms the bedrock of India's cultural and civilizational identity.
- ❖ Preserving this knowledge reinforces India's unique heritage and strengthens the collective national identity.

### 2. Holistic Education

- ❖ IKS promotes a balanced development of the physical, mental, and spiritual dimensions of individuals.
- ❖ Ancient systems like the **Gurukul system** emphasized personalized and value-based learning, aligning well with modern educational reforms.

### 3. Sustainable Development

- ❖ Traditional Indian practices in agriculture (e.g., organic farming, water management) and architecture (e.g., vastu shastra, climate-responsive designs) offer sustainable solutions.
- ❖ These practices align with global Sustainable Development Goals (SDGs).

### 4. Healthcare and Wellness

- ❖ Ayurveda and yoga, integral parts of IKS, provide holistic approaches to health, emphasizing prevention and well-being.
- ❖ India's leadership in promoting **International Yoga Day** underscores its global relevance.

### 5. Spiritual and Ethical Framework

- ❖ IKS emphasizes the interconnectedness of all life forms, fostering values like compassion, non-violence, and harmony.
- ❖ Philosophies from the Bhagavad Gita and Upanishads inspire ethical governance and personal growth.

## Importance of Indian Knowledge System in the World

### 1. Global Philosophical Contributions

- ❖ The ideas of **karma, dharma, moksha**, and the concept of interconnectedness resonate globally in areas like ethics, psychology, and spirituality.
- ❖ Thinkers like Schopenhauer and Emerson drew inspiration from Indian philosophy.

### 2. Scientific Innovations and Applications

- ❖ Indian mathematical concepts, such as the decimal system and the concept of zero, revolutionized global mathematics.
- ❖ Ancient astronomical texts influenced later developments in Europe and the Middle East.

### 3. Holistic Health Practices

- ❖ Ayurveda and yoga have become widely recognized for their effectiveness in promoting physical and mental health.
- ❖ The global wellness industry extensively incorporates these systems for stress management, fitness, and chronic disease prevention.

### 4. Environmental Wisdom

- ❖ Traditional Indian practices advocate harmony with nature, offering solutions for ecological conservation and sustainable living.
- ❖ Techniques like rainwater harvesting, crop rotation, and biodiversity conservation are gaining attention worldwide.

### 5. Cross-Cultural Dialogue

- ❖ IKS fosters intercultural exchange and understanding by showcasing India's rich intellectual heritage.
- ❖ It contributes to dialogues on shared global challenges, such as climate change, peace-building, and ethical governance.

## 6. Art and Literature

- ❖ Indian art forms, classical music, dance, and storytelling (like the epics Mahabharata and Ramayana) have enriched global art and literature.
- ❖ Techniques from Indian sculpture and architecture have influenced international art styles.

## Relevance in Modern Context

### 1. Interdisciplinary Approaches:

- ❖ IKS combines science, spirituality, and philosophy, offering integrated approaches to solve modern problems.
- ❖ For instance, Ayurveda blends traditional knowledge with modern biomedical research.

### 2. Policy and Governance:

- ❖ Texts like **Arthashastra** provide timeless lessons in statecraft, economics, and governance, relevant to modern political and economic challenges.

### 3. Global Wellness Movement:

- ❖ Yoga, meditation, and mindfulness practices rooted in IKS have become essential tools for mental health and self-care worldwide.

### 4. Knowledge Sharing:

- ❖ The universal values of IKS foster global unity and inspire a vision for a harmonious and inclusive future.

## Importance of Indian knowledge system

The **Indian Knowledge System (IKS)** is a profound and comprehensive intellectual tradition that encompasses a wide range of disciplines, including science, medicine, philosophy, arts, and governance. Its importance lies in its timeless relevance, holistic perspective, and contributions to both India and the global community.

## Importance of Indian Knowledge System

### 1. Preservation of Cultural Heritage

- IKS is a cornerstone of India's ancient civilization and cultural identity.
- Texts like the Vedas, Upanishads, and epics like Mahabharata and Ramayana carry timeless wisdom, values, and traditions.
- It serves as a bridge to connect modern generations with India's historical and cultural legacy.

### 2. Holistic Approach to Life

- Indian Knowledge System integrates physical, mental, and spiritual dimensions of existence.
- Practices like **yoga**, **meditation**, and **Ayurveda** emphasize harmony between the individual and the universe, fostering well-being and balance.

### 3. Contributions to Science and Mathematics

- IKS has significantly advanced global scientific knowledge:
  - ❑ Introduction of **zero**, **decimal system**, and principles of **geometry and algebra**.
  - ❑ **Astronomy** and calculations by ancient scholars like Aryabhata and Brahmagupta laid the groundwork for modern sciences.
- Such contributions have shaped the evolution of technology and innovation.

### 4. Sustainable Development and Environmental Practices

- Indian traditions emphasize sustainable living and ecological balance.
  - ❑ Practices like **organic farming**, **rainwater harvesting**, and **biodiversity preservation** are rooted in ancient Indian knowledge.

- These are increasingly relevant in addressing modern challenges like climate change and environmental degradation.

#### 5. Health and Wellness

- Ayurveda and Siddha systems offer holistic health solutions that focus on prevention and cure.
- The global popularity of **yoga** and **meditation** reflects the effectiveness of IKS in promoting physical and mental health.

#### 6. Ethical Governance and Philosophy

- Texts like **Arthashastra** by Chanakya provide insights into governance, diplomacy, and economics.
- Philosophical principles such as **dharma (duty)** and **ahimsa (non-violence)** offer ethical frameworks for personal and societal development.

#### 7. Universal Relevance

- Concepts like **karma**, **moksha**, and **dharma** resonate universally, influencing global thought and spirituality.
- Indian philosophies have shaped modern disciplines like psychology, sociology, and ethics.

#### 8. Revitalizing Education

- The ancient **gurukul system** focused on personalized, value-based education and holistic learning.
- Integration of IKS into modern education systems fosters creativity, critical thinking, and a deep understanding of nature and society.

#### 9. Strengthening Global Influence

- The dissemination of Indian knowledge practices, such as yoga and Ayurveda, strengthens India's global soft power.
- It contributes to intercultural dialogue, showcasing India's intellectual contributions to the world.

### 10. Addressing Modern Challenges

- IKS offers solutions to contemporary issues like stress, lifestyle diseases, environmental degradation, and societal disconnection.
- Sustainable agricultural practices, traditional water management, and community-centric living provide practical models for global adoption.

**Conclusion :** The Indian Knowledge System is a treasure trove of intellectual, cultural, and spiritual wisdom. Its holistic principles and innovative practices continue to inspire and benefit humanity. By preserving and promoting this knowledge, we can address modern challenges while fostering a deeper connection between tradition and innovation, benefiting both India and the global community. The Indian Knowledge System is not just an artifact of the past; it is a living tradition that continues to inspire innovation, sustainability, and well-being. For India, it is a source of pride and a tool for national rejuvenation. For the world, it offers a timeless treasure trove of wisdom and practical solutions to some of humanity's most pressing challenges. In conclusion, the Indian Knowledge System's historical significance and legacy are evident in its profound contributions to various fields of knowledge and its enduring influence on both Indian and global cultures.



## भारतीय ज्ञान परंपरा मे परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन

डॉ. शैलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

**भारत के संदर्भ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से वर्तमान तक यात्रा  
भारतीय ज्ञान परम्परा में परीक्षा व्यवस्था**

भारतीय ज्ञान परम्परा की परीक्षा पद्धतियों, उनकी विशेषताओं, और उनके ऐतिहासिक संदर्भों का विस्तृत विश्लेषण इसमें गुरुकुल और आश्रम पद्धति से लेकर आज की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के समांतर के विकास पर प्रकाश डाला जाएगा। इसके साथ ही, परीक्षा की पारंपरिक विधियों, जैसे मौखिक परीक्षा शास्त्रार्थ, और अन्य वैकल्पिक तरीकों का विवेचन भारतीय ज्ञान परम्परा और वैदिक शिक्षा अत्यंत प्राचीन और गहन है। इसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित कर वर्तमान परीक्षा प्रणाली को और प्रभावी बनाया जा सकता है। निम्नलिखित बिंदुओं में इसका विवरण दिया गया है।

**आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा का समावेश**

वैदिक परंपरा वैदिक शिक्षा में आध्यात्मिकता और नैतिकता को अत्यधिक महत्व दिया गया था। व्यक्ति के मन बुद्धि और आत्मा के विकास पर ध्यान दिया जाता था।

आधुनिक प्रयोग नैतिक शिक्षा को परीक्षा प्रणाली का अनिवार्य हिस्सा बनाया जा सकता है, जिसमें छात्रों को नैतिक मूल्यों ईमानदारी, सत्य और सहानुभूति जैसे गुणों का आकलन किया जा सके।

### स्वाध्याय, स्वयं अध्ययन, और चिंतनशील शिक्षा

वैदिक परंपरा गुरुकुल में विद्यार्थियों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया जाता था। शिक्षक का काम केवल मार्गदर्शन करना होता था। जबकि छात्र को ज्ञान अर्जित करने के लिए स्वयं मेहनत करनी पड़ती थी। आधुनिक प्रयोग परीक्षा प्रणाली में स्वाध्याय और अनुसंधान आधारित परियोजनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है, जिसमें छात्रों के सोचने समझने की क्षमता का मूल्यांकन हो।

### व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार शिक्षा

वैदिक परंपरा वैदिक शिक्षा में विद्यार्थियों की रुचि क्षमता और स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार शिक्षा दी जाती थी।

आधुनिक प्रयोग आधुनिक परीक्षा प्रणाली में छात्रों की विभिन्न क्षमताओं, जैसे तर्कशक्ति, रचनात्मकता, या शारीरिक कौशल के अनुसार परीक्षा प्रारूप बनाए जा सकते हैं, ताकि छात्रों का समग्र मूल्यांकन हो सके।

### योग और ध्यान का समावेश

वैदिक परंपरा योग और ध्यान वैदिक शिक्षा का अभिन्न हिस्सा थे, जिससे शारीरिक और मानसिक संतुलन और अनुशासन का विकास होता था।

आधुनिक प्रयोग परीक्षा से पहले योग और ध्यान को अभ्यास में लाने से छात्रों का तनाव कम हो सकता है और वे मानसिक रूप से परीक्षा के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकते हैं। इसे परीक्षा प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जा सकता है।

### अनुभवजन्य शिक्षा

वैदिक परंपरा वैदिक शिक्षा में अनुभवजन्य शिक्षा पद्धति का प्रयोग होता था। ज्ञान को केवल पुस्तकों से नहीं बल्कि व्यावहारिक जीवन में उतारने पर जोर था।

आधुनिक प्रयोग आज की परीक्षा प्रणाली में भी केवल लिखित परीक्षा के बजाय छात्रों को व्यावहारिक अनुभव और वास्तविक दुनिया की समस्याओं का समाधान करने पर आधारित परीक्षाएं दी जा सकती हैं शाब्दिक ज्ञान के बजाय समझ पर जोर

वैदिक परंपरा वैदिक काल में विद्यार्थियों को शाब्दिक ज्ञान के बजाय विषय की गहरी समझ विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता था।



आधुनिक प्रयोग परीक्षा प्रणाली को इस प्रकार से संशोधित किया जा सकता है कि छात्रों की केवल रटने की क्षमता का मूल्यांकन न होर बल्कि उनकी समझ और अवधारणाओं पर ध्यान दिया जाए।

### प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा

‘वैदिक परंपरा’ शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग था कि यह प्राकृतिक वातावरण में दी जाती थी, जिससे विद्यार्थी का मानसिक और शारीरिक विकास स्वाभाविक रूप से होता था।

आधुनिक प्रयोग परीक्षा प्रक्रिया को प्रकृति से छेड़ने के प्रयास किए जा सकते हैं, जैसे कि आउटडोर लर्निंग या प्रकृति से जुड़े प्रोजेक्ट्स।

### गुणात्मक और रचनात्मक आकलन

वैदिक परंपरा वैदिक शिक्षा में गुणात्मक विकास पर ध्यान दिया जाता था। हर विद्यार्थी का मूल्यांकन उसकी रचनात्मकता, मानसिक विकास और समाजिक योगदान के आधार पर होता था।

आधुनिक प्रयोग परीक्षा प्रणाली में रचनात्मकता, समस्या सुलझाने की क्षमता और व्यावहारिक ज्ञान को भी शामिल किया जा सकता है, ताकि छात्रों का गुणात्मक आकलन हो सके।

### ज्ञान का जीवन में उपयोग

वैदिक परंपरा वैदिक शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान को जीवन में उतारना था, न कि केवल परीक्षा पास करना।

आधुनिक प्रयोग छात्रों को ऐसी परीक्षाओं का सामना करवाया जा सकता है जिनमें वे जीवन में शिक्षा के वास्तविक उपयोग का प्रदर्शन करें। उदाहरण के लिए सामाजिक सेवा के माध्यम से परीक्षा प्रणाली में उनके योगदान का मूल्यांकन किया जा सकता है।

इन बिंदुओं के माध्यम से वैदिक शिक्षा की पुरातन परंपराओं को आधुनिक शिक्षा प्रणाली और परीक्षा प्रणाली में प्रभावी ढंग से समाहित किया जा सकता है। जिससे शिक्षा अधिक समग्र उपयोगी, और जीवनोपयोगी हो

वैदिक शिक्षा प्रणाली में परीक्षा का स्वरूप गहन, व्यापक, और संपूर्ण विकास पर आधारित था। इसे बेहतर ढंग से समझाने के लिए, प्रत्येक बिंदु का उदाहरण भारतीय ज्ञान परम्परा में परीक्षा की क्या भूमिका हो सकती है परीक्षा ही परिक्रमण की प्रतीक है परीक्षा का भाव और स्वभाव से लक्ष्य साध्य बनाता है

### मौखिक परीक्षा

गुरु अपने शिष्य से वेदों या शास्त्रों का कोई अंश सुनाने के लिए कहते थे। उदाहरण के तौर पर, यदि विद्यार्थी ने ऋग्वेद का अध्ययन किया होता, तो गुरु उसे ऋग्वेद के किसी सूक्त का उच्चारण करने के लिए कहते। इसके बाद गुरु उस सूक्त का अर्थ पूछते और विद्यार्थी को अपने शब्दों में समझाना होता। गुरु पूछते, “तुम मुझे गायत्री मंत्र का उच्चारण करके उसका अर्थ समझाओ।” विद्यार्थी पहले गायत्री मंत्र का सही उच्चारण करता और फिर बताता, “यह मंत्र सूर्य देवता की प्रार्थना है, जिसमें हम उनके प्रकाश से बुद्धि का विकास करने की प्रार्थना करते हैं।”

### शास्त्रार्थ

शास्त्रार्थ में दो या अधिक विद्यार्थी किसी शास्त्र के एक सिद्धांत पर चर्चा करते थे। यह चर्चा तर्कसंगत और विद्वत्तापूर्ण होती थी, जहाँ हर विद्यार्थी अपने विचार प्रस्तुत करता और शास्त्रों के आधार पर अपने विचार का समर्थन करता।

दो विद्यार्थी “धर्म क्या है?” इस विषय पर शास्त्रार्थ करते हैं। एक विद्यार्थी “धर्म वह है जो समाज और व्यक्ति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे” कहता है, और अपने तर्क के समर्थन में “मनुस्मृति” से उद्धरण प्रस्तुत करता है। दूसरा विद्यार्थी कहता है, “धर्म केवल बाहरी कर्मकांड नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक स्वभाव और आचरण में निहित है,” और वह गीता के श्लोक का उदाहरण देता है।

### आचरण आधारित मूल्यांकन

विद्यार्थी के दैनिक आचरण और जीवनशैली का मूल्यांकन किया जाता था। यह देखा जाता था कि क्या विद्यार्थी सत्य बोलने, ईमानदारी रखने, और दूसरों की सेवा करने के गुणों का पालन करता है।

एक विद्यार्थी प्रतिदिन अपने साथियों और गुरुओं के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करता है, समय पर उठता है, नियमपूर्वक ध्यान करता है, और परिश्रम से अध्ययन करता

है। गुरु उसके व्यवहार से संतुष्ट होते हैं और उसे श्रेष्ठ आचरण वाला मानते हैं। परीक्षा का यह हिस्सा उसके चरित्र की परीक्षा थी।

### ध्यान और योग

विद्यार्थियों से ध्यान और योग के अभ्यास कराए जाते थे ताकि वे शारीरिक और मानसिक संतुलन को प्राप्त कर सकें। इसका उद्देश्य उनके आत्मनियंत्रण और मानसिक स्थिरता का परीक्षण करना था।

एक विद्यार्थी से एक निश्चित अवधि तक पद्मासन में ध्यान करने के लिए कहा जाता है। गुरु यह जांचते हैं कि विद्यार्थी बिना विचलित हुए कितनी देर तक ध्यान कर सकता है। ध्यान के बाद गुरु उससे पूछते हैं, “तुम्हें ध्यान के दौरान क्या अनुभव हुआ? विद्यार्थी बताता है, मैंने मानसिक शांति और गहरे आत्मचिंतन का अनुभव किया। इस तरह उसके ध्यान की क्षमता की परीक्षा होती है।”

### व्यावहारिक ज्ञान

विद्यार्थियों से यज्ञ, अनुष्ठान, और अन्य धार्मिक कृत्यों में भाग लेने की अपेक्षा की जाती थी। यह उनके शास्त्रीय ज्ञान के वास्तविक जीवन में प्रयोग की परीक्षा थी।

एक विद्यार्थी को यज्ञ कराने की जिम्मेदारी दी जाती है। वह यज्ञ की पूरी प्रक्रिया का पालन करता है, जैसे कि मंत्रों का सही उच्चारण, अग्नि की स्थापना, और अनुष्ठान के नियमों का पालन। गुरु उसके प्रदर्शन को देखते हैं और उसकी जानकारी और व्यावहारिक कौशल का मूल्यांकन करते हैं।

### समग्र मूल्यांकन

शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं था। विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व, जैसे उनका शारीरिक स्वास्थ्य, नैतिकता, और आध्यात्मिक उन्नति का मूल्यांकन किया जाता था।

एक विद्यार्थी पढ़ाई में तो उत्कृष्ट है, लेकिन यदि उसका आचरण असंतोषजनक होता है, जैसे कि वह असभ्य है या दूसरों के प्रति असहिष्णु है, तो उसे उच्च अंक नहीं दिए जाते थे। उसके संपूर्ण विकास को देखा जाता था, जिसमें उसका आचार, व्यवहार, और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियां भी शामिल होती थीं।

### निष्कर्ष

वैदिक शिक्षा प्रणाली में परीक्षा केवल सैद्धांतिक जानकारी का आकलन नहीं थी, बल्कि जीवन के हर पहलू को समाहित करती थी। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को न केवल विद्वान बनाना था, बल्कि उन्हें एक सच्चा, नैतिक, और समग्र जीवन जीने वाला व्यक्ति बनाना था।

### परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन

प्राचीन भारत में एक से दूसरे पीढ़ियों तक मौखिक एवं लिपिबद्ध परंपराओं के अंतरण में हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन का अभूतपूर्व योगदान रहा है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, संचालन एवं मूल्यांकन अतिशय रूप में धार्मिक रही है जोकि निरंतर चलने वाली परंपरा एवं परिवर्तन को ज्ञान के महासागर से ज्ञान की विविध शाखाओं फैली हुई थी यद्यपि इस बात के समुचित प्रमाण मिलते हैं कि तत्समय राजकुमारों को युद्धकर्म और राज्य संचालन का भी अनेक ज्ञान कलाओं के अंतर्गत पर्याप्त प्रशिक्षण देकर उनका मूल्यांकन किया जाता था। लेकिन ज्ञान की विविध शाखाओं में औपचारिक एवं अधिकृत शिक्षा एवं मूल्यांकन गुरु शिष्य के परंपराओं के अंतर्गत सतत एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया थी। लेकिन उस समय उच्च जातियों (मुख्यतः ब्राह्मणों) को दी जाती थी उसका परीक्षण एवं मूल्यांकन के आकलन के आधार पर विभिन्न कार्यों का दायित्व सौंपा जाता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन दो धाराओं में विभक्त थी। प्रथम ब्राह्मण शिक्षा और दूसरी बौद्ध शिक्षा एवं उनका मूल्यांकन लगभग दो हजार वर्ष पूर्व भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। नालंदा और तक्षशिला स्थिति विश्वविद्यालय विश्व प्रसिद्ध ज्ञान केन्द्र हुए। एशिया के कोने-कोने से अध्येता ज्ञानार्जन के लिये यहां आते थे।

यूरोप की अपेक्षा भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थापना तुलनात्मक रूप से नयी है। 140 वर्ष पूर्व 1857 में भारत के प्रमुख बंदरगाह महानगरी कलकत्ता, मुंबई और चेन्नई एक साथ तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।

25 वर्ष पश्चात 1882 में लाहौर और 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। परन्तु उक्त भारतीय विश्वविद्यालय केवल महाविद्यालयीन शिक्षा का

नियंत्रण और समन्वय करते थे अर्थात् संबंधिता प्रदायक और परीक्षा संचालन करने वाली संस्थाएँ थी, जिनमें अपने स्तर पर अध्यापन और शोध का कार्य नहीं होता था।

वर्ष 1911-12 के आस-पास इन संबंधिता प्रदायक विश्वविद्यालयों से मोह भंग होने लगा। 1916 में स्थापित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय देश का पहला विश्वविद्यालय था जिसने विश्वविद्यालय के अनुरूप आवासी एवं शिक्षण परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन के रूप में अपनी पहचान बनाई। तत्पश्चात् मैसूर 1916, उस्मानिया 1918, अलीगढ़ 1920, लखनऊ 1921, दिल्ली 1922, नागपुर व आन्ध्र 1923, आगरा 1927 एवं अन्नामलाई 1929 विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। जिनमें केवल आन्ध्र, कानपुर और आगरा संबंधिता प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय थे। अब भारतीय विश्वविद्यालयों के स्थापना के साथ ही केन्द्रीय या राज्य विधान मंडलों द्वारा पारित अधिनियम के अंतर्गत सरकारी अनुदान एवं सरकार का नियंत्रण होता था तथा कुलपति संबंधित राज्य के राज्यपाल होते थे। और उपकुलपति तथा कार्यपरिषद् के सभी सदस्य अंग्रेजी सरकार द्वारा नामित किये जाते थे।

सन् 1920-22 के मध्य महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन के दौरान अनेक राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई जिसमें गुजरात विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ और जामिया मिलिया इस्लामिया प्रमुख थे।

शांति निकेतन में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा स्थापित विश्व भारती विश्वविद्यालय में अनेक शैक्षणिक प्रयोग जिसमें परीक्षा संचालन एवं मूल्यांकन इत्यादि किये गए।

श्री जमशेद जी टाटा ने बैंगलोर में टाटा ऑफ इंस्टीट्यूट की स्थापना की। देश की आजादी के समय हमारे पास 19 विश्वविद्यालय, 496 महाविद्यालय और 237456 छात्र थे। मध्यप्रदेश में पहला विश्वविद्यालय 1946 में सुप्रसिद्ध न्यायविद सर हरीसिंह गौर द्वारा सागर में स्थापित किया गया।

विगत 77 वर्ष में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जबरजस्त प्रगति हुई। आज देश में अनेक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हैं मध्यप्रदेश में ही विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थाएँ भी अनेक हैं।

नवीन शासकीय महाविद्यालयों में प्राचार्य कक्ष और कार्यालय की व्यवस्था किसी कार्यरत स्कूल अथवा नगर पालिका/जनपद कार्यालय के किसी तंग-अंधेरे कमरे अथवा किसी धर्मशाला में हो भी गई तो कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, उपकरणों और ग्रंथालयों को समस्या जस की तस बनी रही। गत चार दशकों में विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी है, प्राध्यापकों में मात्रात्मक बढ़ोतरी हुई है लेकिन जब संख्यात्मक और मात्रात्मक वृद्धि होती है।

पूर्व में प्राध्यापकों और विद्यार्थियों में अध्ययन और स्वाध्याय की प्रवृत्ति थी। पुस्तकालयों और वाचनालयों में उनकी गहरी संलग्नता थी लेकिन अब लगता है कि न तो विद्यार्थी की रुचि अध्ययन में है और न ही प्राध्यापकों की प्राथमिकता अध्यापन है। स्वाध्याय अब दुर्लभ हो अपवाद होता जा रहा है। ऐसे विद्यार्थी और प्राध्यापक अब लगभग उपहास के पात्र बनते जा रहे हैं, जो पढ़ने-लिखने के प्रति समर्पित हैं। आज भी निश्चय ही निष्ठावान प्राध्यापक और समर्पित विद्यार्थी मिल जायेंगे। यह आवश्यक हुआ है कि अनपातिक दृष्टि से उनकी संख्या में गिरावट आयी है, जिसके लिए कमोवेश हम सब जिम्मेदार हैं। नीति निर्धारक, राजनेता, प्रशासक, प्राध्यापक, विद्यार्थी, अभिभावक और समूचा समाज। शिक्षा नीति के प्रसंग में तदर्थवाद (एडहॉकीज्म) ऊपर से नीचे तक हावी है। राजनीतिक नेतृत्व-जिसकी प्राथमिकता सत्ता और वोट बैंक हैं, प्रशासन जिसके लिये आज भी शिक्षा एक अनावश्यक सेवा है, प्राध्यापक जिसके लिए शिक्षा मजबूरी में अपनाया गया व्यवसाय है। विद्यार्थी जिसके लिए शिक्षा सिर्फ रोजगार पाने के लिए डिग्री रूपी अनुमति पत्र है और जहाँ उसे अपना भविष्य अंधकार-मय दिखाई देता है। अभिभावक जिसकी दृष्टि में उच्च शिक्षा विवाह या रोजगार या नौकरी के मुन्तजिर अपने बच्चों के लिए समय बिताने का साधन है और पूरा समाज हो शिक्षा और शिक्षक से अधिक ऊपरी लाभ वाले पद और व्यवसाय को महत्व देता है। जिस समाज में एक शिक्षक से अधिक पटवारी, नायब तहसीलदार या दरोगा का आदर और सम्मान होता हो, वहाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक गिरावट तो आयेगी ही। दरअसल शिक्षा के क्षेत्र में लगातार गिरावट का मुद्दा पूरी व्यवस्था और सामाजिक संरचना से जुड़ा है। हम इसके लिए किसी एक ही वर्ग या समूह को कटघरे में खड़ा नहीं कर सकते।

प्रदेश ही नहीं देश के इतने सारे विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में इतने शोध और अनुसंधान हो रहे हैं, इतने पी.एच.डी. और डी.लिट. निकल रहे हैं, लेकिन उनकी सामाजिक परिणति और सार्थकता क्या है? इसलिए कि वे सब वेतन वृद्धि और पदोन्नति से जोड़ दिये गये हैं। प्राध्यापकों के लिए वे कैरियर की सीढ़ियां मात्र हैं। उनके कोई बौद्धिक नवोन्मेष या नवाचार की उत्कृष्टता नहीं है। दुर्भाग्य से हमारे विश्वविद्यालय और महाविद्यालय, हमारी सामाजिक संरचना के प्रयोजन मलक लक्ष्यों की दृष्टि से लगातार अप्रासंगिक होते जा रहे हैं।

आज विद्यार्थी का आदर्श और उसकी प्रेरणा कोई समर्पित और निष्ठावान प्राध्यापक, विद्वान या कलाकार नहीं है। समकालीन परिदृश्य में लगभग हर राजनीतिक दल की युवा-शाखाएँ, अभिभावकों के धन की कीमत पर अपने कार्यकर्ताओं की फौज या भीड़ इन विद्यार्थियों में से ही संगठित करते हैं।

महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन के समकालीन परिदृश्य पर एक वरिष्ठ साथी की टिप्पणी थी कि आजकल महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में सिवाय पढ़ने-लिखने के सब कुछ हो रहा है। जाहिर है कि जब विद्यार्थी पढ़ना नहीं चाहते तो उन्हें प्राध्यापक पढ़ायेगा कैसे? और जब प्राध्यापक पढ़ाना ही नहीं चाहते तो विद्यार्थी पढ़ेंगे कैसे?

कुल मिलाकर परिसरों का माहौल अब “अन-अकादेमिक” ही नहीं “एन्टी-अकादेमिक” होता जा रहा है। यह गिरावट प्रदेश और देश में नहीं बल्कि लगभग एक वैश्विक प्रवृत्ति है और इसकी मूल वजह कक्षाओं में हो रहे अध्यापन की प्रासंगिकता, उसकी उपादेयता और उसके स्तर में लगातार पतन है। इसमें उच्च शिक्षा विभाग ने क्या-क्या प्रयत्न नहीं किये?

हाजिरी रजिस्ट्रों की मासिक जाँच, प्राध्यापकों का रोजनामचा, हर कक्षा और विषय की हाजिरी चिट्ठें, वार्षिक परीक्षाओं के अवसर एक निश्चित प्रतिशत के नीचे उपस्थिति के लिए आर्थिक दण्ड, लेकिन सबका नतीजा-सिफर !

विद्यमान परीक्षा प्रणाली पूरी तरह अपनी प्रासंगिकता खो चुकी है। इधर इकाई और वस्तुनिष्ठ प्रश्न पद्धति से आयोजित परीक्षा में तो और भी बड़ी विसंगति आ गयी है। विद्यमान परीक्षा प्रणाली में हम विद्यार्थी के ज्ञान व तैयारी की बजाय सीमित इकाई

में सिमटे विषय के तत्कालिक स्मरण और उसके रटने की क्षमता की जांच ही तो करते हैं। फिर आजकल परीक्षा परिणामों के जल्दी से जल्दी घोषित किये जाने और तथाकथित अकादमिक कैलण्डर के परिपालन के लिए केन्द्रीकृत मूल्यांकन की जो प्रथा अपनायी जा रही है, उसमें हमारे आदरणीय मूल्यांकनकर्ता पारस्परिक होड़ में जिस आश्चर्यजनक गति से उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हैं, उसने भी विद्यमान परीक्षा प्रणाली के अंतर्विरोधों का उजागर कर दिया है। परीक्षा परिणामों के प्रतिशत में इजाफे की प्रतिस्पर्धा के प्रसंग में मुझे एक समिति की बैठक में एक माननीय सदस्य की रोचक टिप्पणी थी कि “एक विश्वविद्यालय में इस बार सिर्फ वही विद्यार्थी फेल हुए, जिन्होंने परीक्षा का आवेदन पत्र नहीं भरा था।”

परीक्षा प्रणाली में सुधार के प्रसंग में यह सुझाव कुछ अतिवादी लग सकता है, लेकिन समकालीन हालात में वही सबसे कारगर उपाय प्रतीत होता है। हमारी रोजगारोन्मुखी शिक्षा के समकालीन माहौल में जब बड़ी से बड़ी डिग्री के बावजूद लगभग हर छोटी बड़ी नौकरी के लिए “प्रवेश परीक्षाएँ” और “प्रतियोगी परीक्षाएँ” आयोजित हो रही हैं, तब विश्वविद्यालयों को अपनी परीक्षाएँ आयोजित करने का कष्ट क्यों करना चाहिए? महाविद्यालय या विश्वविद्यालय को विद्यार्थियों को सिर्फ इस आशय का एक प्रमाण-पत्र जारी करना चाहिए कि वे इस संस्था में, अमुक पाठ्यक्रम की फला कक्षा में, इस अवधि के लिए नामांकित “एनरॉल्ड” थे। जरूरी नहीं कि वे कक्षाओं में उपस्थित भी रहे हों। क्योंकि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की अपनी तैयारी के लिए अब वे कक्षाओं के अध्यापन के मोहताज नहीं हैं।

इससे बेरोजगार युवक-युवतियों को वांछित विभाग और सेवा के लिए आयोजित प्रतियोगी परीक्षा के लिए अपने स्तर पर पूरी तैयारी का मौका मिलेगा। लेकिन मुझे नहीं लगता है यह सुझाव अभी अमल में लाया जायेगा। इसकी वजह यही है कि मौजूदा परीक्षा प्रणाली में हम सबके निहित स्वार्थ हैं। प्राध्यापकों की सालाना ऊपरी आमदनी विश्वविद्यालयों को मिलने वाली फीस की भारी भरकम रकम और विद्यार्थियों के लिए परीक्षा की वैतरणी पार करने की तयशुदा आसान तरकीबें।

नये-नये महाविद्यालयों की स्थापना से हमें खुशी होनी चाहिए कि प्राध्यापकों की संख्या, हमारी अपनी प्रजाति बढ़ रही है। लेकिन भवन-विहीन, प्राचार्य-विहीन, प्राध्यापक-विहीन और यहां तक कि विद्यार्थी-विहीन इन महाविद्यालयों की विद्यमान



हास्यास्पद स्थिति के लिए हमारे नीति निर्धारकों, प्रबंधकों और प्रशासकों के और कौन जिम्मेदार है? ये लोग समझ रहे हैं कि इससे वे अधिक से अधिक लोगों को लाभांशित कर रहे हैं। जाहिर है यह उनका भ्रम है। यह संसाधनों का दुरुपयोग भी है। मसलन एक ही नगर में एक ही विषय में चार-चार महाविद्यालयों में परास्नातक कक्षाएँ शुरू करने का क्या औचित्य है? इनमें कहीं चार-पांच विद्यार्थी हैं, कहीं सिर्फ एक-दो। एक महाविद्यालय के एक विभाग में तो वर्षों से एक भी विद्यार्थी नहीं है। पूरा स्टाफ मौजूद है, लेकिन उसे बन्द करने का साहस हममें नहीं है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि परास्नातक अध्ययन के लिए महाविद्यालय नामित कर दिए जाएँ और उसे विषय के सारे विद्यार्थी वहीं पढ़ें। इसी तरह गली-गली, डगर-डगर महाविद्यालय शुरू करने की बजाय सर्व-सुविधा संपन्न महाविद्यालय जिला मुख्यालय में ही क्यों न रहने दिया जाए। या पत्राचार और स्वाध्याय की ओर अधिकाधिक विद्यार्थियों को क्यों न प्रेरित किया जाए। “मुक्त विश्वविद्यालय” की तर्ज पर “खुला महाविद्यालय” भी क्यों न प्रारंभ किया जाए।

उच्च शिक्षा के संख्यात्मक विस्तार से अधिक आवश्यक है कि हम आदर्श अर्थात् जो होना चाहिए, कि न करके शिक्षक की हैसियत से यथार्थ कालीन जो हो रहा है उस पर दृष्टि डाले तो पाएँगे कि नीतिगत समस्याओं का निदान शिक्षकों के पास है ही नहीं, न ही शिक्षा नीतिगत समस्याओं के लिए जिम्मेदार है क्योंकि उच्च शिक्षा के आर्थिक, नीतिगत और प्रशासनिक मामले केवल नौकरशाहों द्वारा तय होते हैं। वर्तमान परिस्थिति में उच्च शिक्षा में नवीन शिक्षा नीति को आगमन होने से शिक्षा की मूलभूत आवश्यकताएँ नए सिरे से आत्मपरक सोच को, यथार्थ दृष्टि से समग्र रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा का यथार्थ रूप से स्वीकार करने का कदम होगा एवं विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल और नागरिकता के संस्कार देगी।

नई शिक्षा नीति इस बात की भी अनुमति देती है कि छात्र फिजिक्स, केमेस्ट्री पढ़ते हुए भी हिन्दी का विद्वान बन सके, संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कर सके इतिहास का अध्ययन कर सके तथा अपनी योग्यता परख का परीक्षण कर अध्ययन कर सके क्योंकि शिक्षा एकांगी नहीं होती ज्ञान का मतलब है संपूर्ण ज्ञान।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार पाठ्यक्रमों में समावेश है।

- जैसे मानवीय मूल्य, योग, महिला सशक्तिकरण और नैतिकता।
- स्नातक के स्तर पर रिसर्च को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- च्वाँइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम।
- कला, वाणिज्य और विज्ञान के विषयों में मिश्रित चयन की स्वतंत्रता।
- व्यावसायिक और योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रमों में अध्ययन के अवसर।
- इंटरनशिप, अप्रेंटिसशिप, फील्ड प्रोजेक्ट, कम्यूनिटी एंगेजमेंट एंड सर्विसेस का फर्स्ट ईयर में समावेश।
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना/ओपेन यूनिवर्सिटी के माध्यम से व्यावसायिक एवं योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम में ऑनलाइन अध्ययन की सुविधा है।
- एक कालेज में कई विषयों की पढ़ाई की सुविधा।
- एन.सी.सी., एन.एस.एस. और शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम के रूप में अध्ययन की सुविधा।
- सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि करने का लक्ष्य।
- शिक्षा की पहुंच, समानता और गुणवत्ता पर विशेष ध्यान।
- विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और नवाचार की भावना को प्रोत्साहन देना।
- डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा।
- एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय और एक कॉलेज से दूसरे कॉलेज में स्थानांतरण पर क्रेडिट ट्रांसफर की सुविधा है।

क्रेडिट प्रणाली नई शिक्षा नीति में अकादमिक संरचना के अनुसार मेजर विषय पर 54 क्रेडिट, माइनर विषय पर 28 क्रेडिट, वैकल्पिक विषय पर 18 क्रेडिट, कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम पर 12 क्रेडिट, आधार पाठ्यक्रम पर 24 क्रेडिट और फील्ड प्रोजेक्ट, इंटरनशिप आदि पर 24 क्रेडिट मिलेंगे। कुल 160 क्रेडिट प्वाइंट।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के अंतर्गत स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रम में लागू नवीन पाठ्यक्रम संरचना में व्यावसायिक शिक्षा (4 क्रेडिट) का अध्ययन करना विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है।

**व्यावसायिक विषय के अतिरिक्त परियोजना** कार्य/शिक्षता/प्रशिक्षता/सामुदायिक जुड़ाव के पाठ्यक्रम में से किसी एक विद्या का चयन कर 4 क्रेडिट का प्रशिक्षण/अध्ययन करनी भी विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है।

**कौशल संवर्धन डेस्क**—इन पाठ्यक्रमों से संबंधित सभी जिज्ञासाओं, समस्याओं का उचित व संवेदनशीलता के साथ निराकरण का अवसर मिलेगा जिसका विद्वान, प्राध्यापको द्वारा मार्गदर्शन दिया जाएगा।

संपूर्ण प्रक्रिया को विभिन्न चरणों में विद्वान प्राध्यापक/शिक्षाविद् द्वारा के क्रियान्वयन कि जाने की योजना है—

#### **शिक्षक-अभिभावक (Teacher Guardian) एवं शिक्षक/पर्यवेक्षक**

- 25-30 विद्यार्थियों का समूह एक शिक्षक-अभिभावक (Teacher Guardian) को आबंटित किया जाए तथा संबंधित शिक्षक इन विद्यार्थियों की पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएँ का निराकरण करें।
- विद्यार्थी की अभिरूचि, वरीयता क्रम व उपलब्धता के आधार पर शिक्षक अभिभावक, विद्यार्थियों के लिए गतिविधि नियत करेंगे।
- सामान्य रूप से उनके द्वारा चयनित मुख्य, गौण, वैकल्पिक विषय से संबंधित क्षेत्र में कार्य करने की प्राचार्य से विशेष लिखित अनुमति।

#### **परियोजना कार्य**

- परियोजना कार्य (फील्ड वर्क/केस स्टडी/भ्रमण आदि के आधार पर) के विषय का व्यक्तिगत एवं सामाजिक महत्व भी होना चाहिए, तथा यह एक शोध विषय के रूप में अनुसंधान को प्रेरित करने वाला हो।
- फील्ड वर्क आधारित परियोजना कार्य में विद्यार्थी को 07 पूर्ण दिवस अथवा 15 दिवस अंश कालीन (पार्ट टाइम)
- परियोजना कार्य समूह में विद्यार्थियों की संख्या 4-6

#### **परियोजना कार्य का मूल्यांकन**

- परियोजना कार्य का अंतिम मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा नामित बाह्य परीक्षक के द्वारा किया जावेगा।

- आंतरिक (सतत्) एवं बाह्य मूल्यांकन में अंकों का विभाजन क्रमशः 50-50 अंको का होगा
  - (अ) आंतरिक मूल्यांकन (50 अंक) विद्यार्थी समूह द्वारा प्रस्तुत 03 रिपोर्ट में से, दो श्रेष्ठ रिपोर्ट की आंतरिक मूल्यांकन हेतु गणना की जायेगी।
  - (ब) बाह्य मूल्यांकन (50 अंक) का विभाजन निम्न अनुसार होगा:
    - 30 अंक-अंतिम (Final) प्रोजेक्ट रिपोर्ट एवं प्रस्तुतिकरण (सामूहिक)
    - 20 अंक-मौखिकी (व्यक्तिगत)

### मूल्यांकन हेतु निर्देश

- आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन में अंको का विभाजन क्रमशः 50 एवं 50 अंकों का होगा
  - संबंधित संस्था व्यक्ति द्वारा उपलब्ध कराये गए प्रतिपुष्टि प्रपत्र (Feedback Form) के आधार पर विद्यार्थी का आंतरिक मूल्यांकन किया जायेगा जो कि कुल 50 अंक का होगा।
  - बाह्य मूल्यांकन (50 अंक) का विभाजन निम्न अनुसार होगा:
    - 30 अंक-अंतिम रिपोर्ट एवं प्रस्तुतिकरण
    - 20 अंक-मौखिकी
  - विद्यार्थी के कार्य निष्पादन एवं अर्जित उपलब्धियों (Learning Outcome) के आधार पर मूल्यांकन किया जायेगा।

### व्यावसायिक पाठ्यक्रम

**चयन**—ऐसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को भी चिन्हित किया जावे जिनकी शिक्षण व्यवस्था महाविद्यालय स्वयं अपने शिक्षकों के सहयोग से कर सकते हैं अथवा निकटस्थ महाविद्यालय से पारस्परिक सहयोग के लिए MOU के आधार पर पाठ्यक्रम प्रारंभ कर सकते हैं।

प्रत्येक महाविद्यालय व्यावसायिक शिक्षा के लिए शासन द्वारा निर्धारित 25 व्यावसायिक विषयों की सूची में से न्यूनतम 2 विद्यार्थी को महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये पाठ्यक्रमों से ही व्यावसायिक पाठ्यक्रम का चुनाव किया गया है, यदि विद्यार्थी महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराए गये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से अध्ययन न

करके किसी अन्य पाठ्यक्रम को अपनी रुचि एवं ज्ञान के आधार पर अध्ययन करना चाहता है तो उसे SWAYAM पोर्टल पर उपलब्ध निर्धारित पाठ्यक्रमों में से महाविद्यालय से अनुमति प्राप्त कर स्वयं के व्यय से यह पाठ्यक्रम पूर्ण करना होगा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन-व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अंतर्गत 2 क्रेडिट के सैद्धांतिक एवं 2 क्रेडिट के प्रायोगिक पाठ्यक्रम होंगे, मूल्यांकन का मुख्य आधार होगा कि विद्यार्थी द्वारा निर्धारित CLO (Course Learning Outcome) प्राप्त कर लिए गए हैं या नहीं तथा उनका स्तर क्या है? सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा नियमानुसार किया जायेगा जबकि प्रायोगिक कार्य का मूल्यांकन निम्नानुसार किया जायेगा:

आंतरिक (सतत) एवं बाह्य (विश्वविद्यालयीन) मूल्यांकन में अंको का विभाजन क्रमशः 50 व 50 अंकों का है—

(अ) आंतरिक मूल्यांकन (50 अंक) हेतु निम्नानुसार विभाजन होगा—

5 अंक-उपस्थिति 30 अंक-प्रायोगिक रिकॉर्ड

15 अंक-मौखिकी

(ब) बाह्य (विश्वविद्यालयीन) मूल्यांकन (50 अंक) का विभाजन निम्न प्रकार होगा

40 अंक-निर्धारित सूची अनुसार प्रायोगिक कार्य परीक्षा

10 अंक-मौखिकी

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार परीक्षा के संचालन एवं मूल्यांकन में भारत के संदर्भ में अभी तक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, से वर्तमान तक की यात्रा करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि नवीन शिक्षा नीति हमारी उस परंपरा का जीवंत उदाहरण होगी, जो कि भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, जो विरासत है आज के दौर में हमारे समाज के सभी वर्गों को विशेषकर युवा एवं किशोर अवस्था के तरुणों को जीवन ऊर्जा एवं मानसिक दृढ़ता प्रदान करने की एवं सफलता के मार्ग को आसान बनाने व आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी इन्हीं उद्देश्यों को सार्थकता प्रदान करने के लिए मेरे द्वारा वेबसाइट (Website & <https://www.yogachetna.org>) का निर्माण किया गया है जिस पर विभिन्न विषयों पर भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा योग चेतना की विकास यात्रा से सजगता प्रबंधन कैसे किया जा सकता है मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

**संदर्भ**

1. भारतीय मनोविज्ञान लक्ष्मी शुक्ल पृष्ठ 112 116
2. अनुसंधान परिचय पारस नाथ राय लक्ष्मी शुक्ल, नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा 2007 पृष्ठ 145 162
3. भ्रतीयू मनोविज्ञान संख्या एवं योग की पृष्ठभूमि में लक्ष्मी शुक्ल मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल 1971 पृष्ठ 107 109
4. दृष्टव्य भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप, श्री कृष्णा सक्सेना चौखंबा प्रकाशन वाराणसी 2001 पृष्ठ 17 दृ 23
5. Transcendental meditation technique, A fourth and fifth state of consciousness DAVID ORNE JHONSON, Maharishi European University, Weggis, Switzerland 1976, Published in T.M. collected papers, Vol. 03, page 672-691.



## **Empowered Minds, Healthy Lives: The Indian Knowledge System and Women's Mental Health**

**Dr. Aditi Bajpai**

---

India has a rich and diverse knowledge system that dates back thousands of years. The Indian knowledge system encompasses various branches of learning, including philosophy, spirituality, medicine, mathematics, astronomy, and architecture. This system has been nurtured and developed by ancient Indian scholars, sages, and seers.

### **Women Empowerment in Indian Knowledge System**

Women have played a significant role in the Indian knowledge system, contributing to various fields, including philosophy, literature, medicine, and spirituality. Women like Gargi, Maitreyi, and Anandamayi Ma have been revered for their wisdom, spiritual insight, and intellectual prowess.

### **Mental Health Education in Indian Knowledge System**

Mental health education has been an integral part of the Indian knowledge system. Ancient Indian texts, such as the Ayurveda and the Upanishads, emphasize the importance of mental well-being and provide guidance on maintaining mental health. The concept of "Manas" (mind)

is central to Ayurvedic psychology, which recognizes the interconnectedness of physical, mental, and spiritual health.

#### Mental Health of Women in Indian Society

Despite the rich cultural heritage and knowledge system, women's mental health remains a neglected area in Indian society. Women face numerous challenges, including gender-based violence, discrimination, and societal expectations, which can take a toll on their mental health.

#### Challenges Faced by Women

##### **Some of the challenges faced by women in India include:**

- Gender-based violence: Women are vulnerable to domestic violence, sexual harassment, and other forms of gender-based violence, which can lead to anxiety, depression, and post-traumatic stress disorder (PTSD).
- Societal expectations: Women are often expected to conform to traditional roles and expectations, which can lead to stress, anxiety, and feelings of suffocation.
- Lack of access to education and resources: Women, particularly in rural areas, may lack access to education, healthcare, and other resources, which can exacerbate mental health issues.
- Stigma and silence: Mental health issues are often stigmatized in Indian society, leading to silence and suffering among women.

#### **Way Forward**

To address the mental health concerns of women in India, it is essential to:

- Promote education and awareness: Educate women and girls about mental health, its importance, and the available resources.



- Provide access to healthcare: Ensure that women have access to quality healthcare, including mental health services.
- Encourage open conversations: Create a safe and supportive environment where women can openly discuss their mental health concerns without fear of stigma or judgment.
- Empower women: Empower women to take control of their lives, make informed decisions, and seek help when needed.

**Conclusion :** The Indian knowledge system offers valuable insights into mental health education and the empowerment of women. However, despite this rich heritage, women's mental health remains a neglected area in Indian society. It is essential to address the challenges faced by women, promote education and awareness, provide access to healthcare, encourage open conversations, and empower women to take control of their lives.



## Indian Knowledge System and Women Empowerment

Sakshi Bajpai

---

The Indian Knowledge System (IKS), deeply rooted in the country's cultural, philosophical, and scientific heritage, represents a unique repository of indigenous knowledge. It spans disciplines such as philosophy, health, mathematics, astronomy, architecture, and governance. This rich tradition has been instrumental in shaping societal structures and practices in India. Among its many contributions, the empowerment of women is a significant area where the IKS has played a vital role, historically fostering women's agency and promoting gender equality in certain periods.

### **Indian Knowledge System: An Overview**

The Indian Knowledge System is a blend of empirical, rational, and intuitive learning methods. Ancient texts such as the Vedas, Upanishads, Arthashastra, and Manusmriti provide insights into governance, education, and societal norms. Institutions like Nalanda and Takshashila were renowned for their advanced learning and inclusivity. The IKS also includes indigenous health systems like Ayurveda and Siddha, agricultural practices, and economic theories that were sustainable and community-centric.

A notable feature of the IKS is its holistic approach to knowledge, which often emphasized the balance between the material and spiritual aspects of life. This balance inherently created space for women to contribute meaningfully to society, albeit with limitations based on socio-political contexts.

### **Women in Ancient Indian Knowledge Systems**

Historical records show that women in ancient India held significant roles in knowledge creation and dissemination. Female scholars like Gargi and Maitreyi are celebrated in the Upanishads for their intellectual contributions. Gargi was known for her philosophical debates, challenging even sages like Yajnavalkya. Similarly, Maitreyi, a philosopher, contributed to discussions on metaphysics and spirituality.

Women were also instrumental in arts, literature, and health systems. Texts such as the Natya Shastra and Charaka Samhita acknowledge women as practitioners and contributors to disciplines like performing arts and medicine. These examples highlight how the IKS provided a foundation for women's empowerment through education and participation in intellectual and cultural pursuits.

### **Challenges to Women Empowerment in IKS**

Despite the progressive elements of the IKS, the status of women underwent significant changes over time. The rigid stratification of society under later interpretations of the Manusmriti and the advent of patriarchal norms curtailed women's rights and access to education. Practices such as child marriage, restrictions on widow remarriage, and the imposition of purdah system became prevalent, limiting women's agency and opportunities for empowerment.

The colonial period further disrupted the IKS, as Western education systems replaced indigenous ones, sidelining women who were already marginalized. However, the resilience of the IKS and its inherent respect for knowledge created opportunities for reform during

the Indian freedom struggle. Reformers like Raja Ram Mohan Roy and Swami Vivekananda drew from Indian philosophical traditions to advocate for women's rights.

### **Modern Relevance of Indian Knowledge System for Women Empowerment**

In contemporary times, the Indian Knowledge System offers valuable insights for empowering women. The promotion of holistic education, sustainable living, and community-centric practices can address modern challenges like gender inequality and environmental degradation.

Government initiatives such as the National Education Policy (NEP) 2020 emphasize the integration of IKS into mainstream education. By doing so, they aim to create a more inclusive and equitable learning environment. For instance, traditional crafts and skills, often passed down through women, are being revived and integrated into the economy, empowering women financially and socially.

Organizations working on women's empowerment are increasingly looking at the intersection of tradition and modernity. Women are reclaiming their roles in Ayurveda, yoga, and arts, drawing from their indigenous heritage. The global popularity of practices like yoga, where women play leading roles as teachers and practitioners, is a testament to this reclamation.

**Conclusion :** The Indian Knowledge System, with its emphasis on holistic and inclusive growth, has the potential to contribute significantly to women empowerment. While historical contexts have presented challenges, the core principles of the IKS—equality, sustainability, and respect for knowledge—remain relevant in addressing gender disparities. By revisiting and revitalizing these traditions, India can not only preserve its rich heritage but also create a more equitable and empowered society for women.

### **Bibliography**

1. Altekar, A.S. The Position of Women in Hindu Civilization. Motilal Banarsidass, 1938.
2. Bose, Nirmal Kumar. Indian Culture and Society. Asia Publishing House, 1967.
3. Chakravarti, Uma. Rewriting History: The Life and Times of Pandita Ramabai. Kali for Women, 1998.
4. NEP 2020 Document. Ministry of Education, Government of India.
5. Thapar, Romila. The Penguin History of Early India. Penguin Books, 2002.
6. Vatsyayan, Kapila. Traditions of Indian Folk Dance. Clarion Books, 1992.

This paper underscores the interplay between the Indian Knowledge System and the empowerment of women, offering a pathway to a balanced and progressive future rooted in heritage.



## Indian Knowledge System As A Perspective To Sustainable Development

Dr. Nilima Roy

---

**Abstract :** The Indian Knowledge unique opportunities and challenges for application in higher education. Rooted in ancient Indian philosophy, medicine, mathematics, linguistics, and ecological awareness, the IKS emphasizes holistic and sustainable principles. As the world faces unprecedented environmental challenges, the wisdom of Indian Knowledge System serves as a reminder of the importance of living in harmony with nature. These systems emphasize the interconnectedness of all life forms, the need for sustainable resource use, and the moral and ethical responsibility to protect the environment. By drawing on the principles of IKS, we can promote sustainable development that meets the needs of the present while ensuring the well-being of future generations.

**Keywords:** Indian Knowledge System, Sustainable development, Holistic.

### Introduction

Indian Knowledge System (IKS) is an innovative cell under ministry of Education (MoE) at AICTE, New Delhi. It is established to promote interdisciplinary research on all aspects of IKS, preserve

and disseminate IKS for further research and societal applications. The Indian knowledge system (IKS) is the systematic transmission of knowledge from one generation to the next generation. It is a structured system and a process of knowledge transfer rather than a tradition. The India knowledge system is based on the Vedic Literature, the Upanishads, the Vedas and the Upvedas. The NEP-2020 (National Education Policy) recognizes this rich heritage of ancient and eternal Indian knowledge and thought as a guiding principal. The Indian knowledge System comprises of Jnan, Vignan and Jeevan Darshan that have evolved out of experience, observation, experimentation, and rigorous analysis. This tradition of validating and putting into practice has impacted our education, arts, administration, law, justice, health, manufacturing and commerce. This has influenced classical and other languages of Bharat that were transmitted through textual, oral and artistic traditions. It includes knowledge from ancient India and its successes and challenges and a sense of India's future aspirations specific to education, health environment and all aspects of life.

The terms "Indian Knowledge" and "Sustainable Development" are correlated terms with widely varying definitions and interpretations. As a developing country, India has played a vital role in sustainable development, which has been made possible by the influence of ancient Indian knowledge. Sustainable development has its roots in the 1970s and 1980s but the modern concept gained momentum in the 1990s. Sustainable Development Goals (SDGs) (2015) has 17 goals i.e. to end poverty protect the planet ensure peace, Good health and well being quality education, gender equality, clean water and sanitation affordable and clean energy, decent work and economic growth, industry, innovations and infrastructure, reduced inequalities, sustainable cities and communities, responsible consumption and production, climate action, life below water life on land, justice.

The India knowledge system offer valuable lessons for sustainable development such as living in harmony with nature, emphasizing community and social equity, promoting holistic well-being, encouraging local self reliance. By exploring and embracing this rich heritage, we can discover innovative and sustainable solutions for a resilient future.

### **Objectives of Indian Knowledge System**

Indian Knowledge System aims to support and facilitate further research to solve the contemporary societal issues in several fields such as Holistic health, Psychology, Neuroscience, Nature, Environment and Sustainable development. The primary aim of drawing from the past and integration of the Indian knowledge system is to solve the contemporary and emerging problems of India and world by using our ancient knowledge systems.

### **Indian Knowledge System Contributes To Sustainable Development In India**

The IKS has inherent principles that can contribute significantly to achieving sustainable development goals related to eradicating poverty and promoting good health and well being in India.

#### **(I) Eradicating Poverty**

**(1) Traditional livelihoods** – India’s traditional knowledge systems include various sustainable livelihood practices such as organic farming, handicrafts, handloom weaving and small scale cottage industry. Promoting these can create employment opportunity and uplift rural economics, thereby reducing poverty.

**(2) Community Based Development** – Indian traditions emphasize community cohesion and support systems (like Self- Help groups and cooperatives) which can be empower marginalized communities economically and socially

**(3) Skill Development** – Traditional knowledge often includes skill like herbal medicine preparation, artisan crafts and sustainable



resource management. Training programs to revive and modernize these skills can enhance income.

**(4) Resource Management** – Indigenous knowledge of natural resource management, such as traditional water harvesting techniques (like tanks and step wells), sustainable agricultural practices (organic farming, crop rotation) ,and forest conservation practices, can help in poverty reduction by ensuring sustainable use of resources.

## **(II) Good Health and Well-being**

**(1) Ayurveda and Herbal Medicine** – Ayurveda, an ancient Indian system of medicine, promotes holistic health through natural remedies, diet, yoga and lifestyle practice.

**(2) Yoga and Mental Health** –Yoga,originating from India, emphasizes mental and physical well-being through exercises, breathing techniques and meditation.

**(3) Nutrition and Indigenous Food** – Traditional Indian diets are diverse and nutritionally rich. Promoting indigenous food system and dietary diversity can address malnutrition and improve overall health outcomes.

**(4) Community Health Practice** – Traditional community health practices, such as community kitchen (like langars), collective healthcare decision and local healing practices foster community well-being and resilience.

**(5) Environmental Health** – Traditional ecological knowledge promotes a harmonious relationship between humans and nature which is crucial for longterm health. Practices like organic farming and forest conservation contributes to environment and sustainable health.

## **(III) Schemes for No Poverty**

**(1) Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA).** It provides guaranteed wage employment to rural

households, thereby enhancing livelihood opportunities and reducing poverty.

**(2) Pradhan Mantri Awaas Yojna (PMAY)** – It aims to provide affordable housing to all rural and urban households by 2022, particularly targeting the homeless and those living in dilapidated house.

**(3) National Rural Livelihood Mission (NRLM)** – Focus on mobilizing rural poor household into Self- Help Group (SHGs) and federations to improve their livelihoods through skill development access to finance and market linkages.

#### **(IV) Schemes for Health and Well-being**

**(1) Ayushman Bharat – Pradhan Mantri Jan Arogya Yojna (PM-JAY)** – Provides health insurance coverage of up to Rs. 5 lakh per family per year to over 10 crore vulnerable families.

**(2) National Health Mission (NHM)** – Aims to provide accessible affordable and quality healthcare to rural populations, focusing on maternal and child health and communicable diseases.

**(3) Ayush (Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy) Ministry-** Promotes traditional Indian systems of medicine to ensure holistic and well-being.

**Conclusion :** IKS offer a wealth of insights and practices that are inherently sustainable and environmentally friendly. From sustainable agriculture and water management to holistic health and spiritual ecology, these traditional knowledge systems provide valuable solutions to the pressing challenges of modern development. By integrating IKS into contemporary sustainability frameworks we can create a more balanced, equitable and resilient world.

By integrating these elements of the Indian knowledge System into development policies and programs. India can progress towards achieving sustainable development goals related to poverty eradication out improving health and well being.

**Reference–**

1. Biswas.S. (2021) Indian knowledge system and NEP – 2020 Scope. Challenges and Opportunity National Journal of Hindi & Sanskrit Research, 1(3a), 179-183.
2. Gupta, A.K.(2002). Grassroots Innovations for Sustainable Development ; Challenges for higher Education, Futures.
3. Chandel.N., &Prashar.K.K. (2024). Indian knowledge System and NEP:- a brief analysis. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, 11(1), 1260, d263.
4. KumariD. (2024), Indian knowledge for sustainable futures, International Journal of Novel Research and Development 9(3), d259-d262.
5. Sharma,R.(2024).Incorporation of India knowledge System through NEP(2020)for sustainable development.International Journal of Advance and Applied Research,5(4).
6. <https://iksindia.org>



## Indian Knowledge System in Indian English and Literature

Er. Swati Mishra

---

**Abstract :** This paper explores the knowledge systems of India which were once beacon to the world. For scholars and knowledge seekers of the world, who came to India to acquire knowledge, these Indian systems served as the reservoir and generously shared its knowledge in various fields. It saddens us to note that the youth of India are headed to the West in pursuit of gaining and creating knowledge.

With regards to the role of English in enhancing the Indian knowledge system, one may point out that English being the common language serves as a platform to project the vastness and richness of Indian knowledge in diverse areas to the rest of the world. For example, drama is a primary art form in India from which every other art form emerged. It is unique to India to have the first systematic text on the art of drama and aesthetics.

India has the longest epic in the world, Mahabharata, and equally popular Ramayana. India also has one of the largest collections of folk tales in the world. Most of the famous folk tales all over the world, including the Arabian Knights, are considered to have been inspired

by Panchatantra and other story collections in India. In order to connect with the local population who were basically uneducated, they resorted to the use of common tropes, proverbs and slangs to establish a connection with the common people. In addition, Raja Rao's Kanthapura is an example of how 'sthal purana' is used as a device to connect with the masses using a narrative technique that can be related to the ordinary rural people.

In order to explore the native techniques in Indian literature, the NEP has opened its doors to give a prominent place to indigenous genres and literature to make learning interesting, inclusive, holistic, multicultural and multilingual in secondary and higher education.

### **Introduction**

"Educate and raise the masses, and thus alone a nation is possible." Swami Vivekananda India was a beacon in terms of knowledge to the world. It was a haven to knowledge seekers of the world, to name a few, who flocked to India to amass knowledge from this reservoir which generously shared its knowledge in various fields. It saddens us to note that the youth of India are headed to the West in pursuit of gaining and creating knowledge. However, the government of India, through its latest initiative National Education Policy (NEP) 2020, brings Indian knowledge systems into focus and tries to promote indigenous knowledge from various disciplines. This paper is a humble effort to briefly explore the Indian knowledge systems with specific reference to English language and literature.

### **Indian Knowledge Systems and Indian English and Literature**

With regards to the role of English in enhancing the Indian knowledge system, one may point out that English being the c serves

as a common language platform to project the vastness and richness of Indian knowledge in diverse areas to the rest of the world. The English language dictionary has absorbed many Indian words. For e.g., Cashmere is associated with wool and originates in Kashmir as it refers to the wool produced by Kashmiri goats. It is closely associated with the word shawl, a word which originates in Persian, and travelled into India via Urdu and Hindi and then became a part of the English vocabulary. The Indian climate contributed to the English language too. For example, 'veranda' and 'pyjama', which are necessary for living in a hot climate, were not part of England where the climate is cold. Another illustration of how language is continuously changing is the word "blighty." The phrase "Good ol' Blighty" is used by British expats to refer to Britain and their own country, however it actually derives from the Urdu word "vilayati," which means "foreigner" or "European."

The English language has helped to provide international platform and academic recognition to great litterateurs like Tagore who is acclaimed as the first Indian recipient of the Nobel Prize. English writers like T.S. Eliot, Rudyard Kipling and E. M. Foster document the Indian aestheticism and sensibilities in their writings.

While drama is a sub-genre of literature in the West, it is a primary art form in India from which every other art form and genres of literature emerged. India holds the unique distinction of having the first systematic text on the art of drama and aesthetics. The *Rasa* theory is the most fundamental and complete philosophy which cuts across all disciplines of arts. Tragedy was not an important part of the Indian literary tradition because of its pessimistic approach which

was at variance with the Brahminical ideology which believes in the indestructibility of the soul and life. Exposure to the classical tragic literature of the West facilitated the emergence of this genre in Indian literary tradition as also the novel form.

India has the longest epic in the world, *The Mahabharata*, apart from equally popular *The Ramayana*. India also has one of the largest collections of folk tales in the world. Most of the famous folk tales all over the world including *Aesop's Fables* and *Arabian Nights* are considered to have been inspired by *Panchatantra* and other story collections in India.

English language played a pivotal role in homogenizing and uniting the multilingual and pluralistic Indian society. The concept of 'ahimsa', which offers and advocates non – violence as form of resistance, was disseminated to the world with the help of English language. It was through English language that India attempted to offer its perspective and correct the biased and prejudiced. Orientalists have worked in those lines. Author Nikesh Shukla, who lives in Bristol, believes that India's enormous influence on standard English illustrates the symbiotic nature of Empire. "It was inevitable with colonialism that Britain would imbibe the local culture and it would have a lasting effect because colonialism flows two ways." Indian philosophy and spirituality became popular in the West through English. It was Swami Vivekananda's speech in English, which helped to clear the misconception concerning India, was popularized by the English colonial imperialists. The Chipko movement introduced by Sunderlal Bahugana is India's contribution to the conservation and preservation of natural ecology.

*The Rigveda*, the first attested Indo-European document, reinforces the greatness of the Indian knowledge system in several domains. Oral traditions like kathn-pravacana parampara, Hari katha and Burra katha play an important role in preserving and disseminating ancient knowledge as the narrators travel all over India thereby bridging the gap between the educated and the unlettered by discoursing in the common colloquial dialect. The Indian oral tradition employs the ‘nav rasa’ whereby narrators enact the role and display emotions of rati (love) hasa (humour) Soka (pathos) Krodha (anger) bhaya (fear), santi (tranquility) etc. during the course of narration. It is akin to a mobile theatre, a street play or a nukkad natak. In the Deccan, Deccani writers realized early on the importance of reaching out to masses and popularized ‘dastangoi’, a tradition of creating and telling stories. The storytelling tradition spread across the South Asia as the Persian and Urdu writers used common tropes, proverbs and dialect to establish a connection with the common man.

Similarly, Raja Rao’s *Kanthapura* is an example of how Indian tradition of the ‘sthal purana’ is used as a device to connect with the common and ordinary masses by using a narrative technique that can be related to with by the ordinary rural people in order to make them unite towards a common goal i.e., free India from the British rule and involve them in the nationalistic struggle for independence. These examples help to negate the misconception that knowledge in India was limited and restricted to only the elite class. According to the varna dharma analogy of Brahminic Hinduism, Ananthamurthy’s *Samskara: A Rite For A Dead Man* highlights the hierarchical systems that extend from the Brahmin head to the Shudra limbs. The caste system, avarice,



and self-discovery are some of the issues it examines. It portrays the breakdown of ideals and serves as a mirror for everyday life. He takes a post-structuralist stance on the rigid caste ideals that are common in Hindu discourse in his novel. His portrayal of the Brahmin community's narrow-mindedness and rigidity is performed through the main character Praneshacharya's rise and fall. The story contains Miltonic overtones in which a man is "tempted" to eat the "forbidden fruit," in this case Chandri, a woman from a lower caste, and

how his actual actions bring about his destruction. The story in *Samskara* is similar to John Milton's *Paradise Lost* in that women are held accountable. Here, Chandri, a victim of heterosexual male predatory gaze, is held accountable for defiling the chaste Acharya. The main character is depicted as firmly adhering to the *Manusmriti*. Everyone in the caste system is observed defending and internalising their unique positions, which traps them in a cycle of caste-based anarchy. People begin to doubt Narappa's Brahmin purity as he passes away from the illness, which exposes their own flaws in the process. There are no answers to the Brahmins' predicament in the book of *Dharma*. It depicts a bewildered Praneshacharya pleading with the god Maruthi for help.

### **Indian Culture and Languages**

India is a cultural treasure trove with a rich history that has given rise to a wealth of art, literature, traditions, artefacts, language expressions, and heritage sites. Every day, millions of people from all over the world participate in, enjoy, and profit from this cultural wealth by, among other things, travelling to India to experience the country's hospitality, buying Indian handicrafts and handmade textiles, reading

Indian classic literature, engaging in yoga and meditation, finding inspiration in Indian philosophy, attending Indian festivals, appreciating

Indian music and art, and watching Indian movies. According to India's tourism motto, it is this cultural and natural wealth that makes India really "Incredible India".

The nation of India and the individual both benefit from the promotion of Indian arts and culture. In order to provide children a sense of identification, belonging, and appreciation for various cultures and identities, it is vital to foster cultural awareness and expression among other major competencies in them. Children can acquire a good sense of cultural identification and self-worth by becoming well-versed in the history, traditions, arts, and languages of their own culture. Therefore, cultural awareness and expression play a significant role in promoting both individual and society well-being.

One of the main ways to spread culture is through the arts. The arts are well known for enhancing people's cognitive and creative capacities as well as their overall pleasure. They also help to strengthen cultural identity, promote awareness, and uplift societies. Indian arts of all kinds must be made available to students at all stages of school, beginning with early childhood care and education, for several reasons, including their happiness/well-being, cognitive development, and sense of cultural identity.

Of course, there is a close relationship between language and art and culture. Different languages "see" the world in different ways, and a language's grammar impacts how a native speaker interprets their surroundings. Particularly, languages affect the manner in which members of a given culture communicate with others, including family

members, superiors, peers, and strangers, as well as the tone of their conversations. Conversations between speakers of a shared language reflect and document a culture by their tone, sense of experience, and familiarity (or “apnapan”). Thus, our languages serve as a container for culture. Language is necessary for understanding all forms of art, including those found in books, plays, music, and movies. The languages of a culture must be preserved and promoted in order to preserve and advance that culture.

Sadly, Indian languages have not received the proper care and attention; in the past 50 years alone, the nation has lost over 220 languages. 197 Indian languages have been classified as “endangered” by UNESCO. Particularly in danger of extinction are a number of unscripted languages. Too frequently, no organised steps or procedures are taken to preserve or record these rich languages/expressions of culture, and when senior members of a tribe or group who speak such languages pass away, these languages frequently disappear along with them. Additionally, even Indian languages that are not formally listed as endangered, like the 22

languages listed in the Eighth Schedule of the Indian Constitution, are confronted with significant challenges on a number of fronts. Indian language instruction and learning must be integrated into all levels of secondary and higher education. In the broader context, the NEP 2020 comes as guiding force to promote Indian art, culture and languages through a pan-India network of educational institutions. One

can only hope for better visibility to Indian languages and cultures through the NEP 2020.

**Conclusion :** If one aspires to visualize India as a country which beckons knowledge seekers and revive its lost glory of the past then one needs to emulate and echo Tennyson who years in *Ulysses*:

*To follow knowledge like a sinking star,*

*Beyond the utmost bound of human thought.*

The India nation and its citizens both benefit from the promotion of Indian arts, culture and languages. In this context, the NEP 2020 comes as guiding force to promote Indian art, culture and languages through a pan-India network of educational institutions.

**“Men are mortal. So are ideas. An idea needs propagation as much as a plant needs watering. Otherwise, both will wither and die.”**

**—Dr. B. R. Ambedkar.**

### References

1. Dr. Govindaiah godavarthi, IKS in Indian English and Literature. Vol. 10 Issue 04 , April 2023.
2. Ananthamurthy, U. R. *Samskara: A Rite for a Dead Man*. Fifteenth Impression, OUP, 1976. Aurobindo, Ghosh. *Sri Aurobindo: The Story Of His Life*. Fifth Impression, Sri Aurobindo
3. Ashram Publication Department, 2006.—. *Sri Aurobindo and the Mother on Education*. Sri Aurobindo Arsham Trust, 1956. Ghosh, Suresh C. *History of Education in India*. Rawat Publications, 2007.

4. Rabindranath, Tagore. *Personality*. Rupa Publication, 2007.
5. Sailaja, Pingali. Indian English. Edinburgh University Press, 2009, pp. 1–172. —. *English Words: Structure, Formation and Literature*. Pertinent, 2004. “The Hindu Speaks on Education.” Kasturi & Sons Ltd.



## “ भारतीय ज्ञान परम्परा: महिला सशक्तिकरण के विशेष संदर्भ में

प्रतिभा पटेल

**सारांश**— भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी का योगदान सदैव रहा है इतिहास इस बात का साक्षी है वैदिक काल से ही नारी ज्ञान की परंपरा रही है नारी शक्ति के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने संरक्षित करने में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन समय से ही महिला सम्माननीय एवं पूजनीय रही है प्राचीन काल में महिलाओं को अनेक उत्पादक कार्यों में संलग्न पाया जाता था लेकिन समय के साथ प्रजनन तथा गर्भावस्था और प्रसव की चुनौतियां ने उन्हें धीरे-धीरे सुरक्षा और भोजन के लिए पुरुषों पर निर्भर बना दिया महिलाओं के सशक्तिकरण की आवश्यकता इसलिए महसूस की जा रही है क्योंकि समाज में उनकी स्थिति शुरू से ही रही है परंतु वर्तमान में समाज में महिलाओं की स्थिति को फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। समाज में अधिकांश महिलाओं की निर्धनता और निरक्षरता का कारण उनके आर्थिक स्थिति के पर्याप्त स्तर को प्राप्त न कर पाना है। महिलाओं को आधुनिक समाज में अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों के बारे में जागरूक होने के लिए शिक्षित होना होगा। जब वे जागरूक होंगे तभी वह सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए चलाई गई योजनाओं का पूरा लाभ उठा पाएंगे।

### भारतीय ज्ञान परंपरा एवं नारी शिक्षा

भारतवर्ष में आदिकाल से ही नारी शक्ति का आदर तथा उपासना की गई है हमारे वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों तथा स्मृतियों में इस तत्व का बारंबार उल्लेख मिलता है

गार्गी, मेंत्री, लोपामुद्रा, स्वाहा आदि प्रमुख नाम हैं नारी जीवन का प्रथम सोपान कन्या है। वैदिक काल में पुत्र के समान मंगलकारी कन्या को समझा जाता था। नारी पद नर से ही उत्पन्न होता है नर और नारी जीवन रथ के दो पहिए हैं। अतः दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। भारतीय संस्कृति तथा परंपरा में नारी को सम्माननीय स्थान दिया जाता था। यह भी कहा गया है “यत्र नरिस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता”। प्राचीन काल से स्त्रियों की शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता था क्योंकि स्त्री जीवन के हर पहलू में पुरुष का साथ देती थी उस समय स्त्रियों के लिए पृथक् शिक्षा संस्थानों की कोई व्यवस्था नहीं थी और फिर भी अनेक नारियों ने अपनी विद्वता, त्याग एवं समर्पण का परिचय दिया है।

**बौद्ध काल में नारी शिक्षा :-** प्रारंभ में स्त्रियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था परंतु बाद में महात्मा बुद्ध ने संघ के रूप में प्रवेश करने की अनुमति देकर स्त्री शिक्षा को नया आयाम दिया।

**मुस्लिम काल में नारी शिक्षा :-** इस काल में बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथा के कारण स्त्रियां शिक्षा से वंचित रही। बड़े घरानों की बालिकाएं अपने घरों से शिक्षा प्राप्त करती थी। इनमें रजिया सुल्तान, चांद बीबी, नूरजहां आदि नाम प्रमुख हैं।

**ब्रिटिश काल में नारी शिक्षा :-** समाज एवं धर्म में अनेक अंधविश्वास प्रचलित होने के कारण कंपनी ने स्त्री शिक्षा में कोई रुचि नहीं ली। सन 1854 में वुड्स के आदेश पत्र में सबसे पहले स्त्री शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया। इस काल में अंग्रेजी शासन के दौरान मीरा बहन, कस्तूरबा गांधी, भीखाजीकामा जैसी विदुषी नारियों ने अपने देश प्रेम व त्याग से महिलाओं की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।

सन 1947 के उपरांत महिलाओं की सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति में तीव्र गति से परिवर्तन हुए तथा स्त्रियों की शिक्षा के लिए व्यापक प्रचार-प्रचार किए गए। फिर भी नारी शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं तथा उनके समाधान को प्रस्तुत करने हेतु अनेक योजनाओं का सहारा लिया गया।

### नारी शिक्षा की आवश्यकता

मानव जाति का विकास सामाजिक व्यवस्था और श्रेष्ठ संस्कारों पर निर्भर है। संस्कारों के अभाव में किसी भी देश, जाति या संस्कृति में सुख शांति की परिस्थिति देर तक नहीं रह सकती। समाज की अंतःचेतना गृहस्थ आश्रम को माना गया है। जिसमें

स्त्री पुरुष दोनों ही आधार सूत्र हैं। इसलिए समाज के लिए पुरुष की जागृति ही पर्याप्त नहीं अपितु नारी की विशेषताएं भी उतनी ही अनिवार्य हैं। इसलिए स्त्रियों का संस्कारवान व शिक्षित होना उतना ही आवश्यक है जितना कि पुरुषों का। आज की अनियंत्रित और परंपराओं के कारण हमारे समाज में नारियां अशिक्षित हैं। गृहस्थ की दुर्दशा का कारण आज नारियों के अशिक्षा है इसीलिए स्त्रियों को संस्कारवान बनाने के लिए “उनकी शिक्षा उपयोगी ही नहीं आवश्यक है, अनिवार्य है”। इसके लिए सरकार द्वारा भी अनेक कदम उठाए जा रहे हैं।

केन्द्र सरकार एवं मध्य प्रदेश राज्य सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के तारतम में महिला शिक्षा के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं :-

#### केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाएं:-

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
2. बालिका समृद्धि योजना
3. सुकन्या समृद्धि योजना
4. CBSE उड़ान स्कीम
5. धनलक्ष्मी योजना

**1. बेटी बचाओ बेटीपढ़ाओ :-**बालिकाओं के लिए केन्द्र सरकार की एक योजना है। जो पूरे देश में लागू है इस योजना का मुख्य उद्देश्य लिंग, पक्षपात पूर्ण गर्भपात जैसी सामाजिक बीमारियों से बालिकाओं को बचाना है पूरे देश में बालिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है।

#### योजना के उद्देश्य :-

1. लिंग पक्षपाती चयनात्मकगर्भपातरोकना।
2. बचपन में बालिकाओं के अस्तित्व और सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
3. बालिकाओं की उच्च शिक्षा को सुनिश्चित करना।

**2. सुकन्या समृद्धि योजना :-**यह सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विशेष बचत योजना है जिसमें एक बालिका को प्राथमिक खाताधारक के रूप में रखा जाता है जबकि माता-पिता/कानूनी अभिभावक खाते के ज्वाइंट होल्डर होते हैं या खाता बालिका के 10



वर्ष के होने से पहले खोला जा सकता है तथा खाता खोलने के बाद 15 वर्ष तक योगदान करने की आवश्यकता है।

**विशेषताएं :-**

1. प्रारंभिक जमा के आसान विकल्प (रु. 1,000 से लेकर 1,50,000 रुपये तक)
2. रिटर्न की तय दर 7.6 प्रतिशत।
3. बालिकाओं की उच्च शिक्षा के लिए कुछ पैसा निकाल सकते हैं।

**3. बालिका समृद्धि योजना :-** यह एक छात्रवृत्ति योजना है, जो गरीबी रेखा से नीचे वाली युवा लड़कियों और उनकी माताओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए बनाई गई है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य समाज में उनकी स्थिति में सुधार, नामांकन में सुधार के साथ-साथ स्कूलों में लड़कियों की संख्या को बढ़ाना है।

**विशेषताएं :-**

1. यह बालिका लाभ योजना शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में उपलब्ध है।
2. नवजात शिशु के जन्म के बाद बालिका की मां को रु. 500 प्रदान किए जाते हैं।
3. स्कूल जाते समय एक बालिका को रु. 300 से रु. 1,000 तक की वार्षिक छात्रवृत्ति मिल सकती है।
4. बालिका के 18 वर्ष की आयु के बाद शेष राशि में से पैसा निकाल सकते हैं।

**4. CBSE उड़ान स्कीम-** यह योजना केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही है। इस योजना का फोकस पूरे भारत में प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग और तकनीकी कालेजों में लड़कियों के एडमिशन को बढ़ाना है।

**विशेषताएं :-**

1. 11वीं और 12वीं की कक्षा में छात्राओं के लिए मुफ्त पढ़ाई के समान/ऑनलाइन जैसे वीडियो अध्ययन सामग्री आदि।

2. 11वीं और 12वीं के छात्राओं के लिए वीडियो पर ऑनलाइन क्लास।
3. मेधावी छात्राओं के लिए सीखने और सलाह देने के अवसर।
4. छात्रों की शिकायतों के लिए हेल्पलाइन।
5. छात्रों की प्रगति की निरंतर निगरानी।

**5. धनलक्ष्मी योजना**—केन्द्र सरकार द्वारा मार्च 2008 में कम आय वाले परिवारों को बालिकाओं को आर्थिक मदद प्रदान करने के लिए पायलट योजना के रूप में शुरू की गई थी। हालांकि सरकार द्वारा वर्षों से शुरू की गई अधिक आकर्षक योजनाओं के परिणाम स्वरूप धन लक्ष्मी योजना अब लगभग खत्म हो गई है।

**मध्य प्रदेश सरकार द्वारा बालिका शिक्षा हेतु संचालित योजनाएं :-**

1. लाडली लक्ष्मी योजना
2. गांव की बेटी योजना
3. प्रतिभा किरण योजना
4. विक्रमादित्य योजना

**1. लाडली लक्ष्मी योजना :-**प्रदेश में बालिका जन्म के प्रति जनता में सकारात्मक सोच, लिंगानुपात में सुधार, बालिकाओं के शैक्षिक स्तर तथा स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार तथा उनके अच्छे भविष्य के आधारशिला रखने एवं बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 1 अप्रैल 2007 से यह योजना प्रारंभ की गई।

**लाभ :-**

1. योजना में बालिका के नाम से शासन की ओर से ₹.1,43,000/-का आश्वासन प्रमाण पत्र जारी किया जाता है।
2. पंजीकृत बालिका को कक्षा छठवीं प्रवेश पर ₹.2000/-, कक्षा 9वीं में प्रवेश पर ₹.4000/-कक्षा ग्यारहवीं प्रवेश पर ₹.6000/-एवं कक्षा 12वीं में ₹.6000/-रूपये की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।
3. लाडली बालिकाओं को कक्षा बारहवीं के पश्चात स्नातक अथवा व्यवसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने पर ₹.25,000/-की प्रोत्साहन राशि दो समान किस्तों में पाठ्यक्रम के प्रथम एवं अंतिम वर्ष में दी जाएगी।

4. बालिका की आयु 21 वर्ष पूर्ण होने पर, कक्षा 12वीं की परीक्षा में सम्मिलित होने पर एवं बालिका का विवाह शासन द्वारा निर्धारित आयु पूर्ण करने के उपरांत 1 लाख रुपए अंतिम भुगतान का प्रावधान है।

**2. गांव की बेटी योजना :-**योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभावान बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की और प्रोत्साहित करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना है। प्रत्येक गांव से प्रतिवर्ष 12वीं कक्षा में 60 प्रतिशत या ज्यादा अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को हर माह रू. 500/- प्रति माह की दर से 10 माह तक छात्रवृत्ति दी जाएगी।

**3. प्रतिभा किरण योजना :-**यह योजना शहर की निवासी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली छात्राएं जो कक्षा 12वीं में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हुई हो और शासकीय या अशासकीय महाविद्यालय विश्वविद्यालय में स्नातक कक्षा में अध्ययनरत हो उन्हें रू. 500/- मासिक के हिसाब से 10 माह के लिए रू. 5,000/- प्रतिवर्ष दिए जाने का प्रावधान है।

**4. विक्रमादित्य योजना :-**यह योजना मध्य प्रदेश के सामान्य वर्ग के बच्चों के लिए है वह बच्चे जो 12वीं कक्षा में 60 प्रतिशत अंकों से पास हुए हैं उन्हें प्रतिवर्ष लिए जाने वाले विभिन्न शुल्कों को मिलाकर अधिकतम रुपए 2,500/- तक के शुल्क में छूटका प्रावधान है।

**निष्कर्ष-अतः स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा भी महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है जिसके लिए प्राचीन काल से ही अनेक प्रयास किए गए हैं और वर्तमान में भी जारी हैं हमारे देश की सभ्यता संस्कृति भी महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूक रही है साथ ही अनेक बधाओ एवं कुरीतियों का भी सामना करना पड़ा है।**

भारत में महिला सशक्तिकरण योजनाओं का उद्देश्य सुनिश्चित करना है कि महिलाओं को संसाधनों, अवसरों और सुरक्षा तक समान पहुंच मिल सके। छुआछूत, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी रूढ़ियों के कारण अनेक बालिकाओं को शिक्षा से वंचित रह जाना पड़ता है। महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव की शुरुआत स्वयं के परिवार से करनी होगी। परिवार में बहन, बेटी, पत्नी, माता के साथ सम्मानजनक एवं

समानता का व्यवहार हो। अतः परिवार के साथ-साथ समाज तथा सरकार द्वारा भी महिलाओं की शिक्षा के लिए प्रयास किया जा रहे हैं।

### संदर्भ सूची

1. कोठारी, अतुल, शिक्षा विकल्प एवं आयाम
2. जैन श्रीमती दीपिका, रचना द्वि मासिक पत्रिका
3. भटनागर कालीशंकर: भारतीय संस्कृति का इतिहास
4. <https://www.azadindia.org>
5. <https://ladlilaxmi.mp.gov.in>
6. <https://highereducation.mp.gov.in>



## भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

अंकिता पाण्डेय

भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों में आस्था को पुनः जीवित करना है इसके लिए हम भारतीय संस्कृति के प्राचीन मूल्य पद्धति और सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करने वाली प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति जो कि हमारे वेद उपनिषद पुराणों वर्णित और ज्ञान की अथाह सामग्री अष्टांग योग पद्धति प्रकृति के प्रति विस्तृत दृष्टिकोण के प्रति श्रद्धा रखना तथा वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए इनका पुनः उत्थान है।

भारत को सदैव विश्व गुरु का दर्जा दिया गया है यह हमारी आधुनिक उपलब्धि के कारण नहीं बल्कि हमारी गौरवशाली संस्कृति इतिहास और विधान के कारण है आज संपूर्ण विश्व कोरोना जैसी विकराल त्रासदी से ग्रस्त रहने पर भी भारत पर इसका प्रभाव विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा कम रहा इसका कारण हमारी संस्कृति और ज्ञान ही था। भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व के लिए इस कोरोना काल में मार्गदर्शन की तरह रही।

भारतीय ध्यान परंपरा की प्राथमिकता भारतीय संस्कृति में ही निहित है। भारतीय ज्ञान परंपरा विविध क्षेत्रों में व्याप्त है जैसे—

आयुर्वेद-चरक द्वारा लिखित चरक संहिता, सुश्रुत की सुश्रुत संहिता, बाणभट्टा द्वारा लिखित अष्टांग हृदय को आयुर्वेद मयी ग्रंथ कहा जाता है। आयुर्वेद के महत्व को भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों में भी जाना जाता है।

योग क्षेत्र योग एवं बहुआयामी शब्द इसने हमें वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई थी कृष्ण ने कर्मयोग भक्ति योग, ज्ञान योग के बारे में बताकर संपूर्ण मानव जीवन का उद्धार किया। जब पांचों ज्ञानेन्द्रिया अपने विषय उपरांत होकर मन के साथ स्थिर हो जाती है एवं बुद्धि भी विविध चेष्टायों से निवृत्त हो जाती हैं उसी परम गति की स्थिति को योग कहते हैं।

भारत में पंतजलि योग के प्रणेता स्वामी रामदेव विश्व प्रसिद्ध हैं उपनिषदों में आसन, जितने भी जीव जातियां हैं उतने ही प्रकार के आसन हैं शांडिल्य उपनिषद में इनका वर्णन है योग कुंडलिनी उपनिषद में प्राणायाम के लिए शरीर में स्थित वायु को प्राण तथा कुंभक को आयाम कहते हैं। अतः प्राणायाम अर्थात् शरीरस्य वायु को कुंभक द्वारा रोकना है।

ध्यान शरीर के जिन-जिन स्थानों में धारणा का विधान किया गया है उन्हीं स्थानों में चित्त की एकाग्रता को लगाना। बहुधा ओंकार ध्यान का विधान बताया है। समाधि जब पाँचों ज्ञानेन्द्रिय मन के साथ आत्मा में केन्द्रित स्थित हो जाए उसे समाधि कहते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने कहा यदि भारत को समृद्ध, सशक्त आत्मशक्ति से संपन्न राष्ट्र बनाना है तो उपनिषाद पढ़ना चाहिए।

संदर्भ (म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी रचना जुलाई अगस्त 2024)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की बात करें तो यह वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा को लेकर चलती है भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता वर्तमान में और अधिक बढ़ी है। हम मानवीय मूल्यों और आदर्शों के साथ विकास की बात करते हैं भारतीय संस्कृति में रिश्तों को तोड़ने की नहीं बल्कि सांसों के साथ संबंध बनाने की अवधारणा है। प्रेम एक आदर्श है। हमारे यहाँ शून्य गणित में एक अंक है वहीं साहित्य में अनुभूति का विषय बन जाता है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा नैतिक मूल्यों, प्रेम, सौहार्द को बढ़ावा देती है।

प्राचीन समय से ही भारत वाणिज्य संबंधी कार्यों में बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। ज्ञान परंपरा का उद्देश्य प्राचीन भारत को समझना है पूर्व में व्यापार की पद्धति क्या थी व्यवसाय कैसे होता था अलग-अलग देशों में पायी जाने वाली इसी विविधता के कारण व्यापार प्रणाली भी प्रभावित होती है उदाहरण के लिए भारत में विभिन्न राज्यों में लेखा पद्धति तथा वित्तीय नव वर्ष में अंतर पाया जाता है विभिन्न जातियाँ, विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित रहती है इन सभी का प्रभाव व्यापार प्रणाली पर पड़ता है। इसके लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली का ज्ञान आवश्यक है ज्ञान प्रणाली का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में जैसे कृषि व्यवसाय पशुपालन, डिस्य पालन में किया जाता है यह सभी रोजगार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम कैरियर, रोजगार, व्यवसाय, शोध, अनुसंधान समाजिक व सांस्कृतिक अवसर की खोज की जाती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से रोजगार के अवसर

1. व्यापारिक एवं व्यवसायिक अवसर

2. कार्पोरेट अवसर
3. सामाजिक सांस्कृतिक नेटवर्किंग के अवसर
4. सेना
5. सिविल सेवा के अवसर
6. करियर एवं अनुसंधान के अवसर
7. भारतीय खेल में अवसर
8. नृत्य, कला, संगीत, शिल्प, विनिर्माण में अवसर

निष्कर्ष ज्ञान परंपरा में से भविष्य में युवाओं के लिए भविष्य में कई अवसर मिलने के साथ ही व्यवसाय एवं वाणिज्य गतिविधियों में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता आत्मविश्वास मनुष्य को आत्मनिर्भरता के विभिन्न सोपानों की ओर अग्रसर करता है। आत्मनिर्भर भारत महती लक्ष्य की प्राप्ति का राष्ट्रीय शिक्षा 2020 एक सुनिश्चित प्रारूप है। शिक्षा नीति का बल अनौपचारिक शिक्षा पर और वाचिक परंपरा पर भी है। यह दो ध्रुवों को साधने वाली नीति है। महामना मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा के ज्ञान, मातृ भाषाओं का महत्व, साहित्य धर्म दर्शन की शिक्षा, कृषि और कला कौशल की शिक्षा आयुर्वेद शिक्षा पद्धति को केन्द्रीय स्थान दिया था, हमारे व्यक्तित्व में अखंडता एवं पूर्णता के लिए भारत को जानना आवश्यक है।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूरे विश्व को संबोधित करते हुए बताया कि ज्ञान बोध प्रजा के समस्त भारतीय अपयव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित है। इसके क्रियावयन से भारत को शिक्षित सुविधा स्वस्थ संपन्न, सशक्त समर्थ एवं आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने तथा ज्ञान की दुनिया की महाशक्ति बनाने का संकल्प अवश्य सिद्ध होगा।

## संदर्भ

1. संदर्भ (एनईपी 2020 के माध्यम से भारतीय शिक्षा) भारतीय तीय ज्ञान प्रणाली और भारतीय भाषाओं का एकीकरण जुलाई 6, 2022 उ. प्र. समाधार
2. संदर्भ (वर्माना डॉ. साक्षी 2023)



## भारतीय ज्ञान परम्परा एक दृष्टि

डॉ. बीना शर्मा

**प्रस्तावना** -प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों में आस्था को पुनर्जीवित करना है। परम्परा लोगों के विश्वासों और व्यवहारों को कहते हैं जिनका अतीत में विशेष संबंध रहा है। जो बिना व्यवधान के श्रृंखला रूप में जारी रहती है। सदियों से मानव सभ्यता को आकार देती रही है। यह सीमाओं से परे है। हमारी भारतीय संस्कृति में सदियों से विज्ञान, कला, गणित, खगोल, आयुर्वेद, दर्शन जैसे अन्य क्षेत्रों में योगदान दिया है। भारतीय मनीशियों ने गहन चिंतन और अनुसंधान किया है। जिससे वैश्वविक स्तर पर सभी ने समझा। आज हमारे सामने अनेक समस्याएं हैं जनका समाधान भारत के प्राचीन ज्ञान-विज्ञान में है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को अध्ययन- अध्यापन, लेखन-पठन पर विशेष रूप से केन्द्रीत करने का प्रयास किया गया है। वह स्वयं को पहचानने का एक प्रयास है।

भारतीय प्राचीन मूल्यों पंच महायज्ञ, सोलह संस्कार, तीन ण, भारतीय ज्ञान विज्ञान भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति, वेदों उपनिषदों, पुराणों में निहित व्यवहारिक ज्ञान तथा अष्टांग योग, प्रकृति के प्रति ग्रंथों में दृष्टिकोण आदि के प्रति वर्तमान परिस्थितियों में एक दृष्टिकोण विकसित करना है।

**भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक आवश्यकता के कारण**-भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता है क्योंकि इसमें विशेष दृष्टिकोण है जो समग्रता से सोचता है। सभी के कल्याण की बात करता है। हमारा ज्ञान, विज्ञान, जीवन दर्शन शामिल है। जो अनुभव, प्रयोग, कठोर विश्लेषण से विकसित हुआ है। जिसमें हमारी शिक्षा, कला,



प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, विनिर्माण और वाणिज्य आदि सभी को प्रभावित किया है। यह दुनियां में अपने ज्ञान और अनुभव का महत्व समझाती है।

शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता भारतीय संस्कृति के संवर्धन के लिये, संरक्षण के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा आवश्यक है। हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की बात की गई है। विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया है। एनईपी 2020 ने न केवल गौरवशाली अतीत को मान्यता दी है बल्कि प्राचीन भारत से विद्वानों जैसे—चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, बराहमिहिर, मेंत्रेयी गागी आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान पाठ्यक्रम में स्कूल, विश्वविद्यालय स्तर तक शामिल किया है।

संपूर्ण वैदिक वांगमय, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतिग्रंथ दर्शन, काव्य, नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष को भी समाया है। संस्कृत भाषा को भी लिया है ये सभी भारतय सभ्यता संस्कृति के रक्षक हैं। जिससे संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। नासा ने संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर के लिये सर्वोत्तम माना तथा अंतरिक्ष में संदेश प्रेषण के लिये सबसे उत्कृष्ट माना। आज अमेरिका, जर्मनी आदि संस्कृत के क्षेत्र में नित् नये अनुसंधान कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद ने संस्कृत के महत्व को पहले ही बता दिया था कि संस्कृत में पंडित होने से ही कोई भी तुम्हारे विरुद्ध कुछ कहने का साहस न कर सकेगा। हमें भविष्य की ओर भी दृष्टि करना है पर जहां तक हो सके अतीत की ओर भी देखो, पीछे जो चिंतन निर्झर बहर रहा है। आकंट उसका जल पियो। कौन सा खून हमारी नसों में बह रहा है। अतीत के कृतित्व पर भी ध्यान दो। अतीत गौरव के ज्ञान से हम आवश्यक ऐसे भारत की नींव डालेंगे जो पहले से श्रेष्ठ होगा।

बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना आवश्यक है। आधुनिकता के दौर में आगे जा रहे हैं। अपने पुराने रीति-रिवाज, संस्कृति में निहित ज्ञान परम्परा को भूल रहे हैं। यह आज शिक्षा के क्षेत्र में देखा जा सकता है जहां विद्यार्थियों के लिये नैतिक मूल्य शिक्षा भी आवश्यक हो गई है। उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य तक कैसे पहुंचा जा सकेगा। शिक्षा में मूल्यों और ज्ञान जरूरी है। इसी उद्देश्य से एनआईओएस ने वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा और साहित्य दर्शन, भारतीय

ज्ञान के अन्य क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने के लिये एक नई स्टीम के अंतर्गत-स्कूल, कॉलेजों में संस्कृत और हिंदी माध्यम में पांच पाठ्यक्रम भी विकसित किये हैं—वेद अध्ययन, संस्कृत व्याकरण, भारतीय दर्शन, संस्कृत साहित्य, संस्कृत (भाषा विषय) पाठ्यक्रम में रामायण, महाकाव्य आदि की कथाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रति जागृति लाना है। साथ ही योग, आसन, प्राणायाम, एकाग्रता और स्मृति विकास के साथ-साथ सभी का समग्र विकास के लिये पाठ्यक्रम है। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर इसके महत्व को समझते हुये विदेशों से भी सांस्कृतिक संबंधों पर बल दिया गया है। एनआईओएस ने प्रवासी अध्ययन केन्द्र स्थापित किया है जिसका लक्ष्य -वसुधैव कुटुम्ब की भावना के प्रकाश में सार्वभौमिक बंधुत्व और शांति स्थापित करना है।

हमारी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिये वेद-पुराण, उपनिषद्, योग हैं। इन वेद पुराणों में अर्थ का अनर्थ कर दिया गया है। उदाहरण के लिये-यज्ञ में पशु बलि को बढ़ावा दिया गया, यह गलत है क्योंकि हमने अर्थ का अनर्थ कर दिया। यहां अज या यज्ञ का अर्थ पुराने चावल भी है और बकरा भी। यज्ञ का उद्देश्य वातावरण को शुद्ध करना और जनकल्याण है ना कि बलि देना। वेदों में बलि का अर्थ दान या उपहार है। पर मांस भक्षियों ने अपना स्वार्थ देखा।

**योग**-योग का अर्थ संकुचित लिया गया जबकि इसने वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है। 'युज्यते अनेन इति योगः' अर्थात् जिसके द्वारा जोड़ा जाये वह योग है। कृष्ण भगवान ने कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञान योग को बताकर, संपूर्ण मानव जीवन को तीन भागों में बांट दिया है। योग व्यक्ति को ब्रम्हांड से, आत्मा को परमात्मा से व साधक को साध्य से जोड़ने का साधन माना है। सभी विद्यार्थियों को गीता का पाठ अवश्य करना चाहिये।

उपनिषद् और पुराण ज्ञान की अमूल्य निधि हैं। उपनिषद् में विभिन्न संवाद, आत्मा की जागृति, सुशुप्ति, स्वप्न तथा तुरीय अवस्थाएं स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर, कर्म सिद्धान्त पर जितनी भी रिसर्च की जाये, कम ही रहेगी। मनु के अनुसार-“सभी जीव अपनी पुरानी पीढ़ियों के जीवित रहने की क्षमता को अपनाकर आगे बढ़ते रहे।”

अगस्त संहिता में विद्युत उत्पादन संबंधी सूत्रों का मिलना तथा करोड़ों पांडुलिपियां आज भी शोध का इंतजार कर रही हैं। ताकि ज्ञान विज्ञान की परम्परा को यथोचित स्थान मिल सके। हमारी स्थिति उस कस्तूरी मृग के समान है जिसे स्वयं की सुगंध का ज्ञान नहीं है। हमें इसी ज्ञान को पुनर्जीवित करना है।

आयुर्वेद में एनाटॉमी, फिजियोलॉजी, भ्रूण विज्ञान, पाचन, चयापचय और प्रतिरक्षा का गहरा ज्ञान मिलता है। जो हमारे पुराने िश्यों की खोज थी जो हमारी पाश्चात्य संस्कृति में कहीं खो गई। जिसको आज के संदर्भ में पुनः जीवित करना है।

भारतीय परम्परा में अनेक िशि, मुनि, महात्मा हुये। जिन्होंने भारत के गौरव को बढ़ाया। यहां पर स्वामी विवेकानंद की बात करेंगे। विवेकानंद का धार्मिक दर्शन वेदांत दर्शन से प्रभावित रहा। वेदांत दर्शन व्यक्ति को संसार से दूर रहने की बात नहीं करता बल्कि समस्त संसार की ब्रम्हमय मानते हुये कर्म करने की प्रेरणा देता है। वेदांत का ज्ञान व्यक्ति की दिनचर्या को व्यवस्थित करता है। वेदों का ज्ञान समाज और व्यक्ति के बीच समन्वय स्थापित करता है। उनका कहना था कि हम सभी धर्मों से प्रेम करना सीखे तो सार्वभौम धर्म को स्वतः बल मिलेगा।

स्वामी जी का मत था कि सभी मार्ग एक सच्चे ईश्वर की ओर ले जाते हैं। उनका बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने का एक मजबूत इरादा था। धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिये कोई स्था नहीं था। इस ऐतिहासिक व्याख्यान के बाद यूरोप का भी दौरा किया।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने लिखा है कि-“स्वामी जी इसलिये महान है क्योंकि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया। देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान और आत्म विश्वास आत्मसात किया है।”

स्वामी जी ने युवाओं के लिये कहा था कि- ‘उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए’। युवाओं में लोहे जैसे मांसपेशियां और फौलादी नस्ले हैं, जिनका हृदय वज्र तुल्य संकल्पित है। युवाओं पर ही भविष्य टिका है।

वेदांत के तीन सोपानों के प्रति विवेकानंद के विचार-

“दर्शन द्वैतवाद से प्रारंभ होकर, विशिष्टाद्वैत से होता हुआ, शुद्ध अद्वैतवाद में विकसित होता है।” मानव के चरित्र निर्माण के साथ धर्म की सत्यता को समझाता है। विवेकानंद के बाद भी उनके कार्य और उद्देश्य वर्तमान भारत में प्रासंगिक है। उनका उद्देश्य मानव चरित्र निर्माण से होता हुआ राष्ट्र निर्माण से होकर वसुधैव कुटुम्बकम् है।

आज नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की नीति है। स्वामी विवेकानंद जी के वैज्ञानिक दृष्टि नैतिक मूल्य, नये भारत के निर्माण की दृष्टि के

अनुरूप है। शिक्षा में मातृभाषा को बढ़ावा देना, संस्कृत ज्ञान तथा समावेशी शिक्षा के लिये प्रावधान के साथ-साथ व्यवसायिक शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2047 तक 50 प्रतिशत बढ़ाना है। आज सभी सरकारें विश्वविद्यालय और शिक्षण संस्थाएं 2030 तक एनईपी 2020 को लागू करने की तैयारी में हैं।

स्वामी जी ने विज्ञान प्रौद्योगिकि की कल्पना की थी। स्वामी जी से प्रेरित होकर जमशेद जी टाटा ने भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलुरु की स्थापना की। स्वामी जी का जीवन दर्शन भारतीय युवाओं के लिये प्रेरणा है।

मोदी जी ने कहा है कि-हमें जिन्होंने बताया कि हमारी नैतिक बल की कमी, राष्ट्रीय चरित्र का अभाव व देश के प्रति अपने दायित्वों को समझने की असमर्थता आज भी हमें तरक्की के मुकाम तक नहीं ले जा पा रही है। स्वामी जी का राष्ट्रवाद का सिद्धांत एक मार्गदर्शन प्रेरणास्त्रोत सिद्ध हो सकता है। वे समाज में मानवीय और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के पक्षधर थे।

**निष्कर्ष** - भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता आज भी है जो भटके हुये को रास्ता दिखाने के लिये आवश्यक है। बहुविध शिक्षा, संपूर्ण विकास, जड़ से जग तक, मानव से मानवता तक की बात, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समाहित है। हमारे वेद, उपनिषद्, पुराण, आख्यान, बौद्ध जैन, धर्म में कही बातों को उचित रूप से प्रतिबिम्बित करने की आवश्यकता है। स्वयं को किसी चीज से वंचित न करो। अच्छी बातों को ग्रहण करना ही इस नीति का उद्देश्य है। आज शिक्षा छात्रों में ज्ञान कौशल एवं जानकारी तो प्रदान करती है परंतु संस्कार, नैतिकता, आचरण में शुद्धता, जीवन मूल्यों का विकास करने में पूर्णतया असमर्थ है। जबकि भारत का गुरुत्व इसी में है कि-

सारा जहां परिवार हमारा,  
मन मनुज कल्याण में,  
सांपों को भी दूध पिलाते।  
काग खुश पकवान में,  
राब राम की चींटी को तो  
गौ-कुत्ते भी ध्यान में,  
पाहन में भी ब्रम्ह दिखाया,  
गिन लिया भगवान में।

**संदर्भ ग्रंथ**

1. प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह, टाटा इंस्टी, ऑफ सोशल साईस-समाचार पत्र दैनिक भास्कर
2. भारतीय ज्ञान परम्परा बोध, डॉ. उमेश कुमार सिंह, हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
3. वैदिक ज्ञान विज्ञान कोश, आधुनिक परिप्रेक्ष्य में –संपादक डॉ. मनोदत्त पाठक पृ.सं. 489
4. मनुस्मृति 3/70
5. राश्ट्रीय शिक्षा नीति-2020



## भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण में गृहविज्ञान की प्रासंगिकता

डॉ. सपना श्रीवास्तव

**सारांश**— भारतीय ज्ञान परंपरा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद श्रुति स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबंधन एवं विज्ञान विद्या शाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भंडार है भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध प्रज्ञा बगीशा एवं भारतीय इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है भारतीय ज्ञान परंपरा में शारीरिक शिक्षा एवं मानसिक आवश्यकता का समाधान योग है शिक्षा केवल व्यक्ति विकास के लिए नहीं अपितु समूचे समाज के विकास के लिए और समग्र मानवता के विकास के लिए ही है भारतीय ज्ञान परंपरा में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का विश्लेषण करने का प्रयास करता है सशक्तिकरण सामाजिक विकास की मुख्य प्रक्रिया है जो महिलाओं को आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सतत विकास में भाग लेने में सक्षम बनाती है सशक्तिकरण समाज में पारंपरिक रूप से वंचित महिलाओं के लिए है दैनिक जीवन में कैसे महिलाएं विभिन्न सामाजिक बुराइयों का शिकार बनती हैं इसलिए महिलाओं की क्षमता का विस्तार करने उन्होंने सभी प्रकार की हिंसा से बचने की जरूरत है भारत की महिलाएं अपेक्षा त आसक्त हैं और सरकार के किए गए प्रयासों के बावजूद हुए पुरुषों से कम है महिलाओं द्वारा आसमान लैंगिक मापदंडों की स्वीति अभी भी समाज में प्रचलित है महिलाओं को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना और विभिन्न योजनाओं को लागू करना महिला सशक्तिकरण के लिए सक्षम कारक है।

**प्रस्तावना**— भारतीय ज्ञान प्रणाली का अध्ययन करने पर विद्यार्थी का सर्वणीय विकास करना उसे समस्त उपयोगी बनाना ज्ञान एवं विज्ञान, कर्म एवं धर्म और अपनी ज्ञान परंपरा से जोड़ना है इसका आधार भारतीय ज्ञान परंपरा के केंद्र में स्तंभ मानना है नई पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभिनव पहल की है।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता बहुआयामी है इसमें शिक्षा की अहम भूमिका है यह महिलाओं को जागरूकता और चेतना से जुड़ी है जिससे उनमें अपने अधिकारों की सजकता होगी। संविधान जानता है कि महिलाओं के साथ समाज में बुरा व्यवहार किया जाता है इसे लेकर महिलाओं की भलाई के लिए कुछ विशेष उपबंध बनाये जाए। संविधान का अनुच्छेद 15 यह बताता है कि भारत राज्य केवल धर्म, मूल्य, वंश, जाति, लिंग जन्म स्थान के आधार पर किसी नागरिक के विरोध असमानता का व्यवहार नहीं करेगा। अनुच्छेद 39 में पुरुषों और महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन मिलेगा। राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम 1990 में रहकर महिला कल्याण हेतु कार्य किए गए इसमें महिलाओं के हितों की रक्षा करना है अधिनियम द्वारा यह है वाद्य किया जाता है कि सरकार महिला संबंधी हर मुद्दे पर आयोग से सलाह करें समाज में महिलाओं को हर तरफ से प्रताड़ित किया गया। जब भी किसी स्त्री ने बचाव के लिए प्रयास किया तो उसे अभिचारणी, बदचलन ठहरा दिया गया। उसे आगे बढ़ते देख कुचलने का प्रयास किया गया। वह घर और बच्चों के प्रति जिम्मेदारी निभाती है लेकिन उसे प्यार की जगह प्रताड़ना मिलती है महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता उसके विकास के साथ-साथ गुलामी के विकास का भी दस्तावेज है घरेलू हिंसा कानून भारतीय नारी को गुलामी से बाहर निकलने का बेहतरीन अवसर है।

महिला होने के नाते पहले वह समाज की अनिवार्य इकाई है उसे अपने आप में यह एहसास जगाना होगा कि वह स्त्री ही नहीं बल्कि देश की सम्मानित नागरिक भी है।

**मुख्य शब्द :-सशक्तिकरण, महिला, गृहविज्ञान शिक्षा, विकास**

**महिला सशक्ति के कारण के अंतर्गत गृह विज्ञान की शिक्षा**—गृह विज्ञान की शिक्षा लड़कियों को केवल शिक्षित एवं डिग्री प्राप्त करने के लिए ही नहीं बल्कि उन्हें व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक रूप से पूर्व विकास प्राप्त करने के लिए तैयार की गई है। महिलाओं को निम्न रूपों से सशक्त बनाया जा सकता है

● **आर्थिक** :-गृह विज्ञान की शिक्षा से उनके जीवन के दो प्रमुख लक्ष्य घर और परिवार की देखभाल करना तथा दूसरा एक उज्ज्वल अजिविका की प्राप्ति के लिए प्रशिक्षित करना है इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ेगा और समाज के बीच अपनी विशेष पहचान बना पायेगी।

● **सामाजिक** :-महिलाओं के खिलाफ होने वाली हिंसा चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक, घरेलू हो या सामाजिक को समाप्त किया जा सकता है विभिन्न नियमों के बारे में महिलाओं को जागरूक करना है उदाहरण के लिए घरेलू हिंसा अधिनियम(2005)दहेज निषेध अधिनियम(1961)बाल विवाह निरोधक अधिनियम(1929) आदि के द्वारा महिलाओं का संरक्षण इस प्रकार महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण होगा।

● **व्यक्तिगत** :-गृहविज्ञान की शिक्षा हर नारी के जीवन से जुड़ी है जैसे स्वास्थ्य पोषण, भोजन, शारीर, क्रिया विज्ञान, समय प्रबंधन, धन प्रबंधन, परिवार नियोजन, बाल पालन, वस्त्र विज्ञान, उद्यमिता संचार, मानव विकास आदि का ज्ञान प्रदान करती है। एक गृह विज्ञान की शिक्षा ही महिला को जीवन जीने की हर महिला को सुचारू रूप से व्यवस्थित तरीके कैसे जीवन व्यपन करने का ज्ञान प्रदान करती है यह ज्ञान इससे अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक मामलों में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। गृह विज्ञान शिक्षा महिला और लड़कियों को शिक्षा के लिए सामान अवसर सुनिश्चित करती है। गृह विज्ञान की शिक्षा में महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी पोषण आहार एवं मानव विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। जब महिला यह ज्ञान प्राप्त करती है तो वह अपने साथ-साथ पूरे परिवार को इस ज्ञान को अवगत कराती है।

● **राजनीतिक** :-गृह विज्ञान शिक्षा न केवल परिवार में महिलाओं की स्थिति को पहचानने में बल्कि लोगों के आर्थिक और सामाजिक विकास में भी योगदान देती है। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को सामुदायिक विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाने की उनकी क्षमता का बोध कराती है। कई गृह वैज्ञानिक महिलाएं ग्राम सभाओं में भाग ले रही हैं और समुदाय के विकास के लिए काम कर रही हैं। आजकल महिलाओं के नेतृत्व क्षमता को समाज के द्वारा भी मान्यता दी गई है।

गृह विज्ञान की शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने जैसे आवसायिक कौशल, रोजगार के



अवसर, आय अर्जन करना, आहार एवं पोषण संबंधी उचित तथा सही जानकारी से महिलाओं के स्वास्थ्य तथा लिंग भेदभाव, भ्रूण हत्या किशोरावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक होने वाली समस्याएँ, गृह प्रबंधन तथा वस्त्र विज्ञान एवं भोजन संबंधी आवश्यकताओं का ज्ञान हमें गृह विज्ञान की शिक्षा से ही प्राप्त होता है। गृह विज्ञान की शिक्षा ही महिलाओं ने नारी शक्ति को बाहरी दुनिया के कार्यक्षेत्र में भी स्थापित किया है। गृह विज्ञान की शिक्षा ने यह साबित कर दिया है कि महिलाएं गृह निर्माता होने के साथ-साथ एक शिक्षक, शोधकर्ता उद्यमी और प्रशासक भी हो सकती हैं इस प्रकार गृह विज्ञान शिक्षा जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की उपयोगिता और सार्थकता को साबित करती है तथा महिलाओं में आत्मविश्वास की प्रेरणा जागृत करती है। उन्हें सशक्त जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

● **महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयास/बाधाये**  
:-भारत सरकार ने विभिन्न गरीबी उन्मूलन और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को लागू किया महिलाओं के लिए विशेष घटक है वर्तमान में भारत सरकार के पास विभिन्न विभागों और मंत्रालयों द्वारा संचालित महिलाओं के लिए 37 से अधिक योजनाएं हैं।

इसमें से कुछ इस प्रकार हैं :-

1. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)
2. लगभग 9000 गांव में महिला समाख्या क्रियान्वित की जा रही है
3. (अजीविका) और इंदिरा आवास योजना(SAY)
4. जेंडर बजटिंग योजना (11वीं पंचवर्षीय योजना)
5. सिडबी की महिला उद्यम निधि महिला विकास निधि
6. एनजीओ की क्रेडिट योजनाएं
7. कामकाजी और बीमार मां के बच्चों के लिए क्रेश/डे केयर सेंटर
8. राष्ट्रीय महिला अधिकारिता मिशन।
9. राष्ट्रीय महिला कोष(आरएमके) 1992-1993
10. किशोर लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए राजीव गांधी योजना 2010 (आर.जी.एस.ई.ए.जी)(2010)
11. स्वालंबन

12. महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम(STEP) के लिए।
13. एकी त बाल संरक्षण योजना (आई.सी.पी.सी.एस 2009-2010)
14. स्वाधार
15. स्वयंसिद्धा
16. षि और ग्रामीण विकास योजना के लिए राष्ट्रीय बैंक।
17. खादी और ग्रामोद्योग आयोग।
18. कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास।
19. उज्ज्वला योजना(2007)
20. कामकाजी महिला मंच।
21. महिला शक्ति केंद्र(2017)
22. महिला उद्यमिता के लिए ई-हॉट(2016)
23. अन्नपूर्णा योजना।
24. महिलाओं द्वारा महिला उद्योग और स्टार्टअप का आर्थिक सशक्तिकरण
25. महिलाओं द्वारा कम ब्याज पर लिए गए ण।
26. किफायती आवाज के लिए कामकाजी महिला छात्रावास।
27. सुकन्या समृद्धि योजना (SSY)
28. बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ योजना।
29. प्रधानमंत्री रोजगार योजना (पी.एम.आए.बाई)
30. धनलक्ष्मी(2008)
31. एसबीआई की श्री सखी योजना।
32. महिला समिति योजना।
33. इंदिरा महिला केंद्र।
34. महिला समृद्धि योजना (MSY)अक्टूबर 1993
35. इंदिरा प्रियदर्शनी योजना।
36. शॉर्ट स्टे होम्स।

मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजनाओं का उद्देश्य किसी भी प्रकार की हिंसा से पीड़ित महिलाओं को पारिवारिक सहायता नहीं मिलती है तो जीवन मापन करने के लिए सभी रास्ते बंद हो जाते हैं एवं ऐसी कठिन परिस्थितियों के लिए परिवार एवं समाज में पुनर्स्थापित होने हेतु विशेष सहयोग की आवश्यकता होती है यदि किसी भी पीड़ित महिला की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम से जोड़ दिया जाए तो वह स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार का भी भरण पोषण का सकती है इन सब योजना का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करना और महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर बढ़ाना और साथ ही साथ आपात स्थिति में महिलाओं की सहायता करना।

#### सशक्तिकरण के मार्ग में आई बाधाओं को दूर करने के उपाय :-

- स्त्री को योन शुचिता और नैतिकता से मुक्ति उदाहरण के लिए अगर किसी महिला के साथ अभीचार हुआ हो तो उसका तिरस्कार नहीं किया जाए।
- स्त्री देह को व्यभिचार से ना जोड़ा जाए अपितु मनुष्य होने के नाते समाज का एक सभ्य नागरिक होने की छवि से देखा जाए।
- स्त्रीस्वतंत्रता के लिए पुरुष की मानसिकता में भी बदलाव जरूरी है।
- नयी तकनीकी और विज्ञान महिलाओं को मुक्त कराते हैं खासकर शारीरिक श्रम वाले रोजगार से। वहीं महिलाओं को कुछ हद तक अंधविश्वासों तथा भारी भरकम कामों से मुक्त किया है
- स्त्री सशक्तिकरण 'स्व' का निर्माण करता है इसे अपने आत्मनिर्भरता की आवश्यकता है।

आज सभी महिला उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम है तथा कार्य के अवसरों का लाभ ले रही हैं इसलिए कुछ धन अर्जित करने के लिए खुद का व्यवसाय प्रारंभ करना बेरोजगारी से निपटने का अच्छा तरीका है।

#### गृह विज्ञान का महिला सशक्तिकरण में योगदान

आदिकाल से हमारे भारत को पुरुष प्रधान देश माना जाता आ रहा था। इसमें पुरुषों को ही ज्ञान प्राप्त करने का ज्यादा अधिकार था अपेक्षा त महिलाओं से, ऐसे में महिलाएं शिक्षा से वंचित रह जाती थी परंतु बदलते परिवेश में ऐसा नहीं है महिला भी

पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर आगे बढ़ रही है और हमारे भारत देश में जितना अधिकार हर क्षेत्र में पुरुषों का है उतना ही अधिकार महिलाओं का भी हो गया है महिला भी हर क्षेत्र में अग्रणी हो रही है चाहे वह क्षेत्र, शिक्षा, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान परंपरा या कंप्यूटर या हवाई जहाज की शिक्षा का क्यों ना हो, वह क्षेत्र में अपना पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रही है इसी में गृह विज्ञान की शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने में तथा महिलाओं को गृह निर्माता होने के साथ-साथ एक शिक्षक, उद्यमी और प्रशंसक आवसायिक कौशल, तकनीकी सेवाएं, रोजगार और आय अर्जुन के अवसर प्रदान करती हैं गृह विज्ञान की शिक्षा द्वारा एक महिला परिवार को संपूर्णता प्रदान करती है। जिसमें उसे धन के साथ ही आत्म संतुष्टि एवं प्रशंसा मिलती है तथा महिला में आत्मविश्वास जागृत होता है गृह विज्ञान की शिक्षा के द्वारा बालिकाओं के अधिकारों का उल्लंघन एवं उनके खिलाफ भेदभाव को भी समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है महिलाओं को प्रसव पूर्व लिंग परीक्षण, भ्रूण हत्या, बाल विवाह जैसी कुरीतियों को रोका जा सकता है और महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है और साथ ही साथ गृह विज्ञान शिक्षा में संसाधन प्रबंधन, भजन और पोषण, मानव विकास, वस्त्र और परिधान जैसे कई विषयों से महिलाओं को परिचय कराया जाता है यह सब विषय एक मापक डोमेन है जो उस क्षेत्र में विशेषज्ञता के विशिष्ट क्षेत्रों और करियर के अवसर बनाने में महिलाओं की मदद करता है।

### उपसंहार

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला है कि वर्तमान समय में भारतीय महिलाओं को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ते हुए एक गृह विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने का सुनहरा अवसर मिला है हर महिलाओं को वह विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने से उसमें सशक्त जीवन यापन करने की क्षमता जागृत होती है तथा वे आत्मविश्वास के साथ-साथ आत्मनिर्भर बनाने तथा अपना और अपने पूरे परिवार का भरण पोषण करने की उत्तरदायित्व अपने कंधों में बखूबी उठा सकती हैं तथा अपना जीवन सुखमय संतोषजनक भी जी सकती हैं। महिला सशक्तिकरण न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण चिताओं में से एक बन गया है इसमें अगर महिलाएं आगे बढ़ती हैं तो परिवार आगे बढ़ता है गांव आगे बढ़ता है और देश आगे बढ़ता है इसलिए महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता है समाज को एक ऐसा माहौल

बनाने की पहल करनी चाहिए जिसमें सरकार द्वारा महिला विकास के लिए बनाई गई योजनाओं से उन्हें उचित लाभ मिल सके। महिलाओं को समानता की भावना के साथ देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में स्वयं निर्णय लेने और भाग लेने का पूरा अवसर मिलना चाहिए

### संदर्भ सूची

1. मनुस्मृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
2. विवेकानंद स्वामी “ भारतीय नारी” राम ण्ण मठ, नागपुर, पृष्ठ संख्या-10
3. महिला सशक्तिकरण की राजनीतिक अवधारणा।

<https://www.ijrst.com>

4. झा कन्हैया(2022) शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा की अनिवार्यता  
“दैनिक जागरण संपादकीय आलेख”



## भारतीय ज्ञान परम्परा एवं बीमा व्यवसाय

पूजा सेन

अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है। शिक्षा जानकारीयों का ढेर नहीं है, जो मस्तिष्क में पड़ी रहकर सड़ाँध पैदा करती है। कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता, सब अंदर ही है। मनुष्य जो कुछ सीखता है, वह वास्तव में आविष्कार करना ही है। आविष्कार का अर्थ है, मनुष्य का अपनी अनंत ज्ञानस्वरूप आत्मा के ऊपर से आवरण को हटा लेना। डेलर्स आयोग के अनुसार, खजाना अंदर ही है, उसे अंदर जाकर खोजना और बाहर निकालना ही शिक्षा है।

शिक्षा के माध्यम से चरित्र-निर्माण तथा व्यक्तित्व का विकास होता है। चरित्र-निर्माण एक साधना है और व्यक्तित्व विकास एक आध्यात्मिक यात्रा है। बालक एक बोतल नहीं है, जिसमें जानकारी भर दें और उसपर ढक्कन लगा दें। बालक एक आध्यात्मिक प्राणी है। उसके अंदर की ऊर्जा तथा आध्यात्मिकता को प्रगट करने के अवसर प्रदान करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। शिक्षा केवल व्यक्ति-विकास के लिए नहीं, अपितु समूचे समाज के विकास के लिए और समग्र मानवता के विकास के लिए ही है। शिक्षा का स्वरूप अखंडमंडलाकार है। शिक्षा के माध्यम से हम सप्तपदी यात्रा पूर्ण करते हैं। हम अहम् से वयम् से सर्वम् तक जाते हैं। व्यष्टि से समिष्ट तक पहुँचने का उपक्रम शिक्षा के माध्यम से ही होता है। कहा जाता है कि शिक्षा आम आदमी के लिए है। आम आदमी तो कोई भी नहीं होता। हम सब परमपिता परमात्मा की संतानें हैं, परंतु हम आवरणों के कारण से अपने को नहीं पहचानते हैं। आवरण हटते ही हम कहने लगते हैं—मैं तो था उसी का ही श्वास, जिसे चुरा लाया यह विश्व समीर शिक्षा का संबंध देश की धरती तथा देश की संस्कृति से जुड़ा होना आवश्यक है। यूनेस्को ने ठीक ही कहा

है किसी भी देश की शिक्षा उसकी धरती तथा संस्कृति से जुड़ी होनी चाहिए। शिक्षा जीने और जीवन के लिए है, अर्थात् हम स्वावलंबी बनते हैं तथा जीवन जीने की कला भी सीखते हैं। हम जब कहते हैं कि शिक्षा व्यवसाय आलंबित होनी चाहिए, तो हम व्यक्ति को केवल व्यवसाय के लिए ही शिक्षित करना चाहते हैं। अपितु गांधीजी के अनुसार, शिक्षा रोजगारोन्मुख न होकर, रोजगार उत्पादक होनी चाहिए और जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए होनी चाहिए।

भारतीय परंपरा में धर्म शब्द किसी मत विशेष व किसी प्रकार की पूजा-पद्धति या संप्रदाय का वाचक नहीं। धर्म ऐसे नैतिक नियमों का नाम है, जिससे व्यक्ति का अपना कल्याण होता है तथा उसका पूर्ण समाजीकरण हो सकता है। महाभारत के अनुसार धर्म का अर्थ निम्नलिखित है-

**श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चौवावधार्यताम्**

**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।**

दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार न करना, जो स्वयं अपने आपको रुचिकर न हो, वह ही धर्म है। धैर्य, सहिष्णुता, सत्य, प्रेम, संयम, अपरिग्रह आदि ऐसे सद्गुण हैं, जिनके धारण करने से व्यक्ति का समाज के जीवन के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित हो सकता है। शिक्षा का प्रथम उद्देश्य ऐसे सद्गुणों को उत्पन्न करना है, जिन पर व्यक्ति, परिवार तथा समाज का कल्याण व हित निर्भर है।

धर्म की उक्त व्याख्या से यह स्पष्ट है कि जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को सामाजिक कर्तव्य भावना से ओत-प्रोत होकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना है। शिक्षा का उद्देश्य इस भावना को जाग्रत् रखता है।

डॉ. उल्लेकर ने 'प्राचीन भारत में शिक्षा नामक पुस्तक में लिखा है कि धर्म की भावना, चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, सामाजिक समर्थता की समुन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का विस्तार ही प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य था।

भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केन्द्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्म-निर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। भारतीय ज्ञान

परम्परा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था। जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता था, तब सम्पूर्ण भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर पूर्ण मानव बनाते थे।

- ❖ धार्मिक और सामाजिक सुरक्षा रू भारतीय परंपरा में धार्मिक ष्टि से सुरक्षा और सहयोग की अवधारणाएँ प्राचीन काल से ही मौजूद थीं। उदाहरण के तौर पर, विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में दान, पुण्य, और सहयोग की बातें आती हैं, जो सामाजिक सुरक्षा के समान होती हैं। यह समाज में असमर्थ लोगों की सहायता के लिए था, जैसे कि अनाथों, वृद्धों, और निर्धनों के लिए।
- ❖ सामाजिक बीमा की अवधारणा: भारतीय ग्राम्य समाज में पंचायतों और अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न प्रकार की आपदाओं से निपटने के लिए सामूहिक बीमा जैसी व्यवस्था भी प्रचलित थी। उदाहरण स्वरूप, यदि कोई व्यक्ति किसी दुर्घटना में घायल हो जाता या प्रा तिक आपदा से प्रभावित होता, तो समुदाय उसकी मदद करता था। यह एक प्रकार की सामूहिक बीमा व्यवस्था थी, जिसमें समूहीकरण और सहयोग की भावना थी।
- ❖ वित्तीय प्रबंधन: व्यापार और वाणिज्य में भारतीय सभ्यता में विभिन्न प्रकार के जोखिमों का प्रबंधन किया जाता था। प्राचीन भारत में व्यापारी समूह अपने माल की सुरक्षा के लिए विविध प्रकार की बीमा व्यवस्था का पालन करते थे। उदाहरण के तौर पर, समुद्री व्यापार में समुद्र से संबंधित जोखिमों को कम करने के लिए एक साथ मिलकर व्यापार करने की परंपरा थी। जिसे एक प्रकार के सामूहिक बीमा में देखा जा सकता है।
- ❖ वर्तमान में बीमा का विकास: बीमा का आधुनिक रूप भारतीय समाज में ब्रिटिश शासन के दौरान आया, जब ब्रिटिशों ने भारतीय बाजारों में बीमा कंपनियाँ स्थापित कीं। इसके बाद भारतीय बीमा क्षेत्र ने तेजी से विकास किया, और अब यह देश के आर्थिक और सामाजिक विकास का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। भारतीय बीमा कंपनियाँ अब न केवल जीवन बीमा बल्कि स्वास्थ्य बीमा, वाहन बीमा, संपत्ति बीमा आदि क्षेत्रों में भी कार्य करती हैं।



- ❖ व्यापारिक जोखिमों का प्रबंधन (व्यापारियों की सामूहिक सुरक्षा): प्राचीन भारत में व्यापारियों द्वारा व्यापारिक जोखिमों को कम करने के लिए सामूहिक सुरक्षा की व्यवस्था की जाती थी। जब व्यापारी समुद्र मार्ग से माल भेजते थे, तो समुद्र की लहरों, तूफान या डाकुओं के हमले का जोखिम रहता था। इस प्रकार के व्यापार में यदि किसी व्यापारी को नुकसान होता, तो अन्य व्यापारी या व्यापारी समूह उस नुकसान की भरपाई के लिए सहयोग करते थे। यह एक प्रकार का सामूहिक बीमा था, जिसे आजकल के बीमा प्रणाली से मेल खा सकता है।
- ❖ ग्राम्य और समाजिक स्तर पर सहयोग: प्राचीन भारत में ग्रामों में समुदाय आधारित सहायता व्यवस्था प्रचलित थी। उदाहरण के तौर पर, अगर किसी व्यक्ति की मृत्यु होती, या वह किसी दुर्घटना का शिकार होता, तो उसके परिवार का समर्थन करने के लिए गाँव वाले एकजुट होते थे। यह सहयोगात्मक भावना समाज में आपदा के समय एक प्रकार की बीमा व्यवस्था जैसी कार्य करती थी।
- ❖ धार्मिक और सांस्कृतिक ष्टिकोण: भारतीय समाज में दान और पुण्य अवधारणा भी इस प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था का हिस्सा मानी जा सकती है। धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ और अन्य धार्मिक आयोजनों के माध्यम से समाज के सदस्य एक दूसरे की मदद करने का संकल्प लेते थे। यह भी सामाजिक सुरक्षा के रूप में देखा जा सकता है, जहां बीमा के रूप में सामाजिक सहयोग और मदद की भावना होती थी।
- ❖ विपत्ति से निपटने के उपाय: प्राचीन काल में प्राकृतिक आपदाओं, जैसे कि बाढ़, सूखा, और महामारी, से निपटने के लिए विभिन्न उपाय किए जाते थे। कुछ ऐसे समूह और संस्थाएँ थीं, जो इन विपत्तियों से प्रभावित होने पर एकजुट होकर सहायता प्रदान करती थीं। यह व्यवस्था कुछ हद तक बीमा के आधुनिक रूप जैसी ही थी, जिसमें सामूहिक प्रयास से सुरक्षा सुनिश्चित की जाती थी।
- ❖ वित्तीय सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन: बीमा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में संभावित जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करना है। जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, संपत्ति बीमा, और वाहन बीमा जैसी सेवाएँ लोगों को

प्रातिक आपदाओं, दुर्घटनाओं, बीमारियों, और अन्य अनहोनी घटनाओं के प्रभाव से बचाती हैं। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन को सुरक्षित करता है, बल्कि परिवारों को आर्थिक संकट से भी बचाता है।

- ❖ आर्थिक विकास में योगदान: बीमा उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह रोजगार सृजन, निवेश और वित्तीय सेवाओं की सुविधा प्रदान करता है। बीमा कंपनियाँ देश के बुनियादी ढांचे में निवेश करती हैं, जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देती हैं। इसके अलावा, बीमा कंपनियाँ बड़े पैमाने पर पूंजी बाजार में निवेश करती हैं, जिससे पूंजी की उपलब्धता में वृद्धि होती है।
- ❖ समाज में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना: बीमा, विशेष रूप से जीवन और स्वास्थ्य बीमा, समाज में सामाजिक सुरक्षा का एक प्रमुख माध्यम बन चुका है। यह उन व्यक्तियों के लिए अहम है, जो वृद्धावस्था, बीमारी या अप्रत्याशित घटनाओं के कारण अपनी आजीविका खो सकते हैं। सरकारी योजनाओं के तहत बीमा का कार्य गरीब और असहाय वर्ग के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना।
- ❖ षि क्षेत्र में सुरक्षा: भारत में षि क्षेत्र का बीमा एक महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि यह किसानों को प्रातिक आपदाओं जैसे सूखा, और तूफान से होने वाले नुकसान से बाढ़, बचाता है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को उनके फसल नुकसान का मुआवजा दिया जाता है, जो उन्हें वित्तीय मदद करता है।
- ❖ वित्तीय समावेशन: बीमा का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान वित्तीय समावेशन में है। यह सुनिश्चित करता है कि हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी सामाजिक-आर्थिक वर्ग से हो, को वित्तीय सुरक्षा मिले। इसके जरिए ग्रामीण इलाकों और वंचित समुदायों में बीमा सेवाओं को पहुंचाया जा रहा है, जिससे उनकी आर्थिक सुरक्षा मजबूत होती है।
- ❖ निवेश और बचत की आदतें: बीमा उत्पाद जैसे जीवन बीमा और पेंशन योजनाएँ निवेश और बचत को प्रोत्साहित करती हैं। ये योजनाएँ लोगों को लंबी अवधि के लिए बचत करने और निवेश करने की आदत डालती हैं,

जो उनके भविष्य को सुरक्षित बनाने में मदद करती हैं। इसके अलावा, बीमा के माध्यम से पूंजी बाजार में भी निवेश का प्रवाह होता है, जिससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

- ❖ निवेश और बचत की आदतें: बीमा उत्पाद जैसे जीवन बीमा और पेंशन योजनाएँ निवेश और बचत को प्रोत्साहित करती हैं। ये योजनाएँ लोगों को लंबी अवधि के लिए बचत करने और निवेश करने की आदत डालती हैं, जो उनके भविष्य को सुरक्षित बनाने में मदद करती हैं। इसके अलावा, बीमा के माध्यम से पूंजी बाजार में भी निवेश का प्रवाह होता है, जिससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।
- ❖ व्यापारिक जोखिमों का प्रबंधन: प्राचीन भारत में व्यापारी समुद्र मार्ग के माध्यम से व्यापार करते थे और उनका सामना विभिन्न प्रकार के जोखिमों से होता था, जैसे समुद्र की लहरों, तूफानों, डाकू और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से। इन जोखिमों से बचने के लिए व्यापारी एक दूसरे से मिलकर सामूहिक रूप से नुकसान की भरपाई करने का प्रयास करते थे। इस व्यवस्था को एक प्रकार की शबीमाश की शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें व्यापारियों का एक समुदाय मिलकर व्यापारिक नुकसान का खामियाजा उठाता था। उदाहरण: समुद्री व्यापारियों में एक परंपरा थी, जिसे सामूहिक बीमा या कौमी सुरक्षा के रूप में देखा जा सकता है। यदि कोई व्यापारी अपनी वस्तु खो देता या किसी कारणवश उसका माल क्षतिग्रस्त हो जाता, तो अन्य व्यापारी उसकी मदद करने के लिए आगे आते थे। यह एक अनौपचारिक बीमा व्यवस्था थी, जो व्यापारियों को जोखिम से बचाने में सहायक थी।
- ❖ समाज में सहयोग और सामूहिक सुरक्षा और भारतीय ग्राम्य समाज में सामाजिक सुरक्षा सहायता के कई रूप थे, जिनका उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करना था। यह परंपरा विशेष रूप से संकटों में मदद करने और आपदाओं से निपटने के लिए थी। जैसे कि बाढ़, सूखा, या युद्ध के दौरान एकजुट होकर समुदायों ने एक-दूसरे की मदद की। यह सामाजिक सहायता व्यवस्था बीमा के समान थी, जहां समुदाय के लोग एक दूसरे के लिए सुरक्षा का योगदान करते थे।

- ❖ धार्मिक दृष्टिकोण से बीमा व्यापार: भारतीय धार्मिक परंपराओं में दान और सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दान की अवधारणा ने समाज में सहयोग को प्रोत्साहित किया, विशेष रूप से जब कोई परिवार या व्यक्ति आर्थिक संकट का सामना करता था। यह सहयोग की भावना, जो पहले व्यक्तिगत और सामूहिक सुरक्षा का रूप थी, बाद में बीमा उद्योग के विकास की दिशा में प्रेरणा बन गई। धार्मिक अनुष्ठान, जैसे यज्ञ और अनुदान, में भी समाज के असमर्थ वर्ग की मदद करने की परंपरा थी।
- ❖ वर्तमान में बीमा व्यापार का विस्तार: भारतीय ज्ञान परंपरा में बीमा के व्यापार का वास्तविक रूप 19वीं और 20वीं शताब्दी में सामने आया, जब ब्रिटिशों के साथ बीमा कंपनियों की स्थापना हुई और भारतीय समाज में बीमा उद्योग की नींव रखी गई। आज बीमा व्यापार भारत में न केवल जीवन बीमा, बल्कि स्वास्थ्य बीमा, वाहन बीमा, संपत्ति बीमा, और पेंशन बीमा जैसे क्षेत्रों में विस्तृत हो चुका है।
- ❖ ऋषि और ग्रामीण बीमा: प्राचीन भारतीय समाज में पेंशन एक महत्वपूर्ण आय का स्रोत था, और ऋषि समुदाय विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा, और अकाल से प्रभावित होता था। ऋषि क्षेत्र में बीमा का विकास एक महत्वपूर्ण कदम था, जिससे किसानों को अपने जोखिमों से बचने में सहायता मिली। वर्तमान में, भारत में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसे कार्यक्रम कृषकों को बीमा कवरेज प्रदान करते हैं, जो ऋषि उत्पादकता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है।
- ❖ वित्तीय समावेशन और बीमा: बीमा व्यापार ने भारतीय समाज में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है। विशेष रूप से ग्रामीण और गरीब वर्ग के लिए बीमा योजनाएँ सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही हैं, जो समाज के हर वर्ग को बीमा कवरेज प्रदान करती हैं। जैसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना ग्रामीण क्षेत्रों में बीमा की पहुंच बढ़ाने में सहायक हो रही हैं।

**निष्कर्ष—** भारतीय ज्ञान परंपरा में बीमा व्यापार की भूमिका पहले समाज के सामूहिक सुरक्षा, जोखिम प्रबंधन, और सहयोगात्मक मदद के रूप में प्रकट होती थी। समय के साथ यह व्यापारिक क्षेत्र में विस्तारित हुआ और आधुनिक बीमा उद्योग के रूप

में विकसित हुआ। भारतीय समाज में बीमा की शुरुआत सांस्कृतिक और सामाजिक सहयोग की जड़ों से हुई थी, जो आज एक संगठित और वित्तीय संरचना के रूप में प्रकट हो चुकी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में बीमा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है, हालांकि यह आधुनिक रूप में जो हम आज देखते हैं, वैसा नहीं था। भारतीय समाज में पहले से ही विभिन्न प्रकार की सामाजिक सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन के उपाय थे, जिनका उद्देश्य व्यक्तिगत और सामूहिक सुरक्षा सुनिश्चित करना था। समग्र रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा में बीमा का विकास समाज के सामाजिक, आर्थिक, और धार्मिक संदर्भ में हुआ, जो समय के साथ आधुनिक वित्तीय और बीमा उद्योग के रूप में परिवर्तित हुआ।

आदिकाल (प्राचीन काल) में बीमा का स्पष्ट रूप से प्रचलित रूप आज जैसा नहीं था, लेकिन बीमा की अवधारणा के कुछ संकेत प्राचीन भारतीय समाज में पाए जाते हैं। भारतीय समाज में बीमा जैसी अवधारणाएँ व्यापार, सामाजिक सुरक्षा और प्रातिक आपदाओं के संदर्भ में विकसित हुईं। इन व्यवस्थाओं को समग्र रूप में बीमा के प्रारंभिक रूप के रूप में देखा जा सकता है।

हालाँकि, प्राचीन काल में बीमा की अवधारणा को एक संगठित और नियमन प्रणाली के रूप में विकसित नहीं किया गया था, फिर भी इसके प्रारंभिक रूप में जो सामूहिक सहयोग और जोखिम प्रबंधन की भावना थी, वही बीमा के आधुनिक रूप के विकास में एक प्रेरणा बन सकती है। बीमा जैसी स्पष्ट और संरचित व्यवस्था का वास्तविक उद्गम मध्यकाल और ब्रिटिश काल में हुआ, जब बीमा कंपनियाँ स्थापित हुईं और आधुनिक बीमा प्रणाली की नींव रखी गई।

भारत में बीमा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि देश की आर्थिक स्थिरता और सामाजिक विकास में भी योगदान करता है।

समग्र रूप से, बीमा भारत में न केवल व्यक्तिगत वित्तीय सुरक्षा का एक अहम हिस्सा बन चुका है, बल्कि यह समाज, अर्थव्यवस्था और षि क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में अहम योगदान प्रदान करता है, और लोगों को अनिश्चितताओं से निपटने के लिए मानसिक और वित्तीय सुरक्षाप्रदान करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में बीमा व्यापार की भूमिका विशेष रूप से व्यापारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में अहम रही है। हालांकि आधुनिक बीमा का रूप प्राचीन भारत में नहीं था, फिर भी भारतीय समाज में जोखिम प्रबंधन और सुरक्षा के उपायों की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हुई हैं। व्यापार और जोखिम प्रबंधन के संदर्भ में बीमा का विकास भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

ऋषि क्षेत्र में बीमा का विकास एक महत्वपूर्ण कदम था, जिससे किसानों को अपने जोखिमों से बचने में सहायता मिली। वर्तमान में, भारत में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसे कार्यक्रम कृषकों को बीमा कवरेज प्रदान करते हैं, जो कृषि उत्पादकता और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है।

### संदर्भ सूची

1. शर्मा. डॉ. एस. के. (2022): हिन्दी काव्य, एस बी पी डी पब्लिकेशन, आगरा।
2. बत्रा दीनानाथ (2024): भारतीय शिक्षा का स्वरूप, प्रभात प्रकाशन प्रा. लि., दिल्ली।



## Introduction to Indian Knowledge System (IKS)

Dr. Anupama Dey

---

The **Indian Knowledge System (IKS)** refers to the rich and diverse repository of knowledge traditions that have been cultivated in India over thousands of years. These systems encompass a wide range of disciplines, including philosophy, science, art, mathematics, medicine, architecture, agriculture, governance, and spirituality. Rooted in texts such as the **Vedas**, **Upanishads**, **Sutras**, and regional traditions, IKS is characterized by its holistic, integrative, and sustainable approach to understanding the world.

### Key Features of Indian Knowledge System

#### 1. Holistic and Interdisciplinary:

- IKS promotes a view of life that integrates material, spiritual, and intellectual pursuits. Knowledge is not compartmentalized but interconnected across disciplines.

#### 2. Sustainability and Harmony:

- Ancient Indian traditions emphasize living in harmony with nature and fostering sustainable practices. Examples include concepts like **Ahimsa (non-violence)** and **Vrikshayurveda** (the science of plant life).

**3. Contextual Relevance:**

- Knowledge in IKS is derived from the observation of the environment and local conditions. It adapts solutions to specific ecological, social, and cultural contexts.

**4. Oral and Written Traditions:**

- Knowledge has been preserved both through oral transmission (e.g., **Guru-Shishya Parampara**) and written records, such as manuscripts and inscriptions.

**5. Integration of Science and Spirituality:**

- IKS blends empirical observation with metaphysical insights, offering a unified vision of the cosmos, the self, and society.

**Major Fields in Indian Knowledge System:****6. Philosophy and Ethics:**

- Schools of thought such as **Nyaya**, **Samkhya**, **Vedanta**, and **Buddhist Philosophy** focus on logic, metaphysics, ethics, and epistemology.

**7. Medicine and Health:**

- **Ayurveda** and **Siddha** offer comprehensive systems of health and well-being, emphasizing balance and preventive care.

**8. Mathematics and Astronomy:**

- Indian mathematicians like **Aryabhata**, **Brahmagupta**, and **Bhaskaracharya** contributed concepts like zero, algebra, trigonometry, and astronomical models.

**9. Architecture and Engineering:**

- Texts like the **Vastu Shastra** and **Shilpa Shastra** provide guidelines for sustainable and aesthetically pleasing construction.

**10. Linguistics and Literature:**

- Sanskrit, Tamil, and other ancient Indian languages have produced a vast body of literature, including epics like the **Ramayana** and **Mahabharata**.



**11. Performing Arts:**

- Systems like **Natya Shastra** offer structured knowledge on drama, dance, and music.

**12. Environmental Science:**

- Traditional agricultural practices, water management systems (e.g., **stepwells**), and biodiversity conservation are embedded in IKS.

**Contemporary Relevance of IKS:**

**13. Sustainability:**

- Indigenous practices offer lessons in sustainability, crucial for addressing global challenges like climate change.

**14. Alternative Medicine:**

- Ayurveda and yoga have gained global recognition for their holistic approach to health.

**15. Education:**

- IKS emphasizes experiential and lifelong learning, fostering creativity and critical thinking.

**16. Cultural Identity:**

- Understanding IKS helps preserve cultural heritage and promotes pride in India's intellectual legacy.

**1. Indian Knowledge System (IKS) and Women Empowerment**

The **Indian Knowledge System (IKS)** has always recognized the significant role of women in society, reflecting a holistic understanding of gender equality, empowerment, and the interconnectedness of life. From ancient scriptures to regional practices, Indian traditions emphasize the intellectual, social, and spiritual contributions of women. Although cultural shifts over time have led to varying degrees of gender equity, the foundational principles of IKS provide a strong framework for women's empowerment.

### Historical Insights from IKS on Women Empowerment

#### 1. Role of Women in Ancient Texts:

- Women held prominent positions in various domains, including education, governance, and spirituality.
- **Philosophy and Knowledge:**
- Female scholars like **Gargi** and **Maitreyi** contributed to the Upanishadic discourses, reflecting their intellectual prowess.
- **Vedic Education:**
- Women, known as **Brahmavadinis**, pursued higher education and participated in debates and rituals.
- **Deities as Symbols of Empowerment:**
- Goddesses like **Saraswati** (knowledge), **Lakshmi** (wealth), and **Durga** (power) exemplify respect for women's multifaceted roles.

#### 2. Legal and Social Recognition:

- Ancient texts such as the **Manusmriti** and **Arthashastra**, despite being debated, recognize women's rights in property, education, and governance.

#### 3. Women's Role in Society:

- Women were seen as pivotal to maintaining societal balance, referred to as **Ardhangini** (equal halves of men) in Hindu philosophy.

#### 4. Spiritual Empowerment:

- Practices like **Shakti Worship** acknowledge women as embodiments of cosmic energy, emphasizing their spiritual and creative power.

### Domains of Empowerment Through IKS

#### 5. Education and Intellectual Growth:

- Traditional Indian education systems valued female scholars. For example, the **Guru-Shishya Parampara** was open to women, emphasizing gender-neutral knowledge transmission.

- Modern initiatives inspired by IKS can promote women's access to education in STEM, humanities, and leadership.

**6. Health and Well-being:**

- **Ayurveda** focuses on women's health across life stages, offering insights into reproductive health, maternal care, and mental well-being.
- Practices like **yoga** and **meditation** empower women to maintain physical and emotional resilience.

**7. Economic Empowerment:**

- Ancient texts encourage women's participation in economic activities such as agriculture, trade, and entrepreneurship.
- **Traditional crafts** like weaving, pottery, and textile design were domains where women thrived as creators and entrepreneurs.

**8. Leadership and Governance:**

- Historical figures such as **Rani Lakshmibai**, **Ahilyabai Holkar**, and **Raziyya Sultana** exemplify leadership inspired by IKS principles.
- Women's capacity for leadership was celebrated in local governance systems like **Panchayats**.

**9. Social Equity and Sustainability:**

- Indian traditions emphasize nurturing communities, which aligns with women's natural roles as caregivers and changemakers in society.
- Practices like **Vrikshayurveda** and **traditional water conservation methods** have often been led by women in rural areas, reflecting their role in ecological sustainability.

**Contemporary Applications of IKS for Women Empowerment**

**10. Revitalizing Education:**

- Incorporating IKS principles in curricula to inspire young women to connect with their heritage and recognize their potential.

**11. Promoting Holistic Health:**

- Leveraging Ayurvedic and yoga practices for women's well-being, especially in addressing modern challenges like stress and work-life balance.

**12. Economic Inclusion:**

- Supporting women in traditional crafts, organic farming, and sustainable practices based on IKS to enhance their financial independence.

**13. Leadership Development:**

- Drawing from examples of historical and mythological women leaders to inspire confidence and advocacy among modern women.

**14. Policy Design:**

- Designing policies and community programs rooted in IKS to address gender inequities, health disparities, and education gaps.

**Conclusion:** The Indian Knowledge System is not just a legacy of the past but a living tradition with profound relevance for contemporary challenges. By integrating ancient wisdom with modern advancements, IKS offers a unique perspective to foster sustainable development, innovation, and harmony in the modern world. The **Indian Knowledge System** serves as a timeless source of inspiration for empowering women. It recognizes their inherent potential in various spheres, from intellectual pursuits to societal leadership. By revisiting and adapting these ancient principles to modern contexts, IKS can play a transformative role in advancing gender equality and ensuring a balanced, sustainable, and inclusive society.

**Reference****1. Indian Knowledge Systems**

- **Author:** Kapil Kapoor and Avadhesh Kumar Singh
- **Publisher:** D.K. Printworld
- **Year of Publication:** 2005

2. **Foundations of Indian Knowledge Systems: Theory and Practice**
  - **Author:** B.N. Jagatap
  - **Publisher:** Springer
  - **Year of Publication:** 2022
3. **The Beautiful Tree: Indigenous Indian Education in the Eighteenth Century**
  - **Author:** Dharampal
  - **Publisher:** Other India Press
  - **Year of Publication:** 1983
4. **Ancient Indian Knowledge System**
  - **Author:** Balram Singh
  - **Publisher:** Dev Publishers & Distributors
  - **Year of Publication:** 2021
5. **Science and Technology in Ancient India**
  - **Author:** Debiprasad Chattopadhyaya
  - **Publisher:** K.P. Bagchi & Company
  - **Year of Publication:** 1986
6. **Natya Shastra**
  - **Author:** Bharata Muni (Translation by Manomohan Ghosh)
  - **Publisher:** Asiatic Society
  - **Year of Publication:** 1951 (Translation)
7. **Charaka Samhita**
  - **Author:** Translated by P.V. Sharma
  - **Publisher:** Chaukhambha Orientalia
  - **Year of Publication:** 1981
8. **The Crest of the Peacock: Non-European Roots of Mathematics**
  - **Author:** George Gheverghese Joseph
  - **Publisher:** Princeton University Press
  - **Year of Publication:** 1991

**9. Vastu Shastra: An Indian Science of Architecture**

- **Author:** B. Bhattacharyya
- **Publisher:** Bharatiya Kala Prakashan
- **Year of Publication:** 1998

**10. History of Science in India**

- **Author:** S.N. Sen
- **Publisher:** Indian National Science Academy
- **Year of Publication:** 1966

**11. Ayurveda: The Science of Self-Healing**

- **Author:** Vasant Lad
- **Publisher:** Motilal Banarsidass
- **Year of Publication:** 1984

**12. Vedic Science and Indian Knowledge Systems**

- **Author:** Prof. H.P. Gangadharan
- **Publisher:** Bharatiya Vidya Bhavan
- **Year of Publication:** 2019



## Indian Culture and Women Empowerment

Gautam Das

---

The dynamic and rich cultural heritage of India has had a profound impact on the position and role of women throughout history. This paper aims to examine the intersection of Indian culture and women empowerment, exploring both historical and contemporary perspectives. It discusses how cultural narratives, practices, and religious norms have affected women's rights and their status in society. Furthermore, the paper highlights the ongoing struggle for gender equality in India and the role of empowerment in transforming the lives of Indian women today.

### Introduction

India, with its vast cultural diversity, is home to various traditions, religions, languages, and ethnic groups. The role of women in Indian society has been influenced by these multifaceted cultural elements. In recent years, however, the conversation surrounding women empowerment in India has gained significant momentum, driven by a wave of social, political, and legal reforms.

Empowerment, in the context of women, refers to the process by which women gain control over their lives, make independent choices, and exercise their rights in social, political, and economic spheres. In India, this process has been both hindered and facilitated

by the interplay of traditional cultural values and modern progressive movements.

### **Key Features of Indian Culture:**

#### **1. Diversity and Pluralism**

- India is home to a wide variety of cultures, languages, religions, and traditions, which influence the cultural fabric of society.

#### **2. Religious Influence**

- India's cultural practices are deeply influenced by its major religions: Hinduism, Islam, Christianity, Sikhism, Buddhism, and others.

#### **3. Family and Social Structure**

- The family is the central unit of Indian society, and traditional family structures are often hierarchical, with clear roles for men and women.

#### **4. Traditional Roles and Values**

- Indian culture places high importance on values like respect for elders, hospitality, and community bonds.

#### **5. Art and Expression**

- Indian culture has a rich tradition of art, music, dance, literature, and architecture, which play significant roles in expressing cultural identities.

### **Key Features of Women Empowerment in India:**

#### **1. Legal Rights and Protection**

- The Indian Constitution guarantees equality, and several laws have been enacted to protect women from discrimination, violence, and exploitation (e.g., Protection of Women from Domestic Violence Act, Sexual Harassment Act).



## 2. Education and Awareness

- Increased literacy rates and access to education have empowered Indian women to pursue careers, gain financial independence, and challenge traditional gender roles.

## 3. Economic Empowerment

- Women's participation in the workforce has significantly increased, with women entering diverse fields such as business, technology, politics, and entrepreneurship.

## 4. Political Representation

- Women in India have gained political representation through their participation in local and national elections (e.g., Indira Gandhi, Sonia Gandhi).

## 5. Access to Healthcare and Reproductive Rights

- Women's health and reproductive rights have gained attention through government schemes and initiatives aimed at improving maternal health, access to contraception, and family planning.

## Historical Context: Women in Indian Culture

### Ancient and Medieval India

- **Ancient times:** Women were revered for spiritual and familial roles (e.g., Sita, Draupadi in epics), but also faced patriarchal constraints like child marriage and Sati.
- **Medieval India:** Women's roles were constrained under foreign rule but social reformers like Raja Ram Mohan Roy began advocating for women's rights.
- **Role in resistance:** Women like Rani of Jhansi fought in colonial resistance, asserting their role in India's national struggle.

### **British Colonial Influence**

- **Colonial rule:** British introduced Western norms like women's education, leading to social reforms.
- **Activism:** Indian women leaders like Sarojini Naidu and Begum Roquiah Sakhawat Hossain played vital roles in advocating for women's rights during the colonial period.

### **Post-Independence India**

- **Legal milestones:** Women gained the right to vote, and the Indian Constitution guaranteed equal rights, though traditional practices still posed challenges.

### **Cultural Barriers to Women Empowerment**

#### **Patriarchal Norms**

- **Male dominance:** Men hold authority in family and society, limiting women's roles to caregivers and homemakers.
- **Limited opportunities:** Women's access to education, employment, and property rights has historically been restricted.

#### **Religious and Social Norms**

- **Gendered religious practices:** Certain religious practices, like purdah or dowry, restrict women's freedom under the guise of tradition or religion.

#### **Gender-Based Violence**

- **Prevalence of violence:** Domestic violence, sexual harassment, and trafficking remain widespread.
- **Cultural normalization:** These forms of violence are often normalized, discouraging women from reporting abuses.

### **Contemporary Movements for Women Empowerment**

#### **Education and Employment**

- **Improved literacy:** Initiatives like Beti Bachao Beti Padhao have improved female literacy.

- **Increased participation:** More women are joining the workforce in business, politics, and technology (e.g., Indra Nooyi, Kiran Mazumdar-Shaw).

### Legal Reforms

- **Legislative progress:** Laws like the Protection of Women from Domestic Violence Act (2005) and the Sexual Harassment Act (2013) aim to protect women's rights.
- **National Commission for Women (NCW):** Formed to ensure the enforcement of women's welfare laws.

### Women in Media and Arts

- **Representation growth:** More women are excelling in media, cinema, and the arts, breaking stereotypes.
- **Social activism:** Female voices are challenging societal norms, e.g., the #MeToo movement in India sparked national discussions on sexual harassment.

### Changing Family Dynamics

- **Shift in roles:** With modernization, women increasingly contribute to household income and decision-making.
- **Non-traditional careers:** Women are entering fields like law enforcement, engineering, and aviation, challenging traditional gender roles.

**Conclusion :** The journey of women empowerment in India is closely intertwined with the country's cultural evolution. While traditional Indian culture has long constrained the freedom and agency of women, contemporary efforts aimed at social reform, legal intervention, and education have provided women with avenues for empowerment. The path to full gender equality remains complex and challenging, as cultural practices continue to shape societal norms. However, the growing recognition of women's rights, along with the support of progressive movements, promises a more inclusive future.

In conclusion, the empowerment of women in India is both a cultural and social challenge that requires concerted efforts from all segments of society. Legal reforms, educational opportunities, and a progressive cultural shift are essential to creating an environment where Indian women can realize their potential. As India continues to evolve, so too must its cultural narratives surrounding gender, equality, and empowerment, ensuring that every woman can enjoy the freedom and opportunity to lead a life of dignity and choice

### References

1. Bhatt, V. (2022). *Empowering Women in India: Challenges and Solutions*. Oxford University Press.
2. Jha, D. (2015). *Women in Ancient India: Role and Status*. New Age International.
3. Ministry of Women and Child Development (2021). *Beti Bachao Beti Padhao: Annual Report*. Government of India.
4. Singh, P., & Singh, S. (2020). *Women's Changing Roles in Modern Indian Families*. Springer.
5. Srinivasan, R. (2020). *The Cultural and Legal Dimensions of Women Empowerment in India*. Cambridge University Press.



## भारतीय ज्ञान परंपरा एक दृष्टि

डॉ. रेखा श्रीवास्तव

**सारांश**—भारतीय ज्ञान परंपरा के आधारभूत तत्वों में दर्शन का बहुत अधिक महत्व रहा है। भारतीय दर्शन के तीन पक्ष तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और मूल्य मीमांसा महत्वपूर्ण हैं, साथ ही साथ उसमें तर्क मीमांसा को भी शामिल किया गया है। प्राचीन काल में गुरुकुल शिक्षा, की प्रमुख आधार स्तंभ थे। शिक्षार्थी 18 विधाओं, छह वेदांग, चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, उपवेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, शिल्प वेद मीमांसा, न्याय पुराण तथा धर्मशास्त्र का ज्ञान ग्रहण कर गुरु के निर्देशन में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अनुष्ठान करते हुए अभ्यास किया करते थे। जिससे आजीविका चलाने में कोई परेशानी नहीं होती थी। तथा प्रौढ़ अवस्था के आते-आते अपने विषय के ज्ञाता हो जाते थे त्याग वृत्ति संपन्न तथा धन की तृष्णा से परे आचार्य ही भारतीय शिक्षा पद्धति में कुशल शिक्षक माना गया है शिक्षा को धनजन और व्यवसाय का साधन नहीं माना जाता था भारतीय ज्ञान परंपरा का वर्णन 14 विद्या और 64 कला के समूह के रूप में किया जाता था जिन में 14 विद्या तत्व ज्ञान का अंग हैं और 64 कलाएं जीवन के लिए उपयुक्त कला कारीगरी कौशल आरोग्य खेती विज्ञान आदि के बारे में व्यावहारिक शिक्षा का स्रोत है इन सभी परंपराओं के अध्ययन एवं संशोधन कर उन्हें योग अनुकूल बनाने की बहुत अधिक आवश्यकता है जिससे कि भारत में शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सके साथ ही साथ भारत की जीवन पद्धति भारतीय मानस और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अमूल्य बदलाव लाया जा सके भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान को न जाने कितने आधुनिक विषयों को समाहित किया जा सकता है। प्राचीन काल में इन सभी विषयों को इस तरह पढ़ाया जाता था कि हर व्यक्ति अपने अंदर स्थित आत्म तत्व को और अधिक विकसित कर सके और उसके चरम को प्राप्त

कर सके परंतु हमारे आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने इस तरह की वि त्ति उत्पन्न कर दी है कि हम विशेषज्ञ की जगह संकीर्णता में विश्वास करने लगे और ज्ञान का सहज आदान-प्रदान स्वाभाविक ही खत्म होने लगा है। विज्ञान के विद्यार्थियों को कल या वाणिज्य के विषयों से संबंधित किसी प्रकार की जानकारी का कोई ज्ञान नहीं होता और कला एवं वाणिज्य वालों को विज्ञान विषय से कोई लेना देना नहीं होता शिक्षा का उद्देश्य यह तो कभी भी नहीं रहा कि हम इस तरह की विशेषज्ञताओं के एहसास के कारण इतनी संकीर्णता विकसित कर लें कि हमारी अपनी रचनात्मकता ही हाशिये पर आ जाए और हम एक रचनात्मक सोच के स्थान पर उसे संकीर्ण सोच वाले हो जाएं जो सीधे चलने वाले घोड़े की कर दी जाती है कि आपको यहां वहां नहीं देखना है बस सीधे-सीधे चलते जाना है ऐसी स्थिति में मुक्त विचार विमर्श केवल कल्पना ही साबित हो रही है और शोध भी एक नकल किए हुए ग्रंथ की भांति अनावश्यक भंडार का स्थान लेते जा रहे हैं अतः आवश्यक है कि इन सीमाओं को तोड़कर इंटरडिसीप्लिनरी एवं मल्टी डिस्सिप्लिनरी अप्रोच की ओर कदम बढ़ाया जाए एवं नई शिक्षा नीति को अपने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाए साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि यंत्र व्रत या यंत्रों के माध्यम से हम अपनी बौद्धिक क्षमता को गिरवी ना रखें बल्कि प्राप्त ज्ञान का सही तरह से उपयोग करें और उसे आत्मसात करें भारतीय ज्ञान परंपरा का वैशिष्ट्य यह भी है कि इसमें दुनिया का सबसे अधिक ज्ञान भंडार उपलब्ध है विश्व की किसी भी संस्ति ज्ञान या परंपरा के पास इतना ज्ञान नहीं है जितना कि भारतीय ज्ञान परंपरा के साहित्य में। हालांकि नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला, जैसे सैकड़ों विद्यापीठों में अति विशाल ग्रंथ साहित्य को नष्ट करने के उपरांत भी आज हमारे पास एक करोड़ से ज्यादा ऐसी पांडुलिपियाँ प्राप्त हैं जिनका सिर्फ 5 से 7 प्रतिशत भाग का ही अध्ययन संभव हो सका है यह ज्ञान भंडार संस्कृत, तमिल, पाली, प्रात आदि भाषाओं में है मगर उनकी लिपि को पढ़ने एवं अर्थ अभी निकल पाना संभव नहीं हो सका है भारत के बाहर जर्मनी चीन अमेरिका एवं अन्य देशों में हमारी पांडुलिपियों उपलब्ध है जो की पुरातन काल में ही भारत से किसी प्रकार ले जाई गई हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा आदि ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत भंडार है ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के भौतिक, नैतिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, मूल्य पर केंद्रित होकर विनम्रता अनुशासन सत्यता आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया है छात्रों को मानव प्र ति के मध्य

संतुलन को बनाए रखना सिखाया जाता था शिक्षक और सीखने के लिए उपनिषद और वेद के सिद्धांतों का पालन जिस व्यक्ति स्वयं परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों को पूरा कर सके इस प्रकार जीवन के सभी पक्ष इस प्रणाली में सम्मिलित थे।

प्रस्तावना – प्राचीन काल से ही भारतवर्ष को एक समृद्धशाली देश के रूप में कहा गया है और उसे सोने की चिड़िया यूँ ही नहीं कहा जाता था। उसके पास ज्ञान संपदा और बौद्धिक संपदा का अटूट भंडार था लौकिक और आध्यात्मिक स्तर पर भारत के आसपास भी कोई शक्ति खड़े होने का सामर्थ्य नहीं रखती थी इसी कारण भारत की ओर संपूर्ण विश्व की निगाहें सदा रही हैं। और सदियों से अनेकों आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण किए हैं हालांकि भारत ने आज तक किसी देश पर आक्रमण नहीं किया ना ही कोई ऐसा कोई उपाय अपनाया है कि जिससे किसी दूसरे देश पर उसका अधिकार स्थापित हो क्योंकि भारत युद्ध से नहीं वरन प्रेम से सभी के साथ रहता आया है और विश्व बंधुत्व की बात करता आया है भारत की संस्कृति ही वसुदैव कुटुंबकम की रही है फिर परिवार के मध्य कैसा युद्ध? ऐसे अद्भुत विराट विशाल और विलक्षण के पीछे हम भारतीयों की अपनी संस्कृति एवं प्राचीन ज्ञान परंपरा ही नीति निर्देशक बनी रही है हालांकि भारत और भारतीय लोग कभी भी वीरता में किसी से पीछे नहीं रहे हैं सारे विश्व को पराक्रम और नैतिकता का पाठ पढ़ने वाले एवं विदेशी आक्रांताओं को धूल चटाने वाले भारतीय राजाओं और सेनापतियों का नाम आज भी इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

आधुनिक पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति में रंगी हुई दिखाई पड़ती है और हर बात में विदेश की ओर मुंह उठाकर भीख का कटोरा लेकर खड़ी रहती है अर्थात् उसे अपने के लिए आतुर रहती है मगर इस सब के पीछे एक सबसे बड़ा कारण यह है कि हमने उन्हें अपनी प्राचीन संस्कृति को दायम दर्जे की नजर से देखने के लिए चश्मा प्रदान कर दिया है।

ऐसा राष्ट्र जिसके पास ना तो स्वयं की भाषा पर मान करने की चाहत है ना ही अपनी संस्कृति पर गर्व उनसे देश प्रेम की उम्मीद भला कैसे की जा सकती है? इन सब के पीछे विदेशी ग्रंथ एवं मैकाले की शिक्षा पद्धति का हाथ तो है ही मगर दोष हम सभी का भी है इसलिए अब समय आ गया है कि हमारे विद्यार्थियों को उन सभी विशेषताओं से परिचित कराया जाए जो भारत के समृद्धशाली इतिहास का हिस्सा रही है ताकि वह किसी भी हीन भावना का शिकार ना हो एवं उन्हें अतीत स्वर्णिम भारत की

आध्यात्मिक सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान भी हो और उन मूल्य एवं परंपराओं से आकर्षित हो।

भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ वैदिक एवं उसके बाद के अति प्राचीन काल में उपलब्ध ज्ञान से समझा जाता है। प्राचीन ज्ञान परंपरा शिक्षा एवं संस्कृति की परंपरा मानी जाती है। ज्ञान परंपरा के मूल में संस्कृत संवर्धन की बात होती है जिसका एक प्रमुख अंग शिक्षा भी है। ज्ञान परंपरा के परिपेक्ष में शिक्षित होना और साक्षर होना दोनों अलग-अलग बातें हैं ज्ञान के द्वारा हम बुद्धि प्रज्ञा और मेधा की बात करते हैं और किस स्तर तक हम पहुंच सकते हैं यह शिक्षा पद्धति एवं स्वयं के सामर्थ्य पर निर्भर करता है क्योंकि ज्ञानवान होना और सूचना एक अधिकरण दोनों ही अलग-अलग बातें हैं।

प्रज्ञा ज्ञान होने के लिए स्वाध्याय की आवश्यकता होती है, जो की आधुनिक संग्रह का उपलब्ध साधन गूगल के माध्यम से कभी भी संभव नहीं हो सकता। उसके लिए प्राचीन ग्रंथ और अर्वाचीन साहित्य को खंगालना होगा जो कि हमारी धरोहर है। वेद, पुराण अन्य अति प्राचीन अमूल्य निधि जो कि आज भी हमारे बीच उपलब्ध है और यही सब हमारे प्राचीन ज्ञान परंपरा है जिसमें ज्ञान का सृजन व संग्रहण उसे बांटना एवं अगली पीढ़ी तक पहुंचाना ही हमारा कार्य है। हम सभी को को ज्ञात है कि हमारे प्राचीन ग्रंथों को और ग्रंथालयों को कितनी बार लूटा एवं जलाया गया है मगर भारतीय ज्ञान परंपरा एक सनातन गंगा प्रवाह की भांति ज्ञान को लगातार प्रवाह में बनाए रखने में समर्थ रही है। क्योंकि यह प्रवाह भारतीय प्रवाह बन के भारतीयों की धमनियों में प्रवाहित होता रहा और सदियों से और प्रत्येक भारतीय मानस का चरित्र उसे ज्ञान में रचा बसा रहा है भारतवर्ष में विविधता भाषा में रही, परिवेश में रही, खान-पान में रही फिर भी सभी की सोच व्यवहार आचरण और जीवन मूल्य सदैव एक जैसे ही रहे हैं। मैकाले के आने के बहुत पहले 11वीं शताब्दी में जब अलबरूनी भारत आया था तो उसने अपनी शोध में यह लिखा था कि भारतीयों के तीन विशेषताएं हैं यह मौत से नहीं डरते, झूठ नहीं बोलते और ज्ञान परंपरा पर बहुत अभिमान करते हैं। मैकाले की शिक्षा पद्धति को अपनाने के बाद भारतीय ज्ञान परंपरा की क्या दुर्दशा हुई है इससे कोई भी अनभिज्ञ नहीं है।

बीज शब्द -आध्यात्मिक, ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, मूल्य मीमांसा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, आरोग्य, मानस, इंटरडिसीप्लिनरी, मल्टीडिसीप्लिनरी

### भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रमुख बातें

1. भारतीय ज्ञान परंपरा आदि ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान लौकिक कर्म, धर्म, भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है।



2. भारतीय ज्ञान परंपरा का विशिष्ट यह भी है कि इसमें दुनिया का सबसे ज्यादा ज्ञान भंडार वर्तमान में भी उपलब्ध है।
3. भारतीय ज्ञान परंपरा के ज्ञान को बहुत अधिक आधुनिक विषयों में समाहित किया जा सकता है।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा में 14 विद्या 64 कला के समूह जुड़े हुए हैं।
5. भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों में दर्शन का अत्यधिक महत्व रहा है।
6. भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान संपदा और बौद्धिक संपदा का अटूट भंडार है।
7. भारत की संस्कृति वसुदैव कुटुंबकम की रही है।
8. प्राचीन भारत में दर्शन, अनुष्ठान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, संख्या सिद्धांत, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया है।
9. भारत में कथा, परंपरा, टीका परंपरा, भाषा परंपरा, अनुवाद परंपरा आदि के माध्यम से हमारे ज्ञान परंपरा का अस्तित्व चला आया है।
10. हमारे प्राचीन ग्रंथों को कई बार नष्ट करने की कोशिश की गई उसके बावजूद भी भारतीय ज्ञान परंपरा वर्तमान में भी अक्षय भंडार लिए हुए हैं।

### आधुनिक सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा

भारत भूमि महान है यह सभी जानते हैं। इस भूमि की अविरल धारा ने सभी को बहुत प्रभावित किया है। प्राचीन समय से ही भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत समृद्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों आ रही नवीन खोज जो हमारे ग्रंथों में मिलता है वे ही भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धिशाली होने का प्रमाण है। बीते कुछ शताब्दी से इस भूमि को ऐसा महसूस कराया जाता रहा है कि यहाँ ज्ञान के कोई पुष्प अंकुरित नहीं हुए हैं, परन्तु सहस्र वर्ष की गुलामी झेलते हुए हमारी पीढ़ियों ने इस ज्ञान परम्परा को संजो कर रखा है। इसलिए समय है भारत के ज्ञान वृक्ष की छाया में पल रहे इस विश्व को बताने का की भारत का गुरुत्व अभी भी कायम है। भारत का ज्ञान, गंगा, जल के समान निर्मल है, मैकाले के मानस पर प्रश्न उठते हैं कि भारत ने विश्व को क्या दिया ? और यह बोध कराते हैं कि पाश्चात्य देशने ही भारत को ज्ञान और शिक्षा प्रदान की है यह भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिये चिंता का विषय है अब आवश्यकता है कि इसकी उपादेयता को जनमानस तक पहुंचाने के लिये उचित प्रयास किये जायें।

**निष्कर्ष**—प्राचीन भारत ने ध्वन्यात्मक अनुसन्धान, व्याकरण, अर्थशास्त्र, सांख्य, तर्क, जीवन विज्ञान, संगीत जैसे विभिन्न कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर मानव जाति की उन्नति में योगदान दिया है। प्राचीन भारतीयों द्वारा विचारों और तकनीकी का आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आधार को दृढ़ करने में अद्भुत योगदान दिया है। हमारे भारत वर्ष ने विश्व को अनेक प्रकार से योगदान देकर सहयोग दिया है। भारत ने ही बौद्ध, जैन और सिख पंथ दिए। भारत ने विश्व को गुरुशिष्य परम्परा देकर नए ज्ञान को संश्लेषित किया है।

**निष्कर्ष**—यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा वर्तमान में भी लागू है जो तनाव प्रबंधन, स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिये व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का विशाल भंडार प्रदान करती है जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिये किया जाता है। उत्तम ज्ञान ही स्वस्थ समाज को चरम पर पहुंचाने का कार्य करती है सभी योनियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है अतः विश्व धरोहर के लिये इन समृद्ध विरासत को भावी पीढ़ी के लिये पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति
2. पाणिनि कालीन भारतवर्ष पृष्ठ 2, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन
3. ईशोपनिषद्
4. मिश्रा, जयशंकर, प्राचीन भारत का इतिहास पृष्ठ 667
5. विकीपीडिया
6. मुखर्जी आर के एजुकेशन इन 'एनशियेंट इंडिया', पृष्ठ 55-56



## राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा का संबंध

डॉ. पूजा सिंह

भारत संस्कृति का खजाना है, जो हजारों वर्षों से विकसित है और कला, साहित्य, रीति-रिवाजों, परंपराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कला तियों, विरासत स्थलों और अन्य कार्यों के रूप में प्रकट होता है। पर्यटन के लिए भारत आने, भारतीय आतिथ्य का अनुभव करने, भारत के हस्तशिल्प और हस्तनिर्मित वस्त्रों को खरीदने, भारत के शास्त्रीय साहित्य को पढ़ने, योग का अभ्यास करने और इस सांस्कृतिक धन से दैनिक रूप से दुनिया भर के करोड़ों लोग आनंद लेते हैं और इसका लाभ उठाते हैं। ध्यान, भारतीय दर्शन से प्रेरित होना, भारत के अनूठे उत्सवों में भाग लेना, भारत के विविध संगीत और कला की सराहना करना, और कई अन्य पहलुओं के साथ भारतीय फिल्मों देखना। यह सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा है जो भारत के पर्यटन स्लोगन के अनुसार भारत को वास्तव में अतुल्य बनाती है। भारत की सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण और संवर्धन देश के लिए एक उच्च प्राथमिकता माना जाना चाहिए, क्योंकि यह वास्तव में देश की पहचान के साथ-साथ उसकी अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है।

भारतीय कला और संस्कृति का प्रचार न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि व्यक्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति बच्चों में विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण मानी जाने वाली प्रमुख दक्षताओं में से एक हैं, ताकि उन्हें पहचान, संबंधित, साथ ही साथ अन्य संस्कृतियों और पहचान की सराहना प्रदान की जा सके। यह अपने स्वयं के सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा और परंपराओं के एक मजबूत अर्थ और ज्ञान के विकास के माध्यम से है जो बच्चे एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और

आत्म-सम्मान का निर्माण कर सकते हैं। इस प्रकार, सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति दोनों व्यक्ति के साथ-साथ सामाजिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण योगदानकर्ता हैं।

कला संस्कृति प्रदान करने के लिए एक प्रमुख माध्यम है। कला-सांस्कृतिक पहचान, जागरूकता और उत्थान समाज को मजबूत करने के अलावा-व्यक्तियों में संज्ञानात्मक और रचनात्मक क्षमताओं को बढ़ाने और व्यक्तिगत खुशी बढ़ाने के लिए अच्छी तरह से जाना जाता है। खुशी या भलाई, संज्ञानात्मक विकास, और व्यक्तियों की सांस्कृतिक पहचान महत्वपूर्ण कारण हैं जो सभी प्रकार की भारतीय कलाओं को शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को पेश करना चाहिए, जो बचपन की देखभाल और शिक्षा के साथ शुरू होते हैं।

भाषा, बेशक, कला और संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। अलग-अलग भाषाएं 'दुनिया को अलग तरह से देखती हैं, और एक भाषा की संरचना, इसलिए अनुभव के मूल वक्ता की धारणा को निर्धारित करती है। विशेष रूप से, भाषाएं किसी दिए गए संस्कृति के लोगों को दूसरों के साथ बोलने के तरीके को प्रभावित करती हैं, जिसमें परिवार के सदस्यों, प्राधिकरण के आंकड़े, साथियों और अजनबियों के साथ बातचीत के स्वर को प्रभावित करते हैं। सामान्य भाषा के बोलने वालों के बीच बातचीत में निहित टोन, अनुभव की अनुभूति और परिचित एक संस्कृति का प्रतिबिंब और रिकॉर्ड है। इस प्रकार, संस्कृति हमारी भाषाओं में व्याप्त है। साहित्य, नाटकों, संगीत, फिल्म आदि के रूप में कला को भाषा के बिना पूरी तरह से सराहा नहीं जा सकता है। संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए, किसी संस्कृति की भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देना चाहिए।

दुर्भाग्य से, भारतीय भाषाओं को उनका उचित ध्यान और देखभाल नहीं मिली है, क्योंकि देश पिछले 50 वर्षों में केवल 220 से अधिक भाषाओं में खो गया है। यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को 'लुप्तप्राय' घोषित किया है। विभिन्न असंतुष्ट भाषाएँ विशेष रूप से विलुप्त होने का खतरा है। जब कोई जनजाति या समुदाय के वरिष्ठ सदस्य, जो ऐसी भाषा बोलते हैं, उनका निधन हो जाता है, तो ये भाषाएँ अक्सर उनके साथ खराब हो जाती हैं; बहुत बार, संस्कृति की इन समृद्ध भाषाओं की अभिव्यक्तियों को संरक्षित या रिकॉर्ड करने के लिए कोई ठोस कार्रवाई या उपाय नहीं किए जाते हैं।

स्कूल के सभी स्तरों पर संगीत, कला और शिल्प पर अधिक जोर दिया गया है। बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए तीन-भाषा सूत्र का प्रारंभिक कार्यान्वयन जहां संभव हो घर की स्थानीय भाषा में शिक्षण; अधिक अनुभवात्मक भाषा सीखने का संचालन करनाय स्थानीय विशेषज्ञता के विभिन्न विषयों में मास्टर प्रशिक्षक के रूप में उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखकों, शिल्पकारों और अन्य विशेषज्ञों की भर्तीय मानविकी, विज्ञान, कला, शिल्प और खेल के दौरान, पाठ्यक्रम में आदिवासी और अन्य स्थानीय ज्ञान सहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान का सटीक समावेश, जब भी प्रासंगिक हो; और पाठ्यक्रम में बहुत अधिक लचीलापन, विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालयों और उच्च शिक्षा में, ताकि छात्रों को अपने स्वयं के रचनात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक पथ विकसित करने के लिए पाठ्यक्रमों के बीच आदर्श संतुलन का चयन कर सकें।

प्रमुख बाद की पहल को सक्षम करने के लिए, उच्च शिक्षा के स्तर पर और उससे आगे भी कई आगे की कार्रवाई की जाएगी। सबसे पहले, ऊपर वर्णित प्रकार के कई पाठ्यक्रमों को विकसित करने और सिखाने के लिए, शिक्षकों और शिक्षकों की एक उत्कृष्ट टीम विकसित करनी होगी। भारतीय भाषाओं में मजबूत विभाग और कार्यक्रम, तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, कला, संगीत, दर्शन, आदि देश भर में लॉन्च और विकसित किए जाएंगे, और 4 वर्षीय बी.एड. इन विषयों में दोहरी डिग्री विकसित की जाएगी। ये विभाग और कार्यक्रम उच्च गुणवत्ता वाले भाषा शिक्षकों के एक बड़े संवर्ग को विकसित करने में मदद करेंगे, साथ ही साथ कला, संगीत, दर्शन और लेखन के शिक्षक जिन्हें इस नीति को पूरा करने के लिए देश भर में आवश्यकता होगी। एनआरएफ इन सभी क्षेत्रों में गुणवत्ता अनुसंधान को निधि देगा। उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को स्थानीय संगीत, कला, भाषाओं और हस्तकला को बढ़ावा देने के लिए अतिथि संकाय के रूप में काम पर रखा जाएगा और यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्रों को संस्कृति और स्थानीय ज्ञान से अवगत कराया जाए जहां वे अध्ययन करते हैं। प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान और यहां तक कि हर स्कूल या स्कूल परिसर में कला, रचनात्मकता, और क्षेत्र एवं देश के समृद्ध खजाने के लिए छात्रों को उजागर करने के लिए कलाकार का निवास होगा।

उच्च शिक्षा में अधिक से अधिक कार्यक्रम, मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा का उपयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में करेंगे, क्षमता और शक्ति, उपयोग और जीवंतता को बढ़ावा देने के लिए, द्विभाषी रूप से कार्यक्रमों की पेशकश करेंगे। सभी भारतीय

भाषाएं। निजी एचईआई को भी प्रोत्साहित और प्रोत्साहित किया जाएगा कि वे भारतीय भाषाओं को निर्देश और द्विभाषी कार्यक्रमों के माध्यम के रूप में उपयोग करें। चार वर्षीय बी.एड. द्विभाषी कार्यक्रमों की पेशकश द्विभाषी भी मदद करेगा, उदा। देश भर के स्कूलों में विज्ञान को पढ़ाने के लिए विज्ञान और गणित के शिक्षकों के प्रशिक्षण संवर्ग में।

उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रमों और अनुवाद और व्याख्या, कला और संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, पुरातत्व संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन और उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर वेब डिजाइन में डिग्री भी बनाई जाएगी। अपनी कला और संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न भारतीय भाषाओं में उच्च-गुणवत्ता वाली सामग्री विकसित करना, कला तियों का संरक्षण करना, संग्रहालयों और विरासत या पर्यटन स्थलों को क्यूरेट और चलाने के लिए उच्च योग्य व्यक्तियों का विकास करना, जिससे पर्यटन उद्योग को भी काफी मजबूती मिलती है।

नीति की मान्यता है कि भारत की समृद्ध विविधता का ज्ञान शिक्षार्थियों द्वारा पहले हाथ में लेना चाहिए। इसका मतलब सरल गतिविधियों सहित होगा, जैसे छात्रों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण करना, जो न केवल पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि भारत के विभिन्न हिस्सों की विविधता, संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान की समझ और प्रशंसा का कारण भी बनेगा। ठीतंज एक भारत श्रेष्ठ भारत 'के तहत इस दिशा में देश के 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी, जहां शिक्षण संस्थान छात्रों को इन स्थलों और उनके इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञान आदि का अध्ययन करने के लिए भेजेंगे। इन क्षेत्रों के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए।

कला, भाषाओं और मानविकी के पार उच्च शिक्षा में ऐसे कार्यक्रम और डिग्री बनाना, रोजगार के लिए विस्तारित उच्च-गुणवत्ता के अवसरों के साथ भी आएगा जो इन योग्यताओं का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं। वहाँ पहले से ही सैकड़ों अकादमियों, संग्रहालयों, कला दीर्घाओं, और विरासत स्थलों में उनके प्रभावी कामकाज के लिए योग्य व्यक्तियों की सख्त जरूरत है। चूंकि पद योग्य रूप से योग्य उम्मीदवारों से भरे हुए हैं, और आगे की कला तियों की खरीद और संरक्षण किया जाता है, अतिरिक्त संग्रहालयों, जिनमें आभासी संग्रहालय एवं ई-संग्रहालयों, दीर्घाओं और विरासत स्थल शामिल हैं, जो हमारी विरासत के संरक्षण के साथ-साथ भारत के पर्यटन उद्योग में योगदान कर सकते हैं।

भारत उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री और विभिन्न भारतीय और विदेशी भाषाओं में जनता के लिए उपलब्ध अन्य महत्वपूर्ण लिखित और बोली जाने वाली सामग्री बनाने के लिए अपने अनुवाद और व्याख्या के प्रयासों का तत्काल विस्तार करेगा। इसके लिए, एक भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान की स्थापना की जाएगी। ऐसा संस्थान देश के लिए एक महत्वपूर्ण सेवा प्रदान करेगा, साथ ही साथ कई बहुभाषी भाषा और विषय विशेषज्ञों और अनुवाद और व्याख्या में विशेषज्ञों को नियुक्त करेगा, जो सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने में मदद करेगा। अपने अनुवाद और व्याख्या प्रयासों में सहायता के लिए प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग करेगा। जिससे स्वाभाविक रूप से समय के साथ विकसित हो सकता है, और अन्य अनुसंधान विभागों के साथ सहयोग की सुविधा के लिए कई स्थानों में रखे जा सकते हैं और योग्य उम्मीदवारों की संख्या बढ़ती है।

शैलियों और विषयों में अपने विशाल और महत्वपूर्ण योगदान और साहित्य के कारण, इसका सांस्कृतिक महत्व, और इसकी वैज्ञानिक प्रति, एकल-धारा संस्कृत पथशालाओं और विश्वविद्यालयों तक सीमित होने के बजाय, संस्कृत को स्कूल में मजबूत प्रसाद के साथ मुख्यधारा में शामिल किया जाएगा, जिसमें से एक भी शामिल है। तीन-भाषा सूत्र में भाषा विकल्प साथ ही उच्च शिक्षा। इसे अलगाव में नहीं, बल्कि रोचक और अभिनव तरीकों से पढ़ाया जाएगा, और अन्य समकालीन और प्रासंगिक विषयों जैसे कि गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, भाषा विज्ञान, नाटकीयता, योग, आदि से जोड़ा जाएगा। इस प्रकार, इस नीति के बाकी हिस्सों के अनुरूप है, संस्कृत विश्वविद्यालय भी उच्च शिक्षा के बड़े बहु-विषयक संस्थान बनने की ओर अग्रसर होंगे। संस्कृत और संस्कृत ज्ञान प्रणालियों पर शिक्षण और उत्कृष्ट अंतःविषय अनुसंधान का संचालन करने वाले संस्कृत के विभागों को नए बहु-विषयक उच्च शिक्षा प्रणाली में स्थापित एवं मजबूत किया जाएगा। यदि छात्र ऐसा चुनता है तो संस्कृत एक समग्र बहुविषयक उच्च शिक्षा का एक स्वाभाविक हिस्सा बन जाएगा। 4 साल कीएकीकृत बहुविषयक बीएड की पेशकश के माध्यम से बड़ी संख्या में संस्कृत शिक्षकों को मिशन मोड में देश भर में व्यावसायिक किया जाएगा। शिक्षा और संस्कृत में दोहरी डिग्री।

भारत इसी तरह सभी शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का अध्ययन करने वाले अपने संस्थानों और विश्वविद्यालयों का विस्तार करेगा, जिसमें उन हजारों पांडुलिपियों को इकट्ठा करने, संरक्षित करने, अनुवाद करने और उनका अध्ययन करने के मजबूत प्रयास हैं, जिन पर अभी तक उनका ध्यान नहीं गया है। संस्कृत और देश भर के सभी

भारतीय भाषा संस्थानों और विभागों को काफी मजबूत बनाया जाएगा, जिसमें छात्रों के बड़े नए बैचों को अध्ययन के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाता है, विशेष रूप से, बड़ी संख्या में पांडुलिपियों और अन्य विषयों के साथ उनके अंतर्संबंध। शास्त्रीय भाषा संस्थानों का उद्देश्य विश्वविद्यालयों के साथ विलय करना होगा, जबकि उनकी स्वायत्तता को बनाए रखना होगा, ताकि संकाय काम कर सके, और छात्रों को भी मजबूत और कठोर बहु-विषयक कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में प्रशिक्षित किया जा सके। भाषाओं को समर्पित विश्वविद्यालय एक ही छोर की ओर बहुआयामी बन जाएंगे जहां प्रासंगिक हो, वे तब बी.एड. शिक्षा और एक भाषा में दोहरी डिग्री, उस भाषा में उत्कृष्ट भाषा शिक्षकों को विकसित करने के लिए। इसके अलावा, यह भी प्रस्तावित है कि भाषाओं के लिए एक नया संस्थान स्थापित किया जाएगा। पाली, फारसी और प्राकृत के लिए राष्ट्रीय संस्थान (या संस्थान) भी एक विश्वविद्यालय परिसर के भीतर स्थापित किए जाएंगे। भारतीय कला, कला इतिहास और भारतविज्ञान का अध्ययन करने वाले संस्थानों और विश्वविद्यालयों के लिए भी इसी तरह की पहल की जाएगी। इन सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए अनुसंधान को एनआरएफ द्वारा समर्थित किया जाएगा।

शास्त्रीय, जनजातीय और लुप्तप्राय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के प्रयास नए जोश के साथ किए जाएंगे। प्रौद्योगिकी और भीड़, लोगों की व्यापक भागीदारी के साथ, इन प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित प्रत्येक भाषा के लिए, अकादमियों की स्थापना कुछ महानतम विद्वानों और देशी वक्ताओं से की जाएगी, जो नवीनतम अवधारणाओं के लिए सरल लेकिन सटीक शब्दावली निर्धारित करने के लिए और नियमित रूप से नवीनतम शब्दकोशों को जारी करने के लिए। आधार (दुनिया भर में कई अन्य भाषाओं के लिए सफल प्रयासों के अनुरूप)। अकादमियां भी एक-दूसरे के साथ परामर्श करेंगी, और कुछ मामलों में जब भी संभव हो, आम शब्दों को अपनाने की कोशिश कर रहे इन शब्दकोशों का निर्माण करने के लिए, जनता से सर्वोत्तम सुझाव लें। इन शब्दकोशों का व्यापक रूप से प्रसार किया जाएगा, शिक्षा, पत्रकारिता, लेखन, भाषण और उससे आगे के उपयोग के लिए, और वेब के साथ-साथ पुस्तक के रूप में भी उपलब्ध होगा। आठवीं अनुसूची भाषाओं के लिए ये अकादमियां केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श या सहयोग से स्थापित की जाएंगी। अन्य अत्यधिक बोली जाने वाली भारतीय भाषाओं के लिए अकादमियां भी इसी तरह केंद्र और राज्यों द्वारा स्थापित की जा सकती हैं।



भारत में सभी भाषाओं, और उनकी संबंधित कला और संस्कृति को एक वेब-आधारित प्लेटफॉर्म एवं पोर्टल एवं विकीपीडिया के माध्यम से प्रलेखित किया जाएगा, ताकि लुप्तप्राय और सभी भारतीय भाषाओं और उनके संबंधित समृद्ध स्थानीय कला और संस्कृति को संरक्षित किया जा सके। मंच में वीडियो, शब्दकोश, रिकॉर्डिंग, और अधिक, लोगों (विशेष रूप से बुजुर्गों) की भाषा बोलने, कहानियां कहने, कविता पाठ करने और नाटकों, लोक गीतों और नृत्यों, और बहुत कुछ शामिल होगा। देश भर के लोगों को इन प्लेटफॉर्मों एवं पोर्टल्स एवं विकीपीडिया पर प्रासंगिक सामग्री जोड़कर इन प्रयासों में योगदान करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। विश्वविद्यालय और उनकी शोध टीमों एक दूसरे के साथ और देश भर के समुदायों के साथ ऐसे प्लेटफॉर्मों को समृद्ध करने की दिशा में काम करेंगी। ये संरक्षण के प्रयास, और संबंधित अनुसंधान परियोजनाएं, जैसे, इतिहास, पुरातत्व, भाषा विज्ञान, आदि में वित्त पोषित किया जाएगा।

स्थानीय मास्टर्स और उच्च शिक्षा प्रणाली के साथ भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए सभी उम्र के लोगों के लिए छात्रवृत्ति की स्थापना की जाएगी। भारतीय भाषाओं का प्रचार तभी संभव है जब उनका उपयोग नियमित रूप से किया जाए और उनका उपयोग शिक्षण और सीखने के लिए किया जाए। प्रोत्साहन, जैसे कि उत्कृष्ट कविता के लिए पुरस्कार और श्रेणियों में भारतीय भाषाओं में गद्य, सभी भारतीय भाषाओं में जीवंत कविता, उपन्यासों, गैर-पुस्तकों, पाठ्य पुस्तकों, पत्रकारिता और अन्य कार्यों को सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किए जाएंगे। भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को रोजगार के अवसरों के लिए योग्यता मापदंडों के हिस्से के रूप में शामिल किया जाएगा।

### Refraction

- National Education Policy 2020
- NEP 2020, Part I. SCHOOL EDUCATION
- NEP 2020, Part I. Curriculum and Pedagogy in Schools: learning Should be Holistic, Integrated, Enjoyable, and Engaging
- NEP 2020, Part I. Teachers
- NEP 2020, Part I, Equitable and Inclusive Education: learning for All
- NEP 2020, Part I, Efficient Resourcing and Effective Governance through School Complexes/Clusters

- NEP 2020, Part I, Standard-setting and Accreditation for School Education
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Institutional Restructuring and Consolidation
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Towards a More Holistic and Multidisciplinary Education
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Optimal learning Environments and Support for Students
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Motivated, Energized, and Capable Faculty
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Equity and Inclusion in Higher Education
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Teacher Education
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Reimagining Vocational Education
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Catalysing Quality Academic Research in All Fields through a new National Research Foundation
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Transforming the Regulatory System of Higher Education
- NEP 2020, Part II, HIGHER EDUCATION, Effective Governance and leadership for Higher Education Institutions
- NEP 2020, Part III, OTHER KEY AREAS OF FOCUS
- NEP 2020, Part III, Adult Education and lifelong learning

## नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश एवं महत्त्व

डॉ. उमेश कुमार दुबे, राजेश बोरकर

**सारांश**—नई शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल करने का उद्देश्य भारत के युवाओं को उनकी संस्कृति और मूल्यों से जोड़ना है जिससे मानवता की बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशित हो सके संस्कृति रूप से बेसुमार भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ शास्त्रीय एवं नृत्य संगीत लोक कला असाधारण प्रतिभाओं को नई शिक्षा नीति के तहत उभारा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परम्परा एवं अध्ययन-अध्यापन लेखा पठन पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया है। वह अपने आप स्वयं को पहचानने का एक प्रयास है। पारंपरिक ज्ञान स्वदेशी लोगो की बौद्धिक संपदा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है और उनके अस्तित्व का अभिन्न अंग है यह उनकी संस्कृति विरासत रीति रिवाजो विश्वासों और ज्ञान प्रणालियों को पीढ़ी से पीढ़ी तक जोड़कर रखती है।

**प्रस्तावना**—नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश होने से नवीन शिक्षा प्रणाली में आधुनिकता के साथ साथ सामाजिक सांस्कृतिक चरित्र निर्माण और मूल्यों के विकास पर भी जोर दिया जायेगा जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा में कला संस्कृति दर्शन समाजशास्त्र विज्ञान और प्रबंधन जैसे और कई क्षेत्रों का व्यापक दृष्टिकोण है। भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल करने से भारत को परम वैभव राष्ट्र और जगतगुरु बनने में मदद मिलेगी भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल करने से भारत की समृद्ध परम्परा और संस्कृति को भावी पीढ़ी के किये संरक्षित किया जा सकता है भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल करने से हमारी शिक्षा प्रणाली में अध्याय परमार्थ और परम्परा को आधुनिकता से जोड़ा

जा सकता है जिससे स्कूलों और कालेजों में शिक्षा के लिए नीति तैयार करना नयी शिक्षा नीति के दायरे में आता है जिसे भारत सरकार ने अध्ययन किया है नई शिक्षा नीति में ज्ञान को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण बदलाव शामिल किये गये हैं जिसमें मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम बदल कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करने के लिए प्रीस्कूली से लेकर माध्यमिक विद्यालय तक की शिक्षा को सार्वभौमिक बनाया जायेगा। जिससे नई शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत के शैक्षणिक परिदृश्य को नया आकार देने के रूप में योजना सफल होगी और इसका लाभ आने वाली पीढ़ी को मिलेगा।

### संकेताक्षर-ज्ञान परम्परा शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

#### नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश का महत्त्व

भारतीय ज्ञान प्रणाली क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न भाषाओं की विविधता को संरक्षित करने और छात्रों को उनकी संस्कृति विरासत के लिए गहरी प्रशंसा के साथ समृद्ध करके भाषा दक्षता को प्राथमिकता देना उद्देश्य है। भारतीय ज्ञान परम्परा मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं के नियंत्रण में रख जा सकता है। जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक, उपनिषद, बौद्ध, और जैन काल की शिक्षा व्यवस्था और विश्वविद्यालयों की स्थापना का उल्लेख मिलता है जिसमें पिछले 200-300 सालों में भारतीय ज्ञान परंपरा का लोप होता हुआ दिखाई दे रहा है जिससे नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन-अध्यापन और लेखन-पठन पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया है जो भारतीय ज्ञान परंपरा में कला, संस्कृति, दर्शन, समाजशास्त्र, विज्ञान, और प्रबंधन जैसे कई क्षेत्रों का ज्ञान शामिल है जो भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने से समाज और जीवन के मूल तत्व मजबूत होंगे और भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने से छात्रों को अपनी ज्ञान परंपरा को समझने और उसका इस्तेमाल करने में मदद मिलेगी जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा को सामिल करने से शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी।

#### नई शिक्षा नीति 2025 के प्रमुख उद्देश्य

- व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार करना
- लक्ष्य: यह सुनिश्चित करना कि 2025 तक 50% छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हो।

- कक्षा VI से आगे तक व्यावहारिक व्यावसायिक इंटरनशिप लागू करना।
- कौशल-आधारित प्रशिक्षण और प्रमाणन प्रदान करने के लिए उद्योगों के साथ साझेदारी करना।
- व्यावहारिक अनुभव के लिए समुदाय-आधारित व्यावसायिक केंद्र विकसित करना।
- जिससे मजबूत डिजिटल लर्निंग इकोसिस्टम बनाया जा सके।
- लक्ष्य: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में डिजिटल उपकरणों और संसाधनों तक पहुंच बढ़ाना।
- क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय त सामग्री के साथ दीक्षा। मंच की पहुंच का विस्तार करना।
- इंटरैक्टिव शिक्षण को सुविधाजनक बनाने के लिए स्कूलों में उन्नत वर्चुअल प्रयोगशालाएं शुरू किया जाना चाहिए।
- सरकारी स्कूलों को ऑनलाइन और मिश्रित शिक्षा के लिए बुनियादी ढांचे से सुसज्जित करना।

### शिक्षकों के कौशल उन्नयन की पहल

- लक्ष्य:
- 2025 तक 80% शिक्षकों को नए शैक्षणिक तरीकों और डिजिटल उपकरणों में प्रशिक्षित करना।
- योजना:
- नए 5+3+3+4 ढांचे के अनुरूप राष्ट्रव्यापी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- सतत व्यावसायिक विकास में प्रौद्योगिकी-केंद्रित प्रशिक्षण मॉड्यूल को एकीकृत करना।
- शिक्षकों को सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए सहकर्म-नेतृत्व वाली शिक्षण पहल को प्रोत्साहित करना।

उच्च शिक्षा सुधार

- **लक्ष्य:** लचीली और बहुविषयक शिक्षण प्रणालियों के लिए आधार
- **योजना:**
- शैक्षणिक क्रेडिट बैंक प्रणाली का कार्यान्वयन आरंभ करना, जिससे संस्थानों के बीच निर्बाध स्थानान्तरण संभव हो सके।
- कम से कम 50 जिलों में बहुविषयक उच्च शिक्षा संस्थान स्थापित करना।
- भारतीय शिक्षा मानकों को वैश्विक मानदंडों के अनुरूप बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।

### समावेशिता और समानता

हाशिए पर पड़े और दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना।

### समावेशी पाठ्यक्रम और डिजिटल संसाधन विकसित करना।

- आर्थिक रूप से वंचित छात्रों को वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान करना।
- विविध शिक्षण आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करें।

### नई शिक्षा नीति 2025 विजन

एनईपी 2024 से 2025 तक के मील के पथर और प्रभाव

2025 तक नई शिक्षा नीति 2024 (एनईपी) के कार्यान्वयन से महत्वपूर्ण मील के पथर हासिल होने की उम्मीद है, जिससे भारत की शिक्षा प्रणाली पर परिवर्तनकारी प्रभाव का मार्ग प्रशस्त होगा। ये मील के पथर नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में की गई प्रगति को दर्शाएंगे और 2030 तक आगे की प्रगति के लिए मंच तैयार करेंगे। मुख्य फोकस क्षेत्रों में समावेशिता, कौशल वृद्धि और डिजिटल शिक्षा शामिल किया जाना चाहिए।

### 2025 तक अपेक्षित उपलब्धियाँ

1. 50% व्यावसायिक अनुभव: विद्यार्थियों की आधी आबादी को व्यावहारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिससे उन्हें व्यावहारिक कौशल प्राप्त होंगे।

2. डिजिटल संसाधन सुगम्यता:। और वर्चुअल लैब जैसे प्लेटफार्मों का महत्वपूर्ण विस्तार, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में सुनिश्चित करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षण सफलता: एनईपी दिशानिर्देशों के साथ शिक्षण पद्धतियों का राष्ट्रव्यापी संरेखण, 80% शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
4. उच्च शिक्षा में प्रगति: कम से कम 50 जिलों में बहुविषयक संस्थान स्थापित किए गए, जिससे लचीले शिक्षण के अवसर उपलब्ध हुए।
5. सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) में वृद्धि: स्कूली शिक्षा में 100% जीईआर की दिशा में पर्याप्त प्रगति सुनिश्चित करना।

### अपेक्षित प्रभाव

- कौशल विकास: छात्र शैक्षणिक ज्ञान और व्यावसायिक विशेषज्ञता दोनों के साथ उभरेंगे, जिससे शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई पाट जाएगी।
- समावेशिता: हाशिए पर पड़े समुदायों और दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक व्यापक पहुंच।
- वैश्विक प्रतिस्पर्धा: भारतीय शिक्षा मानक अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप होंगे, जिससे भारत ज्ञान और नवाचार का केंद्र बन जाएगा।
- शैक्षणिक दबाव में कमी: उच्च शिक्षा में लचीले मूल्यांकन और कई निकास विकल्पों से छात्रों का तनाव कम होगा।

### नई शिक्षा नीति (NEP) को लागू करने में कई चुनौतियां आ सकती हैं

- शिक्षा का महंगा होना: विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश की सुविधा मिलने से भारतीय शिक्षा महंगी हो सकती है। इससे निम्न वर्ग के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा हासिल करना मुश्किल हो सकता है।
- शिक्षकों की कमी: नीति में कई सुधारों और नई शिक्षण विधियों को अपनाने का प्रावधान है, लेकिन इसके लिए पर्याप्त और योग्य शिक्षकों की जरूरत है।
- शिक्षा का संस्कृतिकरण: दक्षिण भारतीय राज्यों का आरोप है कि त्रि-भाषा सूत्र से सरकार शिक्षा का संस्कृतिकरण करने की कोशिश कर रही है।

- वित्तीय संसाधनों की कमी: सफल क्रियान्वयन के लिए दशकों तक पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की जरूरत होगी.
- शिक्षा क्षेत्र में व्यापारीकरण: व्यापारीकरण, व्यवसायीकरण, और निजीकरण ने शिक्षा क्षेत्र को अपनी जकड़ में ले लिया।

**निष्कर्ष**—निष्कर्ष के रूप में देखा जाये तो यह बात स्पष्ट हो जाती है की आधुनिक समय में नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश होना अति आवश्यक है क्योंकि आधुनिकता के दौड़ में व्यक्ति अपने सस्कारो और संस्ति के मूल्य आदि को भूलते जा रहा है जिस कारण व्यक्ति अपने जड़ो से विभक्त होते जा रह है जिसमे नयियो शिक्षा नीति 2020 भरत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव लेकर आई है यह नीति न केवल शिक्षा को अधिक समविशिक और प्रभावित बनाती है बल्कि छात्रो के समग्र विकास पर भी जोर देती है जिसमे भारतीय शिक्षा प्रणाली रटने की शिक्षा भयंकर प्रतिस्पर्धा और आसमान अवसरों के कारण को उत्पन्न कर रही है और नई पीढ़ी को संस्कारवान एवं उर्जावान बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी

### संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, 2020, नई शिक्षा नीति-2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
2. भारत सरकार, 1986, नई शिक्षा नीति-2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
3. भारत सरकार, 1968, नई शिक्षा नीति-2020, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
4. रा.शि.अ.प्र.प. 1976. दस साल के स्कूल के लिए पाठ्यक्रम एक मूल्यांकन। रा. शि.अ.प्र.प., नई दिल्ली।
5. 2000. स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की मान्यता। रा.शि.अ.प्र.प., नई दिल्ली।
6. 2005. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की खोज 2005. रा.शि.अ.प्र.प., दिल्ली।
7. 2008. राष्ट्रीय फोकस समाज का आधार पत्र -व्यवस्थागत सुधार के लिए पाठ्यचर्या परिवर्तन, रा.शा.अ.प्र.प., नई दिल्ली।



8. 2009. नेशनल फोकस समह का आधार पत्र -शाश्रिक टेक्नोलॉजी। रा.शि.अ. प्र.प नई दिल्ली।
9. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
10. शर्मा संगीता एवं पाण्डेय जय शंकर (2023), उच्च शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताएं एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका ह्यूमेनिटीज एंड डेवेलपमेंट, वॉल्यूम 18, नंबर-01, जनवरी-जून 2023।
11. त्रिवेदी राकेश (2014), भारतीय शिक्षा का इतिहास ओमेगा पब्लिकेशन (दरियागंज) नयी दिल्ली।



## भारतीय ज्ञान परंपरा, और वाणिज्य ऐतिहासिक महत्व एवं विरासत

कुमारी गायत्री केशवानी

**शोध सारांश—**भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक विषय के रूप में कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में शामिल किया गया है। इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी जोर दिया गया है। इसी क्रम में भारतीय व्यापार प्रणाली को भी अकादमिक जगत में महत्व देने की आवश्यकता है। आज संपूर्ण दुनिया में, लोग भारत के सांस्कृतिक परिवेश तथा प्राचीन समय व्यापारिक प्रणाली को जानने के प्रचलित है। भारतीय व्यापार प्रणाली संबंध देश में प्रचलित औपचारिक 31 तथा अनौपचारिक व्यापारिक प्रणाली से है। दुनिया में लगभग सभी देशों की व्यापार प्रणाली में विविधता पाई जाती है और इसका प्रमुख कारण संबंधित देश का राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य होता है। अलग-अलग देश में पाए विविधता के कारण व्यापार होते हैं। भारत विरासत के लिए जाना जाता है हमारे देश व्यापार प्रणाली की कई विशेषताएं हैं। सतत् विकास एवं सामाजिक जिम्मेदारी भी अवधारणा भारतीय व्यापार में प्राचीन समय से ही पाई जाती है। ऐसे में भारतीय व्यापार प्रणाली के अध्ययन से इनको दुनिया भर में विभिन्न स्वरूपों में प्रयोग किया जा सकता है। बहुमूल्य धातुएँ जैसे—सोने में निवेश का अत्यधिक चलन, निदेश में कार्यरत भारतीय द्वारा अपने परिजनों को लगातार भर्जे जाने बाला धन, सतत् विकास की अवधारणा, दान, सामाजिक जिम्मेदारी आदि भारतीय व्यापार प्रणाली की विशेषताएं हैं।

## भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ

भारतीय ज्ञान परंपरा अर्थात् जो ज्ञान वेदो उपनिषदो शास्त्रीय ग्रंथ, पुंडुलिपियो या मौखिक संचार के रूप में हजारों वर्षों से चला आ रहा है इसके अंतर्गत जीवन निर्वाह करने हेतु व्यवहारिक ज्ञान जैसे शिकार या आर्थिक पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान खगोल विज्ञान शिल्प, कौशल, जलवायु, और क्षेत्र की पारंपरिक प्रौद्योगिकी के बारे में प्राप्त किये वाला ज्ञान शामिल है। मौखिक परंपरा के अन्तर्गत यह ज्ञान कहानियों किदवंतियों लोक कथाओं अनुष्ठानों गीतों पौराणिक कथाओं दृश्य कला और वास्तु कला के रूप में प्रचलित है।

## महत्व

1. यह एक समृद्ध विरासत है जो कई हजार सालों से चली आ रही है।
2. इसमें ज्ञान और विज्ञान लौकिक और पारलौकिक कर्म और धर्म तथा योग का अद्भुत समन्वय है।
3. प्राचीन शिक्षा प्रणाली मानवता को प्रोत्साहित करती थी।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा सांस्कृतिक अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए, महत्वपूर्ण है।
5. यह आर्थिक स्थिरता और बेहतर जीवन स्तर की प्राप्ति की कुंजी है इसलिए महत्वपूर्ण है।

उदाहरण - भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और विविधता। पूर्ण धारा है, जिसमें दर्शन, विज्ञान, साहित्य, गणित, कला चिकित्सा, और समाजशास्त्र सहित अनेक क्षेत्रों का समावेश है। यह परंपरा न धार्मिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समृद्ध है, ज्ञान की गहरी समझ जीवन को बढ़ावा देती है।

## भारतीय ज्ञान परंपरा के कुछ प्रमुख पहलू

1. वेद और उपनिषद—भारतीय ज्ञानपरंपरा की नींव वेदों और उपनिषदों में रखी गई है। वेद संसार के सृजन, इसके उद्दीपन, आत्मा के साथ उसके संबंधों की गहरी समझा प्रदान करते हैं। उपनिषदों में ब्रह्म (सर्वव्यापी शक्ति) और आत्मा के बीच के संबंधों की चर्चा की जाती है। जो आध्यात्मिक ज्ञान की ओर मार्गदर्शन करती हैं। है,

2. **दर्शन**—भारतीय दर्शन की प्रमुख शास्त्रों में वेदांत, आध्यात्मिक सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक और मीमांसा शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक शास्त्र ने जीवन के उद्देश्य, सत्य, और नैतिकता ने बारे में गहरी मंथन की है। उदाहरण के लिए, यागे दर्शन ने आत्मा के विकास और मोक्ष की प्राप्ति के लिए ध्यान और साधनों के महत्व पर जोर दिया।
4. **गणित और खगोलशास्त्र**—भारतीय ज्ञान परंपरा ने गणित और खगोल-शास्त्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य जैसे महान गणितज्ञों ने शून्य, दशमलव प्रणाली और कार्य त्रिकोणमिति के क्षेत्र में अद्वितीय महान कार्य किये।
5. **चिकित्सा (आयुर्वेद)**—भारतीय चिकित्सा पद्धति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है दिया है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन को बनाए रखने पर जोर देती है। यह जीवन के स्वास्थ्यपूर्ण प्रबंधन के बिना हर्बल उपचार, आहार और जीवनशैली के सिद्धांतों पर आधारित है।
6. **साहित्य और कला**—भारतीय साहित्य में वेदो महाकाव्य (रामायण, महाभारत), पुराणों और शास्त्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। नाटक, कविता, संगीत और नृत्य भारतीय संस्कृति के विभिन्न हिस्से हैं। भारतीय कला परंपरा की प्रकृति, मानवता और अध्यात्म की गहरी समझ को व्यक्त करती है।

## संदर्भ ग्रंथ

### गीता का महत्व

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गीता का उपदेश महत्वपूर्ण है। महत्त्वपूर्ण नामों में स्वामी विवेकानंद बालगंगाधर महात्मा गांधी ओशो रजनीश इत्यादि के नाम हैं जिन्होंने अपने सिद्धांतों के पालन तथा अपने विचारों के समर्थन के लिये गीता की व्याख्या अपने-अपने ढंग से की है। महाभारत युद्ध आरम्भ होने के ठीक पहले भगवान श्रीकृष्ण ने जो उपदेश दिया वह श्रीमद्भगवत गीता के नाम से प्रसिद्ध है। पर महाभारत के भीष्मपर्व का अंग है। गीता में 18 अध्याय और में की 700 श्लोक हैं। गीता की गणना

प्रस्थानमयी में की जाती है, जिसमें उपनिषद् और भी सम्मिलित भारतीय परम्परा के अनुसार गीता का स्थान वही है जो उपनिषद् और धर्मसूत्रों का है।

इस प्रकार भगवत् गीता का परिचय महाभारत के सार रूप में भी हुआ है, गीता भारतीय धर्म संस्कृत की पहचान है।

1. अर्जन विषाद योग
2. सांख्य योग
3. कर्मयोग
4. ज्ञानयोग
5. कर्म संन्यास योग
6. आत्म संगम योग / ध्यान मार्ग
7. ज्ञान-विज्ञान मार्ग
8. अक्षर बहन योग
9. राजगृह योग
10. विभूति योग
11. विश्वरूप दर्शन योग
12. भक्ति योग
13. क्षेत्र क्षेत्रज्ञ योग (प्रति पुरुष विभाग योग)
14. पुरुषोत्तम योग
15. गुण त्रय विभाग योग
16. देवासुर सम्पद योग
17. श्रद्धात्रय विभाग योग
18. मोक्ष संन्यास योग

**गीता में कर्म को तीन दिशाएँ**

1. कर्म
2. विकर्म

3. अकर्म
4. इस प्रकार भगवत गीता का परिचय महाभारत के सार रूप में भी हुआ है संस्कृत की पहचान है।
5. निष्कर्ष—कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान भारतीय लोगों की बौद्धिक संपदा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है और इनके अस्तित्व का अभिन्न अंग है। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत, रीति-रिवाज, विश्वासों और ज्ञान प्रणालियों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित कर रही है। यह पारंपरिक ज्ञान भारत की ज्ञान प्रणाली और पहचान को बढ़ावा देते हैं।

### संदर्भ सूची

Google-

6. <https://www-alliance-edu-in>
7. <https://Gor of rajbhawan-rajasthan-gov-in>
8. <https://jayvijay- Co-WAN fagvijay->

हिन्दी साहित्य श्रीमद् भगवत गीता



## भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण

सुरेखा उईके

**परिचय—**“ भारतीय में महिला सशक्तिकरण भारत अपने इतिहास और संस्कृति की वजह से पूरे विश्व में एक विशेष स्थान रखता है हमारा यह देश सांस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक सैन्य शक्ति आदि में विश्व के बेहतरीन देशों सैन्य शक्ति आदि में शामिल है। वैसे तो आजादी के बाद देश की इन स्थितियों में सुधार की पहल हुई लेकिन हालिया समय में इस क्षेत्रों में पहला तेल हुई है। इससे लिए समाज संसाधन को लगातार में बेहतर मजबूत व सशक्त किया जा रहा है और समाज की आधी आबादी स्त्रियों की है इस उनके लिए विशेष प्रयास जा रहे है।

डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि यदि किसी समाज की प्रगति के बारे में, सही सही जानना है। तो उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानो। कोई समाज कितना मजबूत हो सकता इसका अंदाजा इस बात से इसलिए समाज लगाया है। क्योंकि स्त्रियाँ किसी भी की आधी आबादी है। बिना इन्हे साथ अपनी संपूर्णता में लिए कोई भी समाज अपन बेहतार नहीं बें आदिम संरचना से को जन्म के कप का एक सकला है। समाज सला की लालसा ने शोबर दिया दिया है। है। स्त्रियो को दोयम दर्जे में देखने की कवायद इसी कड़ी महत्वपूर्ण पहलू है।

**महिला सशक्तिकरण का आधार विश्व में**

**नारी आंदोलन व भारत में इसका प्रभाव**

विश्व में नारी आंदोलन की नींव 19 वीं शताब्दी में ही रखी गई। पश्चिम के कई राष्ट्र उस दौर में इस आंदोलन में भागीदार बने। नारी आंदोलन सामने आए तब ही स्त्री सशक्तिकरण की एक अवधारणा दुनिया के समक्ष प्रमुखता से आई। इसलिए स्त्री सहवितरण को समझने के लिए नारी आंदोलन को भी अति आवश्यक आवश्यक है। सरल शब्दों में नारी आंदोलन की शुरुआत समझना कहे तो समाज द्वारा नारी को निम्नतर समझने से हुई। नारीवाद महत्वपूर्ण सिद्धांत है। कि इस समाज का पितृसत्तात्मक में स्त्री को हीन दर्जा प्राप्त है। मनुष्य होने के साथ साथ वह दुनिया की स्त्री आधी आबादी है। सृष्टि के निर्माण में उसका भी उतना ही सहयोग है। जितना कि पुरुष का।

### **भारतीय महिला सशक्तिकरण क्या है परिभाषा और सही अर्थ**

महिला सशक्तिकरण एक ऐसा शब्द है। है जिसने हाल के वर्षों में काफी लोकप्रियता हासिल की है। यह एक ऐसा विचार है जिस पर अक्सर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में चर्चा होती है। जिसमें राजनीतिक सामाजिक आंदोलनों और व्यवसाय शामिल है इसका क्या मतलब है। और यह क्यों महत्वपूर्ण है।

महिला सशक्तिकरण का सही अर्थ जटिल है। लेकिन इसके मूल में सहायता महिलाओं को अपने जीवन को नियंत्रित करने और अपने जीवन को नियंत्रित करने और अपने निर्णय लेने की शक्ति और संसाधन देने की प्रक्रिया को संदर्भित है। वंचित महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा आर्थिक अवसरों तक सेवा और साथ पहुंच के साथ राजनीतिक और सामाजिक जीवन तसे भाग लेने की क्षमता में भी तरह से जैसी चीजें शामिल हैं।

### **भारतीय ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण का विकास**

भारतीय ज्ञान को परंपरा में महिलाओं को पुरुषों के समान थे और वे वैदिक में महिलाओं अधिकार प्राप्त थे और वे वैदिक काल में सशक्त थी वैदिक काल की महिलाओं ने भारतीय ज्ञान परंपरा में योगदान दिया है। भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई प्रयास किए गए हैं।

1. पहली पंचवर्षीय योजना (1951-1956) 23 तहत महिलाओं के लिए कल्याणकारी आयोजनाएं शुरू की गई।
2. दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-1961) 3 दौरान महिलाओं मंडली गया। का गठन किया



3. तीसरी से पांचवी पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिक कला दी गई.
4. छठी पंचवर्षीय योजना (1980-1985) को महिला को विकास में मील का पत्थर माना जाता है
5. सातवी पंचवर्षीय योजना-(1985-1990) के लिए महिलाओं के लिए विकास कार्य क्रम जारी रखे गए.

### “भारतीय ज्ञान परम्परा और महिला सशक्तिकरण के सकार”

- प्राचीन भारत में महिलाओं को बराबरी दर्जा और अधिकार मिलता शतम्बेदिक प्रत्याभी के मुताबिक महिलाओं की शादी परिपक्व उम्र में होती थी और उन्हे थी। अपना पति चुनने की आजादी थी।
- ऋग्वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथों में कई महिलाओं को और संतो के बारे में बताया गया है।
- जैन धर्म जैसे सुधारवादी आंदोलनों में महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों होने की मनुमति दी गई।
- भारत में, महिला भारत में लिए कई प्रयास सशक्तिकरण के किए रहे हैं।
- महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा का महत्व है शिक्षा से महिलाओं को रोजगार और आजीविका के अवसर मिलते हैं।

### भारत में महिला सशक्तिकरण का महत्व

महिला सशक्तिकरण को महिलाओं को ज्ञान कौशल संसाधन और एजेंसी से लैस करने की प्रक्रिया के रूप परिभाषित किया जा सकता सूचित निर्णय ले सके। सामाजिक आर्थिक और राजनीति योलो में भाग ले सके और लैंगिक असमानतामयो को चुनौती दे सके भारतीय संदर्भ में प्रगति और विकास को भागे बनने की आपनी क्षमता कारण यह बहुत प्रासंगिक है।

महिला सशक्तिकरण ने केवल लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिये भी उत्प्रेरक है क्योंकि यह महिलाओं की पूरी क्षमता को एक उद्घागर करता है और अधिक समावेशी

और समृद्ध समाज को बढ़ावा देता है जिसमिर्मा स्तर के संगठन महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं उन्हें आवश्यक सहायता संसाधन और अवसर सदान करते हैं। अपनी पहलों के माध्यम से वे सक्रिय रूप में महिला सशक्तिकाख को बढ़ाया देते हैं उनके अधिकारों की वकालत करते हैं और सभी के लिए अधिक न्यायसंगत समाज दिशा में काम करते हैं। बनाने की दिशा में काम करते हैं।

### भारती ज्ञान परम्परा एवं महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ और बाधाएँ

भारत में महिला सशक्तिकरण को कई चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है जो समाज में समानता और पूर्ण भागीदारी की दिशा में उनकी प्रगति में बाधा डालती है।

**शिक्षा तक सीमित पहुँच**—गरीबी सांस्कृतिक मानदंड और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे-बाधाएं लड़कियों के लिए नामांकन दर को कम करती है जिससे उनके कौशल अधिग्रहण और आर्थिक संभावनाओं पर रोक लगती है।

**लिंग आधारित वेतन अंतर**—नियुक्ति तक भेदभाव व्यावसायिक प्रथमकरण तथा नेतृत्व पदों में प्रतिनिधित्व का अभाव महिलाओं और पुरुषों के बीच वेतन असमानताओं में योगदान देता है जिससे आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की शक्ति सीमित हो जाती है।

### सीमित राजनीतिक प्रतिनिधित्व

राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम है जिससे नीति निर्माण में महिलाओं के दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं को शामिल करने में अवरोध आती है।

सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक बाधाएँ-गहरी पड़े जमाए हुए पितृसत्तात्मक मानदंड लैंगिक रुढ़िवादिता और भेदभावपूर्ण रीति-रिवाज महिलाओं की स्वायत्तता और अवसरों को प्रतिबंधित करते हैं। जिससे दृष्टिकोण बदलने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता

### महिला सशक्तिकरण की विशेषताएँ

- महिलाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने और निर्णय लेने लेने का अधिकार।

- महिलाओं को अवसरो और संसाधनों तक समान पहुँच।
- महिलाओं को आत्म सम्मान की भावना पैदा करना
- महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन को ताभावित करने का अधिकार।
- महिलाओं को लिंग के आधार पर भेद भाव से मुक्ति दिलाना।
- महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और शिक्षा के क्षेत्र में आगे।
- बढ़ने में मदद करना।
- महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना।
- महिलाओं को नवाचार उत्पादकता और उधम बालिता को बढ़ावा देने में मदद करना।
- महिलाओं को सामाजिक प्रगति के लिए प्रेरित करना।

### “महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य”

महिला सशक्तिकरण का मकसद महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर सशक्त बनाना है। इसके जरिए महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर मिलते हैं और हो अपने पाविन के सभी पहलुओं नियंत्रण रखा पाती है—

- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना।
- महिलाओं को स्व-रोजगार के लिए प्रेरित करना।
- महिलाओं के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देना।
- महिलाओं में आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देना।
- महिलाओं को निर्णय लेने की क्षमता देना।
- महिलाओं को सामाजिक बदलाव में शामिल करना
- महिलाओं में आंतरिक मूल्य की भावना पैदा करना।
- महिलाओं को शिक्षा वित्तीय सहायता और रोजगार के अवसर महैया कराना।

### “भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला संशक्तिकरण के कारण”

- भारती ज्ञान परंपरा में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।
- महिलाओं को जेडर बेस हिंसा से बचाना बरूरी है।
- महिलाओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के लिए जागरूक करना।

- महिलाओं को आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की भावना पैदा करनी।
- महिलाओं को उनके विचारों को रखने में आजादी देनी चाहिए
- महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ावा देना चाहिए
- महिला ओ को लैंगिक भेदभाव से बचाना चाहिए।
- महिलाओं को हिंसा से बचाने के लिए जागरूक करना चाहिए।
- महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए महिलाओं को उनके, योगता के आधार पर उचित प्रशंसा और प्रमुखता देनी चाहिए।
- महिला ओ को पारिवारिक बंधनो मुक्त कराना चाहिए।
- महिलाओ को उनके अधिकारो से अवगत कराना चाहिए।

### भारतीय ज्ञान परंपरा एवं महिला “सशक्तिकरण की तकनीक”

समाज में जब और जिस समय महिलाओं सम्मान रहा है उस समय के समाज ने उन्नति और प्रगति का। जब जब समाज के महिला इदय किया है। में कमी आयी है तब के समाप्य सम्मान में कमी आयी में पतन उन्होंने की स्थिति देवी देखी जा समाप्यु कि वैदिक काल सकती महिला ओ की सम्मानीय स्थिति और वैदिक गुरु के के युग में में जाना भारत विश्व जाता था।

### “भारत में सशक्तिकरण की आवश्यकता”

भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता के बहुत से कारण सामने आते है प्राचीन काल में भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आयी। जितना सम्मान उन्हे प्राचीन काल में दिया जाता था मध्य काल में वह सम्मान घटने लगा था।

- आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएँ कई सारे महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्था है फिर भी सामाना ग्रामीण महिलाएँ आज भी अपने घरो में रहने के लिए बाध्य है और उन्हें सामान्य स्वाध्य नही सुविधा और शिक्षा जैसी उपलब्ध नही है।
- शिक्षा के मामले में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ काफी पीछे है भारत में पुरुष दर मात्र 60.6 प्रतिशत ही है।

**“महिला सशक्तिकरण का निष्कर्ष”**

भारत में महिला सशक्तिकरण की मदद से महिलाओं की बेरोजगारी और कार्यस्थल पर किया जा सकता असमान अवसरों को खतम भी महिलाओं को बेरोजगारी का सामना करता पड़ता है तो उनकी असली क्षमता बिना किसी उपयोग के रह जाती है महिलाओं की ताकत और क्षमता का उपयोग करने के लिए उन्हें चाहिए। समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

**संदर्भ ग्रंथ**

1. <http://www.drishtfiias.com>.
2. <http://www.ijrsrft.com>.
3. <http://ijrrsohline.in>.
4. <http://www.nexftias.com>.



## नई शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा

डॉ. मधुमती नामदेव

“मन चंगा तो कठोती में गंगा”।

“कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन”।

“बंदऊं गुरु पद पदुम परागा”।

“अतिथि देवो भवः”।

“जिओ और जीने दो”।

“वसुधैव कुटुंबकम्”।

आदि भारतीय जनमानस भारतीय समाज के मस्तिष्क में छाये रहते हैं। मनुष्य इस पृथ्वी पर जन्म लेते ही घर ये पंक्तियाँ सुनता और पढ़ता है। जो हमारे भारतीय संस्कार संस्कृति के अंग हैं। यही हमारी संस्कृति है ज्ञान परम्परा है, जो मनुष्य को पूर्ण मानवीय बनाकर उसके हृदय में सात्विक गुणों का संचार करती है लेकिन प्रश्न यह उठता है कि यह ज्ञान परम्परा यह संस्कृति क्या है और यह नई शिक्षा नीति 2020 में कहा तक समाहित है।

शिक्षा प्राप्त करना मनुष्य जीवन का प्रथम उद्देश्य कर्म और अधिकार है, सभी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमारे भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में कहा गया है, कि प्राथमिक स्तर के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निरुशुल्क शिक्षा की व्यवस्था ही जाय। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये भारत में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शासन काल में प्रथम राष्ट्रीय नीति (एनईपी) सन् 1968 में कोठारी आयोग की रिपोर्ट पर आधारित

भी दूसरी, राष्ट्रीय नीति 1986 में राजीव गांधी द्वारा घोषित की गई जिसे 1992 में संशोधित भी किया गया। तत्पश्चात् नई शिक्षा नीति 2020 सबसे पहले माननीय नरेन्द्र मोदी के शासन काल में अगस्त 2021 को मध्यप्रदेश में लागू की गई।

भारतीय संस्कृति सनातन है संस्कृति का शाब्दिक अर्थ सम्यक् कृति है। सनातन का तात्पर्य है नित नूतन चिर पुरातन अर्थात् जो नित्य नया होते हुए भी अपनी परम्पराओं से जुड़कर अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है, वही सनातन है। भारतीय संस्कृति के बारे में मार्क ट्वेन का कहना है भारत उपासना पंथों की भूमि, मानव जाति का पालना, भाषा की जन्मस्थली, इतिहास की माता, पुराणों की दादी, परम्पराओं की परदादी है। मनुष्य के इतिहास में जो भी मूल्यवार एवं सृजनशील सामग्री है, उसका भंडार अकेले भारत में है।

चार वेद, अठारह पुराण, एक सौ आठ उपनिषद्, रामायण, महाभारत, जैनों के आगम ग्रंथ, बौद्धों के त्रिपिटक, सिखों का गुरुग्रंथ साहिब आदि, यह सब भारतीय ज्ञान परम्परा का आधारभूत साहित्य है। इसी के प्रकाश में समय-समय पर विभिन्न विषयों पर आधुनिक विद्वानों, महापुरुषों ने भी कार्य किए हैं। इनका साहित्य भी उपलब्ध है। ये प्रमाण भारतीय ज्ञान परम्परा की व्यापकता को दर्शाते हैं, जो पूर्ण से वैज्ञानिक, सनातन और सर्वस्पर्शी है। विश्व की अधिकतर चुनौतियों और समस्याओं का समाधान एवं नए अवसर भारतीय ज्ञान से प्राप्त हो सकते हैं।

भारतीय संस्कृति भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद्, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबन्धन एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इस परम्परा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन में विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों के समृद्ध आलोक में निर्मित की गयी है। 'शिक्षा' व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय प्रगति, सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान हेतु अनिवार्य है। भारतवर्ष के महान गुरुजनों ने शिक्षा के इस गहन महत्व को समझ लिया था। इसी के फलस्वरूप भारत

के वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली की सुंदर व्यवस्था की गयी थी, जिसका मुख्य आधार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली थी। प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को विश्व की प्रथम सनातन धर्म की शिक्षा प्रणाली के रूप में जाना जाता है।

इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समावेश की अनुशंसा दी गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्रस्तावना में लिखा है—

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और सत्य की खोज को भारतीय विचार परम्परा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा विद्यालय के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन करना मात्रा नहीं बल्कि आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था।

प्रस्तावना के अंत में नीति के उद्देश्य के संदर्भ में लिखा है कि नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचारों में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्य में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए। जो मानव अधिकारों, स्थाई विकास और जीवन यापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो ताकि वे सही अर्थों में वैश्विक नागरिक बन सकें। इसी तरह छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र-निर्माण तथा सभी स्तरों पर यथा, पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम, परीक्षा-मूल्यांकन, शोध आदि में समग्रता की दृष्टि (होलस्टिक एप्रोच) की बात कही गई है। साथ ही, भारतीय संवैधानिक एवं नैतिक मूल्यों, स्वदेशी, स्थानीय भाषा, कला-कारीगरी, परम्परा के समावेश तथा भारतीय संस्कृति, खेल एवं कला के एकीकरण की बात कही गई है। इस प्रकार की अनेक अनुशंसाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के प्रारूप में दी गई हैं।

इस सकारात्मक परिवेश में भारतीय ज्ञान परम्परा के शिक्षा में समावेश हेतु हमारे संस्थानों को व्यापक कार्य योजना बनाई गयी है

प्रथम चरण होगा कि भारतीय ज्ञान परम्परा की समझ बढ़ाने एवं पाठ्यक्रम में समावेश की पूर्ण तैयारी हेतु व्यापक स्तर पर संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशाला इत्यादि का आयोजन किया गया भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ का निर्माण, उसमें प्रत्येक संभाग स्तर पर सेमिनार कार्यशाला एवं विभिन्न प्रतियोगितायें।

द्वितीय चरण में विषयों अथवा संकायों के अनुसार विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश किया गया है।



इस दिशा में अपरिहार्य रूप से प्रत्येक विषय की पाठ्यचर्या में उस विषय के भारतीय इतिहास को रखा जाए। इसके लिए विषय की पुस्तक का प्रथम पाठ उस विषय के भारतीय इतिहास का रखा जा सकता है। इस तैयारी के समानांतर यह भी अपेक्षित है कि जिन शास्त्रों और विषयों में भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप अध्ययन सामग्री पहले से उपलब्ध है, उसका उपयोग किया गया है।

- रसायन शास्त्र में प्रफुल्लचन्द्र राय लिखित हिन्दु कमेस्ट्री का समावेश,
- प्रबंधन के पाठ्यक्रम में चाणक्य, गीता, रामायण, शिवाजी आदि के प्रबंधन का समावेश,
- गणित में वैदिक गणित, श्रीनिवास रामानुजन आदि का समावेश किया जा सकता है। इसी प्रकार कला संकाय में

इस प्रकार का प्रयास प्रत्येक विषय में किया गया है। हर विषय में भारतीय ज्ञान परम्परा के समावेश पर कार्यशालाएँ आयोजित करने के उपरांत साहित्य तैयार करके पाठ्यक्रम में सभी स्तरों पर समावेश करने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। पाठ्यक्रमों में समग्रता लाने के लिए विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय ज्ञान परम्परा पर एक आधार पाठ्यक्रम सभी छात्रों के लिए अनिवार्य किया गया है। आधार पाठ्यक्रम को चतुर्थ प्रश्न पत्र क्रमशः प्रथम द्वितीय, तृतीय वर्ष में योगा, पर्यावरण और व्यक्तित्वविकास विषय रखा गया। ओपन इलेक्टिव में रामायण, महाभारत, एन.एस.एस.एन.सी.सी, योगा, व्यक्तित्व विकास जैसे विषय रखकर छात्र अपनी रुचि के अनुसार दो संकायों में प्रवेश करके सर्वांगीण विकास कर सकता है। भारतीय ज्ञान परम्परा जो वैदिक एवं उपनिषद् काल में थी, वह बौद्ध एवं जैनकाल में भी रही। इसके अंतर्गत महानगुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से अनेकों वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात व विश्लेषित कर नए ज्ञान को संश्लेषित किया गया।

नयी शिक्षा नीति 2020 ने भारत के सांस्कृतिक मूलधारों को ठीक से जानने व समझने पर बल दिया है। इसके अंतर्गत पारम्परिक ज्ञान, कला, कौशल एवं मूल्यों को शिक्षा से जोड़ने एवं उसके नवीन प्रयोगों के लिए संस्तुति दी गयी है। चूँकि भारत में समग्र एवं बहु विषयक माध्यम से ज्ञान अर्जन की प्राचीन परम्परा रही है। अतः प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान की समृद्ध परम्परा के अनुशीलन में यह शिक्षा नीति शिक्षक प्रशिक्षण, समग्र एवं बहु अनुशासनात्मक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों पर

आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके कार्यान्वयन हेतु वर्तमान समय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ का निर्माण किया गया है, जिसका लक्ष्य स्वदेशी ज्ञान एवं विद्या परम्परा को प्रोत्साहित करना एवं आगे बढ़ाना है। इस दिशा में वर्ष 2020 में क्रियान्वित की गयी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध संप्रत्ययों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। ओपन इलेक्टिव पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रामारण, महाभारत, एन.एस.एस.योगा एन.सी.सी. डिजिटल मार्केटिंग जैसे विषय में विद्यार्थी एक साथ दो संकायों का अध्ययन करके रुचि अनुसार अध्ययन करके सर्वांगीण विकास कर सकेंगे। स्नातक स्तर पर हर विषय में भारतीय सम्यता और संस्कृति से समन्वित पाठ रखे गये हैं जैसे इतिहात प्रथम वर्ष मेजर। हिन्दी साहित्य में ओपन इलेक्टिव और माइनर में लोक सहित्य के विषय रखकर भारतीय साहिता भारतीय लोक कक्षाये भारतीय नाट्य कला आदि का अध्ययन करके विद्यार्थी को न केवल भारतीय संस्कृति को परिचित होते हैं, अपितु सुस्कृत भी बनते हैं आधार पाठ्यक्रम भी सभी के लिये अनिवार्य विषय रखकर विद्यार्थियों का भारतीय संस्कृति से न केवल परिचित कराया जा रहा है अपितु उन्हें संस्कार युक्त बनाकर इस भारतीय जीवन को अपने जीवन और संस्कृति में अग्रणी है, का स्थान बनाये रखने में सक्षम रहे। FC में योगा पर्यावरण व्यक्तित्व विकास जैसे विषयो पर अध्ययन अध्यापन को जोड़ा गया है और उतारकर उनका सर्वांगीण विकास किया जा रहा है, जिससे हमारे भारत की पदवी विश्व में गुरु बरकारार रह सके। इसके लिए वर्ष 2022-2023 के बजट में भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन, संवर्धन एवं अनवेक्षण के लिए निर्धारित राशि बढ़ाकर ₹ 20 करोड़ कर दी गयी थी। इसके अतिरिक्त वर्ष 2025 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 15 लाख अध्यापकों को भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रशिक्षण भी देगा। विश्वविद्यालयके स्नातकस्तर पर आयोग ने वर्तमान में एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया है। इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न अश्वनलाइन माध्यमों यथा— स्वयं पोर्टल, स्वयं प्रभा, ई-दीक्षा, ज्ञानदर्शन इत्यादि के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी इसके प्रचार-प्रसार का प्रावधान इसमें किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही हैं बल्कि भूतकाल में जन्मे सभी महान व्यक्तित्व जैसे—चरक,रामानुजम,सुश्रुत,आयषभट्ट, बुद्ध, रैदास, वाल्मीक, बिस्मिलाह खां,

वराहमिहिर, महात्मा गांधी, भगत सिंह, गार्गी, अपाला, घोषा, सावित्री, रमाबाई, चाँदबीबी, रजिया सुल्तान, मदर टेरेसा, एनी बेसेंट आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों से समृद्ध परम्परा के आलोक में निर्मित की गयी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परम्परा को भी एक केन्द्रीय स्तम्भ माना गया है। जिससे हमारा भारत शिक्षा के क्षेत्र में विश्व गुरु की पदवी को सनातन रख सकें।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. देवकी सिरोला भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (IJFMR April 2024)
2. प्रो. गीता सिंह भारतीय ज्ञान परम्परा की एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता (AMIERJ Feb 2022)
3. डॉ. राजेश श्रीवास्तव लोक साहित्य कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार





चित्र



चित्र



चित्र



चित्र



चित्र



चित्र



चित्र



चित्र



चित्र

